"Scientific method is a collective terms denoting the various processes by the aid of which the sciences are built up. In a wider sense and method of investigation by which scientific or other impartial and systematic knowledge is required is called a scientific method"

Encyclopeadia Britannica

Akanchha Offset Printers #99268 20122

DMV Journal

Annual Journal of Durga Mahavidyalaya, Raipur (C.G.)

Ph : 0771-2523753, Fax : 2884300,
Website : www.durgacollege.in
E-mail : info@durgacollege.in, principal@durgacollege.in

ISSN - 0976-3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

Authors :
Dr. S. S. Khanuja, Dr. P. C. Agrawal
Dr. Rakesh Kumar Tiwari
Dr. Kamal Kumar Begani - Dr. Ajay Kumar Sharma
Dr. Madhu Kamra - Ms. Vasundhara
Dr. Babita Pathak
Dr. Narayani Shrivastav - Dr. Kamalini Shrivastav
Dr. Protibha Mukherjee Sahukar
Dr. Kishor Kumar Patel - Smt. Prem Kumari Patel
Dr. Surendra kumar Agrawal
Dr. Ajay Kumar Chandrakar
Dr. Purnima Shukla
Dr. Rajesh Shukla
Dr. Deepali Sharma
Dr. Rajendra Kumar Shukla
Dr. V. K. Choubey
Dr. Archana Gomasta
Dr. Sanjivani Thakur - Prof. Pragati Dubey
Dr. A. Rajshekhar
Dr. Roshani Mishra
Dr. Ashish Dubey - Dr. A. Karim
Dr. Aman Jha
Dr. Nilima Sharma
Dr. Jitendra Kumar Hota
Dr. Giraja Shankar Gupta
Dr. Richa Pandey
Dr. Ganesh Shankar Pandey
Prof. Yogita Lonare
Dr. Shakuntala Dulhani - Dr. Sanjay Ku. Bhardwaj
Mrs. Yuktee Taunk
Dr. Harcharan Bhatia - Smt. Anamika Tiwari
Dr. Pradeep Shukla
Dr. G.D.S. Bagga - Dr. Harjeet Bhatia
Dr. Anita Rajpuriya

Chief Editor
Dr. S.S. Khanuja
Principal, Durga Mahavidyalaya,
Raipur (C.G.)

DMV Journal

Annual Journal of Durga Mahavidyalaya, Raipur (C.G.)

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

Chief Editor
Dr. S.S. Khanuja
Principal

Editorial Board
Dr. Babita Pathak
Dr. Narayani Shrivastava
Dr. Protibha Mukherjee Sahukar
Dr. Kishor Kumar Patel
Dr. Surendra Kumar Agrawal
Dr. Purnima Shukla
Prof. Pragati Dubey

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

The views expressed in these articles are those of the individual authours, DMV does not take responsibility for issues related to intellectual property on other matters.

Published by :
Dr. S.S. khanuja
Principal
Durga Mahavidyalaya
Raipur (C.G.)

Ph. : 0771 - 2523753
Fax : 0771 - 2884300

Website : www.durgacollege.in
E-mail : info@durgacollege.in
principal@durgacollege.in

Composing & Printed By :
Akanchha Offset
Brahmanpara, Raipur (C.G.)
Ph. : +91771 - 2545515
Mo : +91 99268 20122

DMV Journal
Annual Journal of Durga Mahavidyalaya, Raipur (C.G.)

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

अनुक्रम

1.	भारत के आर्थिक विकास का नियोजन	डॉ. एस. एस. खनूजा डॉ. पी. सी. अग्रवाल	01
2.	भीष्मसाहनी की कहानियों में वर्गीय चेतना	डॉ. राकेश कुमार तिवारी	05
3.	भारत में मुद्रण उद्योग - एक अध्ययन	डॉ. कमल कुमार बेगानी डॉ. अजय कुमार शर्मा	11
4.	**Hullabalooing Globalization in the Guava Orchard: Emphasizing Global Norms Higher Education and economic**	डॉ. श्रीमती मधु कामरा श्रीमती वसुंधरा	17
5.	**Development A Policy Perspective**	डॉ. बबीता पाठक	24
6.	**Consumer Protection Movement in India**	डॉ. नारायणी श्रीवास्तव डॉ. कमलिनी श्रीवास्तव	27
7.	**Invisible Sycorax: Gender Prejudice in Shakespeare's The Tempest**	डॉ. प्रोतिभा मुखर्जी साहूकार	31
8.	छत्तीसगढ़ में विशेष पिछड़ी जनजाति ''कमार''	डॉ. किशोर कुमार पटेल प्रेम कुमारी पटेल	37
9.	छत्तीसगढ़ में रेशम उद्योग-उत्पादन विकास एवं योजनाएँ	डॉ. सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल	40
10.	भारत में राजनैतिक विकास का ढाँचा मिश्रित अर्थव्यवस्था :- रायपुर उत्तर विधानसभा में महिला स्वरोजगारीयों के विशेष संदर्भ में	डॉ. अजय कुमार चन्द्राकर	45
11.	छत्तीसगढ़ में कृषि विकास	डॉ. पूर्णिमा शुक्ला	54
12.	**Marxism : Utopian Prophecy and Emperical Sociology**	डॉ. राजेश शुक्ला	57
13.	**Question of Adaptation in The Fire and The Rain and Agnivarsha**	डॉ. दीपाली शर्मा	60
14.	लोकपाल योजना बैंकिंग एवं उच्च शिक्षा के संदर्भ में	डॉ. राजेन्द्र कुमार शुक्ला	66
15.	**Services Marketing-Opportunities and Challenges in Liberalized Era**	डॉ. व्ही. के. चौबे	71
16.	स्वामी विवेकानंद के शिक्षा सम्बन्धि विचार	डॉ. अर्चना गोमास्ता	76

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

17.	बालिका शिक्षा के प्रति विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले अभिभावकों के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. संजीवनी ठाकुर प्रो. प्रगति दुबे	80
18.	Food Security for Slum Children	डॉ. ए. राजशेखर	84
19.	छत्तीसगढ़ लोक साहित्य में व्यंग्य चेतना	डॉ. रोशनी मिश्रा	88
20.	गैर बैंकिंग वित्तीय संस्थाओं की कार्यप्रणाली एवं विकास	डॉ. आशीष दुबे डॉ. ए. करीम	92
21.	Changing Dimensions of Indo-US Relations	डॉ. अमन झा	97
22.	भारतीय साहित्य और लोक मिथक	डॉ. नीलिमा शर्मा	103
23.	छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय उद्यान एक पर्यटन स्थल का अध्ययन	प्रो. जीतेन्द्र कुमार होता	107
24.	विश्व को अधिक समृद्ध बनाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार अप्रतिबन्धित एवं मुक्त होना चाहिए एक आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ. गिरजा शंकर गुप्ता	112
25.	रायपुर जिले में उपलब्ध धान की किस्में एवं भूमि के प्रकार	डॉ. श्रीमति ऋचा पाण्डेय	116
26.	जनवादी मुक्तिबोध	डॉ. गणेश शंकर पाण्डेय	126
27.	The Survival Saga of Women in Ladies Coupe: Re-interpreting their Individuality	प्रो. योगिता लोनारे	129
28.	चिन्ता स्तर पर रेकी उपचार का प्रभाव : एक अध्ययन	डॉ. शकुन्तला दुल्हानी डॉ. संजय कुमार भारद्वाज	134
29.	Life Insurance Corporation of India: A Dominant in Insurance Industry	प्रो. युक्ति टाँक	137
30.	जल का आर्थिक एवं पर्यावरणीय महत्व एवं संरक्षण	डॉ. हरचरण सिंह भाटिया श्रीमती अनामिका तिवारी	141
31.	छत्तीसगढ़ के भोजन में विशिष्ट सब्जी (भाजी) का महत्व	डॉ. प्रदीप शुक्ला	144
32.	गरीबी रेखा, गरीब, गरीबी एवं गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम - चिंता या चिंतन	डॉ. जी. डी. एस. बग्गा डॉ. हरजीत सिंह भाटिया	148
33.	मादक पदार्थों का बढ़ता दुरुपयोग मानव समाज के लिए घातक	डॉ. अनिता राजपुरिया	156

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

''भारत के आर्थिक विकास का नियोजन''

डॉ. एस.एस.खनूजा
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
डॉ. पी. सी. अग्रवाल
प्राचार्य, शासकीय दू. श्री राजश्री वैष्णव दास स्नातकोत्तर, रायपुर

भारतीय अर्थव्यवस्था विकासशील अर्थव्यवस्था है। भारत का आर्थिक इतिहास समृद्धिशाली एवं गौरव शाली रहा है पूर्व आर्थिक संमृद्धि के कारण ही भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता है। किन्तु भारतीय अर्थव्यवस्था के स्वरूप तथा स्थिति में ब्रिटिश शासन के समय बदलाव आया तथा भारतीय अर्थव्यवस्था पतनोन्मुखी होती गयी इसका कारण ब्रिटिश औपनिवेशिक शोषण था।

ब्रिटिश शासन से पूर्व भारत की लगभग 90 प्रतिशत आबादी गांवो में निवास करती थी। ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले जन सामान्य को तीन श्रेणियों में 1. कृषक 2. दस्तकार (बढ़ई,कुम्हार, लौहार, सोनार, मोची, बुनकर) तथा 3.नाई, धोबी, पुरोहित,तथा चौकीदार में विभाजित थे। भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान थी तथा भारतीय जनसंख्या का लगभग 81 प्रतिशत भाग कृषि पर प्रत्क्षयतः निर्भर था तथा दस्तकार एवं अन्य लोग भी खेती को अपने सहायक व्यवसाय के रूप में अपनाते थे। भारतीय कृषि उन्नतिशील होने के साथ–साथ सम्पन्न भी थी।

उस समय भारत का आन्तरिक व्यापार तथा विदेशी व्यापार दोनों ही अत्यंत उन्नत अवस्था में केवल अपनी ही आवश्यकता की वस्तु का ही उत्पादन नहीं किया जाता था साथ ही उत्पादों का निर्यात भी किया जाता था। भारत से मलमल, छींट,जरी के वस्त्र लौह इस्पात की वस्तुओं तम्बाकु, गरम मसाले तथा हस्तशिल्प की कलात्मक वस्तुएँ भारत से बाहर भेजी जाती थी इसके बदले में भारत को सोना, चाँदी व हीरे जवाहारात आदि मिलते थे। इस अवधि में विदेशी व्यापार भारत के पक्ष में होता था।

ब्रिटिश शासन काल में भारतीय अर्थव्यवस्था को उपनिवेशीय शोषण की समस्या का सामना करना पड़ा। ईस्ट इंण्डिया कंपनी ने व्यापार के नाम पर प्रत्यक्ष लूटपाट किया भारतीय व्यापारियों को उत्पादकों से सीधे वस्तुओं को खरीदने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। कम्पनी के कर्मचारियों एवं व्यापारियों के अतिरिक्त किसी अन्य को माल बेचने पर प्रतिबंध लगा दिया गया तथा कच्चे माल पर कम्पनी ने एकाधिकार कर लिया। एडम स्मिथ ने अपनी किताब Wealth of Nation में इसे एकपक्षीय वस्तुओं का अधिगमन तथा भारत के धन प्राप्ति को लूट की संज्ञा दिया है।

भारत में इस काल को औपनिवेशिक लूट कहा जाता है इस काल में हस्तशिल्प उद्योगों के विनाश से भारतीय अर्थव्यवस्था पूर्णरूपेण कृषि पर आधारित हो गयी कंपनी ने किसानों को प्रत्यक्ष रूप से लूटने के लिए माल गुजारी का तरीका अपनाया।

ब्रिटिश उद्योगपतियों के दबाव में ब्रिटिश सरकार ने चार्टर एक्ट 1813 (मुक्त व्यापार

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

अधिनियम) पारित किया। एक्ट के माध्यम से भारतीय अर्थव्यवस्था के शोषण तीव्र गति से करने के लिए मुक्त व्यापार की नीति सृजित की गयी इन नीति के परिणाम स्वरूप कच्चे माल कम मूल्य पर विदेशों में निर्यात किया जाने लगा तथा ब्रिटेन निर्मित माल भारतीय बाजारों पर कम मूल्य में उपलब्ध होने लगा जिसके कारण भारतीय उत्पाद बाजार से गायब होने लगा। इस प्रकार भारत कच्चे माल का निर्यातक तथा निर्मित माल का आयातक बन गया इसका नकारात्मक प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ा ब्रिटिश नीति निर्माताओं द्वारा इस प्रकार की नीतियां बनाई जाने लगी कि भारतीय उद्यमियों का लाभ न हो भारतीय निर्यातों को सीमित रखने के लिए सीमा शुल्कों की दर अधिक रखी गयी।

चार्टर एक्ट 1833 के माध्यम से भारत में ब्रिटिश उद्योगपतियों को कारखाने खोलने की अनुमति दे दी गयी जिसके कारण भारत में अत्यधिक विदेशी निवेश हुआ तथा विदेशी उद्योगपतियों का का भारतीय उद्योगों पर नियंत्रण हो गया।

ब्रिटिश नीति निर्माताओं ने दोष पूर्ण भूमि व्यवस्था के माध्यम से भी भारत में आर्थिक शोषण प्रक्रिया चलाया। ब्रिटिश शासन से पूर्व भारतीय कृषि व्यवस्था में ग्राम सामुदायिक व्यवस्था प्रचलन में थी जिसके अन्तर्गत खेती करने वाल ही भूमि का स्वामी माना जाता था। कृषक का भूमि शासन से प्रत्यक्ष संबंध होता था परन्तु लार्ड विलियम कार्नवालिया द्वारा स्थायी बदोबस्त मुनरों द्वारा रैयतवाड़ी तथा लार्ड विलियम बैंटिंग द्वारा महलवाड़ी व्यवस्था लागू किये जाने के बाद किसानों का अधिक शोषण होने लगा तथा उन्हें और अधिक भू–राजस्व देना पड़ा।

दादा भाई नारौजी ने अपनी पुस्तक भारत में गरीबी तथा अब्रिटिश राज्य (**Poverty and un British Rule in India**) में अपने धन के विकास का सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जिसका प्रकाशन 1878 में हुंआ। इस सिद्धान्त के माध्यम से दादा भाई नौरोजी ने बताया कि किस तरह से अंग्रेज भारत का धन धीरे–धीरे निकालकर अपने देश ले जा रहे है तथा वे यहां से ले गये धन को वापस देश में लाकर व्यापार तथा महत्वपूर्ण उद्योगों में निवेश करके भारतीय उद्योगों पर एकाधिकार कायम कर रहे थे तथा भारतीय अर्थव्यवस्था का शोषण कर रहे थे।

पूंजी निर्यात के कारण देश में पूंजी की कमी हो रही थी जिससे उद्योग तथा कृषि का विकास अवरूद्ध हो रहा था तथा इस तरह की आर्थिक लूट के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था बर्बाद हो रहा था फलतः भारत कमजोर हो रहा था।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय अर्थव्यवस्था में लगातार परिवर्तन हो रहे है तथा भारतीय अर्थव्यवस्था के स्वरूप के आज भी अस्पष्ट है। इसका कारण भारतीय अर्थव्यवस्था में व्याप्त विविधताएँ है। भारतीय अर्थव्यवस्था आर्थिक विकास के दृष्टिकोण से पिछडी हुई अर्थव्यवस्था है भारतीय अर्थव्यवस्था मुलतः विश्व की छटी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने के बाद भी विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में शामिल नहीं हो सकी है जिसका मूल कारण आय का असमान वितरण

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

विशाल जनसंख्या पिछडी प्रौद्योगिकी उत्पादन संबंधित परपरागत तकनिकी आधार मूल सुविधाओं का अभाव आदि प्रमुख है।

भारतीय अर्थव्यवस्था को द्वैतवादी अर्थव्यवस्था माना जाता है भारतीय अर्थव्यवस्था को ग्रामीण अर्थव्यवस्था तथा शहरी अर्थव्यवस्था में विभाजित किया जाता है जहाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था का स्वरूप एवं समस्याएँ भी अलग अलग है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था पूर्णतः कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था है जहाँ कृषि की परंपरागत तकनिकों का सामान्यतः प्रयोग किया जाता है तथा कृषि पर आधारित उद्योग सामान्तः पिछड़े हुए तथा परंपरागत तकनिकों पर आधारित है जो मानवीय संसाधनों का उपयोग करने में असमर्थ है। ग्रामीण क्षेत्रों में परिवहन, बिजली, बैंकिग, व्यापार शिक्षा व प्रशिक्षण आदि सुविधाओं का अभाव है वही शहरी अर्थव्यवस्था पूर्णतः अलग है जहाँ शहरी अर्थव्यवस्था का स्वरूप अत्यंत समृद्ध है शहरी क्षेत्रों में आर्थिक क्रियाओं का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है यह व्यवश्थित तथा क्रमबद्ध है, जहाँ व्यवसाय की सम्पूर्ण आधारभूत सुविधाएँ बैंकिग परिवहन शिक्षा और प्रशिक्षण आदि की सुविधाएँ उपलब्ध है जहाँ उत्पादन के परंपरागत क्षेत्रों के अतिरिक्त अन्य व्यवसायों का विकास हुआ है रोजगार तथा आय का क्षेत्र विस्तृत है तथा शहरी क्षेत्रों में जीवन स्तर अपेक्षा कृत ऊँचा है। भारतीय अर्थव्यवस्था का द्वैतवादी स्वरूप की मूलक कृषि, परिवहन, उद्योग आदि विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों पर भी दिखाई देता है जहाँ इन आर्थिक क्षेत्रों में परंपरागत तकनिकों का प्रयोग किया जाता है वही दूसरी ओर इन्हीं क्षेत्रों में आधुनिक उत्पादन तकनिकों को प्रयोग भी इन क्षेत्रों में किया जाता है जिसके कारण उत्पादन लागतों तथा किस्म में अत्यधिक अन्तर आता है जिसके कारण बाजार मूल्यों में अत्यधिक असमानता होती है इस प्रकार की द्वैतवादी स्वरूपों के कारण सरकार की आर्थिक नीतियों का प्रभाव सभी क्षेत्रों पर समान रूप से नहीं पड़ता।

भारतीय अर्थव्यवस्था मिश्रित अर्थव्यवस्था है क्योंकि भारतीय अर्थव्यवस्था को समाजवादी अर्थव्यवस्था का स्वरूप प्रदान करने के लिए सार्वजनिक तथा निजी दोनों ही क्षेत्रों के संयुक्त अस्तित्व को स्वीकार किया गया सार्वजनिक क्षेत्रों के अन्तर्गत संसाधनों का स्वामित्तव सरकार के हाथों में होता है तथा सार्वजनिक क्षेत्रों में आर्थिक क्रियाओं का संचालन लोक कल्याण के आधार पर किया जाता है इसके विपरीत निजी क्षेत्रों के अन्तर्गत स्वामित्तव पर नियंत्रण निजी हाथों का होता है तथा संसाधनों का प्रयोग के स्वलाभ अर्जन के लिए करते है निजी क्षेत्रों द्वारा आर्थिक क्रियाओं का संचालन व्यक्तिगत लाभ के लिए बाजार व्यवस्था के आधार पर किया जाता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय अर्थव्यवस्था के नियोजित विकास के लिए आवश्यक कदम उठाये जाने की आवश्यकता महसूस किया गया भारतीय अर्थव्यवस्था के पुननिर्माण के लिए आर्थिक नियोजन की प्रक्रिया अपनाया गया इस योजना को मुर्तरूप देने के लिए 1950 में योजना आयोग का गठन किया गया। भारतीय नियोजन प्रणाली लोकतांत्रिक पद्धति पर आधारित है भारत

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

में नियोजन राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के केवल एक भाग के रूप में स्वीकार किया गया तथा योजना का शेष भाग का संचालन एक सीमा तक स्वतंत्र बाजार तंत्र के माध्यम से किया जाता हैं भारतीय नियोजन तंत्र की यह भी महत्वपूर्ण विशेषता है कि योजना के अंतर्गत जो लक्ष्य निर्धारित किया जाता है उसे प्राप्त करने के लिए अनिवार्यता तथा आदेशों की व्यवस्था नहीं है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नियोजित योजनाओं द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था के निर्माण तथा त्वरित विकास के लिए अपनाया गया। नियोजन के 60 वर्षो की अवधि में भारतीय अर्थव्यवस्था ने सभी क्षेत्रों में विकास किया और इसी का परिणाम है कि भारतीय अर्थव्यवस्था दुनिया को दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती हुई दुसरी अर्थव्यवस्था के रूप में जाना जाता है। भारतीय अर्थव्यवस्था क्रय शक्ति समता (Purchasing Power Parity) के आधार पर विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गयी, राष्ट्रीय आय में सतत् वृद्धि बचत एवं विनियोगों में वृद्धि, पूँजी निर्माण दर में वृद्धि पूँजी उत्पाद अनुपात में कमी औद्योगिक तथा कृषि उत्पाद में वृद्धि शहरी अर्थसंरचना में वृद्धि आधार भूत संरचना को तेजी से विकास मानव संसाधन का विकास आदि भारत के विकासशील अर्थव्यवस्था के विशेषताओं में शामिल है।

राष्ट्रीय आय की गणना के लिए केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन ने भारतीय अर्थव्यवस्था को 13 क्षेत्रों में विभाजित किया था परन्तु 1966–67 में भारतीय अर्थव्यवस्था को तीन क्षेत्रों में प्राथमिक द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रों में विभाजित किया गया और यह वर्गीकरण अभी भी जारी हैं उपरोक्त अध्ययन स्पष्ट करता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद विकास की अग्रसर है तथा भविष्य में व्यापक संभावनाएँ विद्‌यमान है।

संदर्भ ग्रंथ

1. भारतीय अर्थव्यवस्था – रूद्रदत्त एंव सुन्दरम्
2. आर्थिक विकास का नियोजन – एस.पी.सिंग
3. मनोरमा ईयर बुक – 2012
4. द इकॉनामिक टाईम्स
5. प्रतियोगिता दर्पण अगस्त 2012
6. प्रतियोगिता प्रवेश मार्च 2012
दैनिक समाचार पत्र

□□□

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

''भीष्मसाहनी की कहानियों में वर्गीय चेतना''

डॉ. राके ा कुमार तिवारी
हिन्दी विभागाध्यक्ष दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर

स्वातंत्र्योत्तर कथा–साहित्य में भीष्मसाहनी एक सच्चे मानवतावादी व यथार्थवादी लेखन के प्रका ा स्तंभ हैं। उनका साहित्य लोकतंत्र, समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता के पक्ष में एक प्रभाव ााली हस्तक्षेप है। भीष्मजी की कहानियां साम्प्रदायिकता व साम्राज्यवाद के खिलाफ लगातार रचनात्मक संघर्ष करती हैं। उन्होंने नवपुनरूत्थानवाद के खिलाफ नवजागरण का भांखनांद किया। भीष्मजी ने प्रेमचंद की यथार्थवादी परम्परा को बहुत आगे बढ़ाया। समाज की विभिन्न विसंगतियों को एक सच्चे परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करना उनकी रचनात्मकता का एक महत्वपूर्ण पहलू है। इनकी एक बड़ी खूबी सादगीपूर्ण भाषा और रचना में अन्तर्निहित गहरी करूणा है।

कथाकार राजेन्द्र यादव ने ठीक ही कहा है – ''मुझे लगता है कि वे प्रेमचंद के ज्यादा निकट हैं। हालांकि प्रेमचंद की अपेक्षा उनका कलात्मक पक्ष ज्यादा मजबूत है। वे अपनी कहानियों को, उपन्यासों को ज्यादा सावधानी से तरा ाते हैं, इसलिए भीष्म के पास अच्छी कहानियाँ प्रेमचंद के मुकाबले भाायद ज्यादा हैं। यह हो सकता है कि उस तरह की एक खास धमाका मचाने वाली, भाोर मचाने वाली, आलोचकों को ललकारने वाली कहानियाँ भीष्म के पास नहीं हैं।'' ('सारिका' अगस्त 1990, पृ. 44)

डॉ. नामवरसिंह के अनुसार – ''सादगी और सहजता भीष्मजी की कहानी कला की ऐसी खूबियाँ हैं जो प्रेमचंद के अलावा और कहीं नहीं दिखाई देती हैं। जीवन की विडंबनापूर्ण स्थितियों की पहचान भी भीष्म साहनी में अप्रतिम है। यह विड़ंबना उनकी अनेक अच्छी कहानियों की जान है। '...............मेरी कुछ ऐसी धारणा है कि अपने उपन्यासों की अपेक्षा भीष्मजी अपनी कहानियों के लिए ज्यादा याद किये जायेंगे। प्रेमचंद की तरह उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा कहानी विधा के अंदर अधिक कलात्मकता के साथ व्यक्त हुई हैं। ('सारिका' अगस्त 1990, पृ. 43–44)

भीष्मजी ने सौ से अधिक कहानियाँ लिखी। आधा दर्जन उपन्यास और इतने ही नाटक लिखे। 1940 से लेकर अपनी मृत्यपर्यंत 2003 तक लगातार सृजनरत रहे। करीब पांच द ाकों की अपनी लंबी सृजन–यात्रा में वे अपने समय की नब्ज को बराबर टटोलते रहे। समय की सच्चाईयों को गल्फ में कैसे बदला जाए, इस कला में वे बड़े उस्ताद थे। उन पर चेखव, प्रेमचंद, य ापाल के अलावा कुछ रूसी लेखकों का गहरा प्रभाव दिखाई पड़ता है।

भीष्म साहनी मार्क्सवादी थे। अपनी विचार धारा के संबंध में वे कहते हैं–''मार्क्सवाद विकसित और वैज्ञानिक मानवतावाद है। मार्क्सवाद से हमें एक दृष्टि मिलती है, जिन्दगी को समझने की, देखने की, वि ोष रूप से आज के युग को देखने और समझने की। मैं उनका समर्थक हूं। पर यह मुझे बांधता नहीं, प्रेरणा देताा है। जिन्दगी के दरवाजे और अधिक खुलने लगते हैं। एक लेखक के नाते मैं पहले से कहीं अधिक वि ााल क्षेत्र में पहुंचने लगता हूं। इस तरह मार्क्सवादी चिंतन ने हमारी परम्परागत मानवतावादी दृष्टि को नये आयाम दिये हैं। और यूरोप में हो रहे परिवर्तनों का यह अर्थ नहीं है कि मार्क्सवाद असफल हो गया। मार्क्सवाद की वि ोषता है कि यह परिवर्तन की प्रेरणा देता है। यह मार्क्स की ही व्दंद्वात्मकता से उभरी एक नई राह है।'' [1]

कथाकार कमलेश्वर कहते हैं– ''विचारधारा के स्तर पर भीष्म साहनी मार्क्सवादी हैं और मुझे लगता है कि मार्क्सवाद में ही समस्याओं का निदान देखते हैं। यही कारण है कि भीष्म ने अपने लेखन के माध्यम से उन भाक्तियों को बेनकाब किया, जो विभाजन की त्रासदी के कारण थे।''[2]

मार्क्सवादी अर्थ ाास्त्र के पक्षधर भीष्मजी की यह टिप्पणी भी उल्लेखनीय है–''प्रेम से बढ़कर दिलों

को जोड़ने वाली भावना और क्या होगी, पर आर्थिक विसंगतियों की चट्टान पर गहरी से गहरी प्रेम भावना भी चूर–चूर हो जाती है। इसलिए मात्र प्रेम और भाईचारे का उपदे   ा देने से और आर्थिक सामाजिक विषमताओं के प्रति आंखे मूंदे रहने से कोई भी समस्या हल नहीं होती। इसी कारण, समाज का चित्रण इंसानी रि   तों का मात्र भावनात्मक स्तर पर किया गया चित्रण अधूरा होता है। वह हमें गुमराह भी करता है और समाज में यथास्थिति को बनाऐ रखने में मदद भी करता है। जरूरत जीवन को जहां तक हो सके उसकी सम्पूर्णता में देखने की है। इसके बिना यथार्थ का चित्रण तो एकांगी या फिर असंतुलित बना रहेगा। इस तरह इतिहास, समाज ाास्त्र, अर्थ ाास्त्र राजनीति आदि साहित्य के लिए असंगत न होकर, साहित्यकार को व्यापक, संतुलित दृष्टि ग्रहण करने में मदद ही करते हैं।''3

भीष्मजी की यह धारणा है कि **''मार्क्सवाद की प्रेरणा से हम व्यक्ति को समाज से जोड़कर देखते हैं और उसे समाज के किसी एक वर्ग के प्रतिनिधि रूप में प्रतिष्ठित करते हैं। मनुष्य को मात्र एक व्यक्ति के रूप में नहीं देखा जाता बल्कि समाज के एक वर्ग प्रतिनिधि के रूप में देखा जाता है। भीष्मजी की इस बात पर पूरी आस्था है कि समाज के अंदर चलने वाला संघर्ष व्यक्तियों के बीच न होकर वर्गों के बीच चलताहै। उनकी बंसती (बंसती उपन्यास की मुख्य–पात्र) मात्र एक औरत नहीं है वह एक पूरे वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है और उसके शोषण करने वाले ताकत भी वर्गगत शक्तियां हैं। बंसती के जीवन की विंडबनाएं किसी एक श्रमिक महिला की व्यक्तिगत विंडबनाएं न होकर बंसती जैसी लाखों लाख मजूरन के जीवन की विंडबनाएं हैं। वे मानते हैं कि प्रत्येक जीवन संघर्ष की तह में काम करने वाले वर्ग संघर्ष को देख पाने की नजर हमें मार्क्स ने दी है।''**

मार्क्स के इस प्रसिद्ध वाक्य– ''समाजिक अस्तित्व मनुष्य की चेतना को निर्धारित करता है।'' इससे भीष्मजी बहुत प्रभावित हैं और अपनी कहानियों में अपने दौर की राजनीति और समाज को वर्ग संघर्ष और वर्ग चेतना की दृष्टि से पारिभाषित करते हुए स्पष्ट करते हैं कि एक वर्ग वि   ाेश का व्यक्ति अपने वर्ग के हालात से जकड़ा हुआ इस प्रकार की मानसिक स्थितियों का दास हो जाता है कि दूसरे वर्ग के प्रति उसके मन में सदभाव का संचार हो ही नहीं पाता।

अमरकांत की कहानियों की तरह भीष्मजी की कई कहानियों में एक वर्गीय मनोविज्ञान परिलक्षित होता है। वे वर्ग विशेष के व्यक्ति की प्रतिक्रियाओं को पूरी निर्दयता से अंकित करते चलते हैं, जिससे उस व्यक्ति से जुड़ा पूरा वर्ग अपने चारित्रिक लक्षणों के साथ हमारे सामने नंगा होता चला जाता है। प्रेमचंद मार्कण्डेय और शेखर जोशी ने अपनी कहानियों में जो वर्ग चरित्र रचा है उसका और अधिक विकसित रूप भीष्म के प्रतिनिधि चरित्रों में मिलता है।

वर्गीय मनोविज्ञान का चित्रण

भीष्मसाहनी वर्गीय मनोविज्ञान के अच्छे चितेरे हैं। भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों के अर्न्तसंबंधों को परत दरपरत खोलते चले जाने में वे बड़े माहिर हैं। निम्न वर्ग तथा मध्यमवर्ग की प्रवृत्तिगत वि   ाेषताएं भीष्मजी की लेखनी की पकड़ में एक–एक कर आती चली गई है। हर वर्ग की अपनी वि   ाष्ट चारित्रिक वि   ाेषताएं हैं । भीष्मजी की रचनाओं में वह अपने प्रतिनिधि पात्रों और परिवे   ा के साथ मौजूद है। उनकी कहानियों में निम्न वर्ग और मध्यमवर्ग दोनों की वर्गीय मानसिकता का चित्रण हुआ है। कतिपय समीक्षक उन्हें केवल मध्यवर्ग का कथाकार मानते हैं। समीक्षक राजे   वर सक्सेना लिखते हैं– ''भीष्मसाहनी नगर के मध्यवर्गीय जीवन के वि   लेषक हैं जहां कहीं भी श्रमिक हैं, मजदूर हैं अथवा निम्नवर्ग है वह पैटी बुर्जुआ आभिजात्य के प्रतिपक्षी यथार्थ को उभारने के लिए हैं, बल्कि यूं कहें कि मध्यवर्ग की मानसिकता का खुलासा करने के लिए हैं। मध्यवर्ग की निजता का चरित्र कितना अबूझ होता है वह कितना पिलपिला होता है इसका भरपूर वि   लेषण भीष्म–साहनी की कहानियों में हुआ है। उन्होंने इस वर्गचरित्र का उद्घाटन अनेक प्रकार

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

की स्थितियों को और संदर्भों को रचकर किया है।''4

प्रसिद्ध कथाकार कृष्णासोबती के मतानुसार जिस मध्यवर्गीय खोखलेपन को भीष्म का लेखक उघाड़ता है उसे देखने की आंख भी उसे उसी वर्ग से मिली है। 'चीफ की दावत' से लेकर 'भगवान के आदमी' तक की कहानियों में परिवे ा के यथार्थ को भीष्म ने अपनी साहित्यिक मान्यताओं से परे नहीं जाने दिया।''

मध्यवर्ग में भी दो वर्ग हैं। एक की सहानुभूति व झुकाव निम्नवर्ग की ओर है जबकि दूसरे का झुकाव उच्चवर्गीय संस्कृति की ओर है। ये दोनों प्रवृत्तियां भी भीष्मजी की कहानियों में चित्रित हुई हैं।

निम्नवर्ग, मध्यवर्ग और उच्चवर्ग की प्रवृत्तिगत विशेषताओं को रेखांकित करते हुए भीष्मजी ने कई रचनाएं कीं।

1. निम्नवर्ग के प्रति उच्चवर्ग की घृणा का चित्रण, त्रास और ललक कहानी में तथा 'तमस' 'बसंती' और' झरोखे' उपन्यासों में हुआ है।

'त्रास' कहानी में एक कार वाला दिल्ली की सड़क पर सायकल सवार को जान बूझकर और पूरी घृणा के साथ टक्कर मार देता है।

'ललक' में धनवान उच्चवर्गीय व्यक्ति हरदेव के पिताजी, गरीब छात्रों को पायजामा पार्टी कहते हैं और उनका लड़का हाकी खेल में घृणा की भावना के साथ गरीब छात्र, खिलाड़ियों को हाकीस्टिक मार देता है। इसी प्रकार 'चाचा मंगलसेन' में गरीब चाचा मंगलसेन अपने धनवान रि तेदारों से उपेक्षित होते हैं।

'तमस' उपन्यास में एक प्रसंग में भाहनवाज धनवान व उच्चवर्गीय पात्र के मन में एक गरीब नौकर के प्रति अचानक घृणा की भावना उत्पन्न होती है और वह उसे बेकारण पैर की ठोकर मारकर सीढ़ियों के नीचे गिरा देता है।

'बसंती' उपन्यास में चौका–बर्तन करने वाली गरीब मजदूरन बसंती और मालकीन भयामाबीबी के आपसी संबंधों के बीच भी घृणा की धारा बहती है।

'झरोखे' उपन्यास में एक मध्यवर्गीय परिवार के नौकर तुलसी को परिवार के सदस्य अपने घर के पाखाने में जाने नहीं देना चाहते और कई संदर्भों में उस परिवार के लोग तुलसी से घृणा करते हैं।

2. <u>**मध्यवर्ग के खोखलेपन, पिलपिला व स्वार्थीपन तथा उच्चवर्गीय संवेदनहीनता को उजागर करते हुए लेखक**</u> ने 'सागमीट ', 'सिफारि ाी चिट्ठी', चीफ की दावत', घर की इज्जत' जैसी कहानियां और 'तमस', 'बसंती' और 'झरोखे' जैसे उपन्यास लिखे हैं।

'सिफारि ा चिट्ठी' में क्लर्क त्रिलोकी के माध्यम से बाबूवर्ग के पिलपिले और डरपोक स्वभाव का बड़ा सुन्दर चित्रण किया गया है।

'चीफ की दावत' मैं भाामनाथ और बड़े अफसर के रि ते और व्यवहार से रीढ़विहीन मध्यवर्ग का चरित्र सामने आता है।

'घर की इज्जत' में सुनंदा के पति के बड़े भाई दूसरे घर की औरतों को नाटक में भाग लेने की प्रेरणा देते हैं लेकिन अपने घर की स्त्रियों को घर की चहारदीवारी में बांधकर रखना चाहते हैं। इस प्रकार उसका मध्यवर्गीय दोहरा व्यक्ति उभरकर सामने आता है।

'बसंती' उपन्यास में मध्यवर्गीय पात्र भयामाबीबी और अन्य के माध्यम से उनके स्वार्थी व मतलबी स्वभाव और निम्नवर्ग के प्रति उनके दोगले व्यक्तित्व का चित्रण किया गया है।

3. **उच्चवर्गीय संवेदनहीनता का एक अच्छा उदाहरण ' सागमीट'** कहानी में प्रस्तुत हुआ है– इसमें एक घेरलू नौकर जग्गा और उसके मालिक– मालकिन की कहानी है। मालिक की दृष्टि से जग्गा और उनके कुत्ता जैकी में कोई अंतर नहीं है। जग्गा मालिक–मालकिन की खूब सेवा करता है, लेकिन मालिक के भाई बिक्की जग्गा की नव–व्याहता पत्नी के साथ व्याभिचार करता हैं। इससे, दुखी होकर जग्गा आत्महत्या कर लेता है। इस घटना को मालिक एक मामूली बात की तरह लेते हैं। अपने भाई

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

बिक्की को कुछ भी नहीं कहते और जग्गा के मरने का उन्हें कोई दुख नहीं होता।

समीक्षक राजेश्वर सक्सेना ने ठीक लिखा है– ''सागमीट कहानी जग्गा नौकर की नहीं है। यह साहब के चरित्राकंन की है। भीष्मसाहनी ने जग्गा के माध्यम से साहब के वर्ग चरित्र को स्पष्ट किया है। इस कहानी में साहब के चरित्र को रिडीक्यूल किया गया है, गौरवान्वित नहीं किया गया है। धूर्त और चालाक बुर्जुआ हमे ा मीठे रहकर ही गरीब की जिंदगी को मारता है। यह मध्यवर्गीय पैटी बुर्जआ एक आडम्बरपूर्ण जिंदगी जीने का आदी होता है उसकी विद्वता, भौक, अभिरूचि में जीवन की यथार्थ संवेदना और समझ नहीं होती।'' [5]

समीक्षक नंदकिशोर नबल ने अपने आलेख ''नयी कहानी की परिणति' में यह ठीक ही कहा है कि सागमीट कहानी में लेखक ''अफसरी जीवन का सारा पाखण्ड और छद्म उघाड़ता जाता है। कहानी भारू से अंत तक दिलचस्प बनी रहती है, क्योंकि एकालाप औरतों की प्रकृति और लहजे को ध्यान में रखकर रचा गया है।'' [6]

इसी प्रकार राधा–अनुराधा, पिकनिक, निशाचर, घर की इज्जत, सुनहरी किरण, संभल के बाबू इमला, प्रोफेसर, सिफारिशी चिट्ठी जैसी कहानियां मध्यवर्ग के चरित्र को स्पष्ट करती हैं। कुछ कहानियों की समीक्षा यहां प्रस्तुत है :–

सिफारिशी चिट्ठी, भीष्मजी की एक स क्त और बहुचर्चित कहानी है। इस कहानी में लेखक ने एक क्लर्क की पदोन्नति के लिए सिफारि ी चिट्ठी लिखवाने के एक प्रसंग के जरिये निम्न मध्यवर्गीय व्यक्ति की त्रासदी और विडंबनाओं का चित्रण किया है। उसकी भीरूता और पिलपिलापन का स क्त वर्णन हुआ है। इसमें पूंजीवादी व्यवस्था का लालफीता ाही पर भी व्यंग्य किया गया है। एक क्लर्क, जो बहुत पढ़ा लिख है, फिर भी 14–14 वर्षों तक उसका कोई प्रमो न नहीं होता ।

वर्ग विभक्त व पूंजीवादी समाज की भेदभावपूर्ण व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए भीष्मजी ने लिखा है – ''पुनर्वास मंत्रालय का क्लर्क त्रिलोकीनाथ खाने की छुट्टी के समय, कुछेक अन्य क्लर्कों के साथ दफ्तर के सामने खडा चाट खा रहा था, जब एक छोटीसी घटना घटी जो एक क्लर्क की जिन्दगी में सालों में एकाध बार ही घटती है। उसे किसी बड़े आदमी ने पहचांन लिया। पहचाना ही नहीं, बगलगीर भी हुआ, बगलगीर ही नहीं पूरे पांच मिनट तक त्रिलोकी बाबू के कंधे पर हाथ रखे बतियाता भी रहा मुसकराता भी रहा और जब मोटर में बैठकर जाने लगा तो अपनी नोटबुक निकालकर त्रिलोकी बाबू का नाम पता भी लिखकर ले गया।'' [7]

संभलके बाबू – भीष्मसाहनी ने 'संभलके बाबू' कहानी में मध्यवर्ग की भीरूता व अमानवीयता तथा समय के साथ–साथ निम्नवर्ग में आती जागरूकता का चित्रण किया है। इसमें वर्गसंघर्ष की स्थिति का भी संकेत है।

घरेलू नौकर और नौकरानियों के जीवन को लेकर भीष्मजी ने कई रचनाएं की हैं। इस कहानी में भी एक महत्वपूर्ण पात्र घरेलू नौकर ही है। घर मालिक और नौकर के अन्तर्सबंधों को लेकर कहानी आगे बढ़ती है। घर मालिक की दो पीढ़ियों और नौकर की दो पीढ़ियों के बदलते रि ते का सुंदर वर्णन इसमें किया गया है।

घर मालिक की पुरानी पीढ़ी के आपसी रि ते में मालिक नौकर पर अत्यधिक हावी हैं । मालिक के अमानवीय व्यवहार, अत्याचार को नौकर चुपचाप, मूक रहकर सह जाता है। सिर नीचे किये हुए दबा–दबा सा रहता है। लेकिन, नई पीढ़ी के साथ ऐसी बात नहीं रह गई है नौकरों में जागरूकता आ रही है। भाहर के घरेलू नौकर भी यूनियन बनाकर अपने अधिकारों के लिए लड़ने हेतु कटिबद्ध हो रहे हैं। मालिक के अमानवीय व्यवहार को वे अब मूक होकर चुपचाप सहन नहीं करते।

ललक – 'ललक' कहानी में वर्ग विभाजित भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों के आपसी अर्न्तसंबंधों

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

को रेखांकित किया गया है। उच्चवर्ग का मध्यवर्ग के प्रति और मध्यवर्ग का निम्नवर्ग के प्रति जो दुर्भावना तथा अमानवीय दृष्टिकोंण होता है, उसे लेखक ने एक छोटीसी घटना के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। उच्चवर्ग के बड़े धनपति हरदेव के पिताजी और कहानी के दूसरे महत्वपूर्ण पात्र मध्यवर्गीय 'मै' के जरिये भीष्मजी ने उच्चवर्ग और मध्यवर्ग के मनोविज्ञान का भी चित्रण किया है। संस्मरणात्मक भौली में लिखी गई इस कहानी में लेखक अपनी बचपन की घटनाओं और महत्वाकांक्षाओं को बताता चलता है। 'ललक' बचपन के अभावों से पैदा होने वाले वैमनस्य की भी कहानी है।[9]

भीष्म साहनी ने 'यादें' भीर्षक एक लेख भी लिखा है, जिसमें उन्होंने अपने बचपन के गरीब अमीर सहपाठियों की भी चर्चा की है। 'ललक' कहानी की घटना एवं पात्रों का भी उल्लेख बचपन के उनके उक्त संस्मरण में हुआ है। 'ललक' कहानी भीष्मजी का 'भोगा' हुआ यथार्थ है। इसमें मध्यवर्गीय कि ोर की महत्वाकांक्षा, भावनाएं तथा उच्चवर्ग की, अपने से कमजोर तबके के प्रति दुर्भावना का सुन्दर चित्रण हुआ है।

त्रास – निम्नवर्ग के प्रति उच्च वर्ग के मन में अवस्थित घृणा का चित्रण 'त्रास' में किया गया है वहीं स्वार्थपरता की तस्वीरें भी प्रस्तुत की गई है। इन बातों को लेखक ने दिल्ली में होने वाली सड़क दुर्घटनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। इन घटनाओं के एक सिरे पर मोटरों में चलने वाले रईस लोग होते हैं और दूसरे सिरे पर पैदल एवं सायकल पर चलने वाले गरीब लोग। मोटरों पर चलने वालों के मन में सायकल सवारों के प्रति घृणा का भाव भरा रहता है और यही समय–समय पर दुर्घटनाओं के रूप में अभिव्यक्त होता रहता है। वर्गचेतना का यहां प्रभाव ील वर्णन हुआ है।

हमारे समाज के दो वर्गों के बीच चल रहे घृणा के व्यापार से उत्पन्न खतरनाक स्थिति की त्रास ही कहानीकार का 'त्रास' है। 'त्रास' जिसके कारण हर व्यक्ति के मन में घृणा पलती है, जो एक दिन फूट पड़ती है। अनजाने लोगों के प्रति अमूर्त घृणा सारे वातावरण में जहर घोलती है। घृणा एक धुंध की तरह सड़कों पर तैरती है। यही घृणा 'त्रास' कहानी में मोटर दुर्घटना का कारण है, यही घृणा 'पिकनिक' में गौरी के मूल में है। भोषण और अतिरिक्त मूल्य की संस्कृति, जिसमें एक वर्ग अपनी संपन्नता से जानवर बन जाता है, दूसरा वर्ग अपनी विपन्नता से जानवर जैसा रह जाता है।[10]

'खून का रिश्ता' का नायक चाचा मंगलसेन धनहीन है और अपने चचेरे बड़े भाई के घर में रहता है। बड़ा भाई नौकरों जैसा बरताव करता है। मंगलसेन को बात–बात में अपमानित होना पड़ता है। धनवान भाई के सामने खून के रि ते का कोई महत्व नहीं है। धनवान भाई के पुत्र की सगाई के वक्त समधियों के घर मंगलसेन को ले जाने की बात पर तकरार होता है। धनवान भाई और उसकी पत्नी मंगलसेन को गरीबी के कारण साथ ले जाने के खिलाफ हैं। बड़े भाई की पत्नी कहती है– 'हाय–हाय बेटा, भाुभ भाुभ बोल। अपने रईस भाईयों को छोड़कर इस मरदूद को साथ ले जायें। सारा भाहर थू–थू करेगा।'' माँ जी अभी तो आप कह रही थीं, खून का रि ता है। किधर गया खून का रि ता। चाचाजी गरीब हैं इसीलिए।''[11]

कहानी के इस प्रसंग में पूंजीवादी व्यवस्था के सामाजिक सोच का चेहरा स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आता है। सामाजिक रि तों के पीछे पूंजी की अहम भूमिका का अच्छा चित्रण हुआ है। इस प्रकार से साम्यवादी लेखक ने अपनी रचनाओ में यह स्पष्ट किया है कि समाज के अंदर पायी जाने वाली विषमताओं के पीछे वस्तुतः आर्थिक– सामाजिक कारण मौजूद हैं। वहां मनुष्य के कर्मकांड की कोई भूमिका नहीं है। सामाजिक जीवन की विषमताओं की जो तस्वीर उनको पढ़ते हुए हमारे सामने उभरती हैं, वह वर्गों में बंटे हुए समाज और उनके बीच चल रहे संघर्ष की तस्वीर हे, उसे देखते हुए हम पाते हैं कि किस भांति और क्यों एक वर्ग दूसरे वर्ग का खून चूसता है।'

अपनी वैचारिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करते हुए भीष्मजी कहते हैं – 'मेरे संस्कार, अनुभव, मेरा व्यक्तित्व, मेरी दृष्टि सभी मिलकर रचना की सृष्टि करते हैं। इनमें से एक भी झूठी हो तो सारी रचना झूठी पड़ जाती है। यह बहस भी मेरे लिए निराधार ही है कि साहित्यिक रचना विचारों की वाहक होती है या नहीं। प्रत्येक रचना, मेरी समझ में एक इकाई होती है, सं ािलष्ट और अटूट, जिसमें से कुछ भी अलग नहीं किया जा

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

सकता। न विचार, न ि ाल्प, न भाब्द— सभी के सामंजस्य से ही उसका अस्तित्व बनता है। इनमें न कोई साध्य होता है न साधक। पर यह इकाई मूलतः जीवन की कोख में से निकल कर आती है, भले ही लेखक के संवेदन के रास्ते से आए, इसलिए जीवन की ही बात कहती है। लेखक का अपना सत्य जीवन के सत्य से निराला नहीं होता। न ही जीवन का सत्य और लेखक का सत्य दो अलग—अलग सत्य होते हैं। एक ही सत्य होता है और वह जीवन का सत्य होता है। उसी को साहित्य वाणी देता है।''

<u>संदर्भ ग्रंथ सूची</u>

1. 'अक्षरा' (त्रैमासिक) संपा. प्रभाकर श्रोत्रिय अक्टू. 90—91, पृ. 19
2. 'सारिका' अगस्त 1990, पृ. 45
3. भीष्मसाहनी— व्यक्ति और रचना, संपा. राजे वर सक्सेना, पृ. 55
4. वहीं ....वही............. पृ. 82—83
5. वहीं ....वही............. पृ. 87
6. वहीं ....वही............. पृ. 101
7. कहानी संग्रह **'भटकती राख'**, पृ. 78
8. भीष्मसाहनी : व्यक्ति और रचना
9. कहानी 'पटरियाँ' के फ्लेप से
10. भीष्मसाहनीः व्यक्ति और रचना, पृ. 86
11. कहानी संग्रह — **'भटकती राख'** पृ. 51
12. **'अपनी बात'** (निबंध संग्रह) भीष्मसाहनी, पृ. 26—27

□□□

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

भारत में मुद्रण उद्योग– एक अध्ययन

डॉ. कमल कुमार बेगानी
विभागाध्यक्ष, वाणिज्य

डॉ. अजय कुमार शर्मा
सहायक प्राध्यापक

दुर्गा महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

आज का सभ्य और जागरुक समाज प्रातः काल उठने के पश्चात जिस चीज की तलाश करता है, वह है समाचार पत्र या अख़बार। आज पूरे विश्व में भिन्न – भिन्न भाषाओं के लाखों करोड़ों की संख्या में छपे समाचार पत्र सूर्य की प्रथम किरण के साथ घर के आंगन में पहुँच जाते है, जिन्हें पढ़कर प्रत्येक साक्षर व्यक्ति संसार के कोने – कोने में घटने वाली घटनाओं से परिचित हो जाता है।

दो शताब्दी पूर्व के व्यक्तियों को ऐसी कोई भी सुविधा प्राप्त नही थी, और वर्तमान काल के मनुष्य को यह सुविधा मुद्रण कला के विकास के कारण ही प्राप्त है। मुद्रण कला के विकास ने ही साहित्यिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और तकनीकी विकास की आधारशिला रखी है। मुद्रण कला के विकास ने ही हमारे ज्ञान और जिज्ञासा के क्षेत्र को व्यापक बनाया है। मुद्रण कला के अभाव में आज के विकसित विश्व की कल्पना एक आकाश कुसुमवत कल्पना की भाँति है। एक प्रकार से मुद्रण की कला ही अन्य सभी कलाओं के व्यापक और सार्वभौमिक विकास का आधार है। किसी देश के आर्थिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक प्रगति का सारा दारोमदार मुद्रण कला पर ही आश्रित है।

आज के विकसित विश्व की तुलना में यदि हम भूतकाल पर दृष्टि पात करें तो हमारे आश्चर्य की सीमा नहीं रहेगी। हम उस आदिम युग की कल्पना करें जब मानव का कार्य मात्र अंग प्रत्यंगों के हाव भाव वाले संकेतों मात्र से ही होता था।

समय के साथ – साथ बोली और भाषा का विकास हुआ, सीमित आवश्यकताएँ असीमितता की ओर बढ़ने लगी, सीमित शब्द भण्डार भी असीमितता के आकाश का स्पर्श करने लगे। विचार, विचारों के निष्कर्ष मौखिक रुप में ही पीढ़ियों की सीढ़ियों

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

का आरोहण करने लगे। ज्ञान के प्रसार का यह साधन अपनी अति अल्पता के कारण असंतोष और विस्मरण का कारण बनने लगा, तब अपनी अनुभूति, अपने ज्ञान, अपनी कला को चिरस्थायी बनाने के लिए लिपिबद्धता की आवश्यकता का महसूस की जाने लगी। लिपिबद्धता का कार्य प्रारम्भ हुआ पत्थरों और वृक्ष की छालों पर नुकीले पत्थरों से उत्कीर्णन के रूप में, यह प्रक्रिया अत्यधिक श्रम साध्य और अधिक समय को नष्ट करने वाली थी। कालान्तर में तरल पदार्थ के रुप में स्याही का उपयोग वृक्षों के पत्तों पर लिखने के लिए किया जाने लगा, इसमें भी ताड़पत्र और मुर्जपत्र ही बहुतायत में उपयोग में लाए जाते थे, इन पत्रों पर स्याही से लेखन के लिए पतली लकड़ी को और अधिक नुकीला बनाकर उसे वर्तमान मे प्रचलित पेन की भांति प्रयुक्त किया जाता था। ज्ञान, विचारों को कुछ अधिक समय तक सुरक्षित रखने की यह प्रद्धति सुदीर्ध काल तक प्रचलन में रही।

ताड़पत्रों व मुर्जपत्रों पर लेखन से ज्ञान व जानकारियों को पूर्व की अपेक्षा अधिक सुरक्षित व सुदीर्धकाल तक उपयोगी रखना अवश्य सफल हुआ किंतु इनका भी एक सीमा तक ही उपयोग संभव था, ये ज्ञान के प्रसार की अपेक्षा से अधिक उपयोगी नहीं बन सके। एक समय विशेष में इनका उपयोग मात्र एक या दो व्यक्ति ही कर पाते थे। सुविधा के लिए प्रतिलिपियाँ भी निर्मित होने लगी थी, किंतु यह समय और श्रम की अपेक्षा से मितव्ययी नहीं था, साथ ही प्रतिलिपि करने वाले के आलस्य के कारण इसमें भ्रम और अशुद्धियों की संभावनाएँ सदा बनी रहती थी।

इस प्रकार की अनेकानेक कठिनाईयों से छुटकारा पाने के लिए मानव सदा नई विधि की खोज में लगा रहता था। इन्हीं खोज के प्रयासों में ही मुद्रण कला के बीज विद्यमान थे। कुछ विद्वानों के अनुसार मुद्रण की विधि सर्वप्रथम यूरोप में विकसित हुई और कुछ विद्वानों के अभिमत में मुद्रण विधि का विकास चीन या जापान से प्रारम्भ हुआ है, किंतु कागज के निर्माण की प्रविधि सर्वप्रथम चीन में विकसित हुई, इस तथ्य के संबंध में कोई विरोधाभासी विचार नहीं है। ईश्वी सन् 175

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

में चीन में ठप्पे से छपाई करने का उल्लेख अवश्य मिलता है, लकड़ी पर अक्षरों को उकेर कर उस स्याही लगाकर लकड़ी के दो तख्तों के मध्य दबाकर कागज पर वह छाप ले ली जाती थी। ईश्वी सन् 1041 में चीन के पी सांग नामक व्यक्ति ने चीनी मिट्टी के अक्षर तैयार किए थे। इन अक्षरों को ही आधुनिक छपाई के विभिन्न प्रकार के टाइपों का आदि रुप माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि कागज बनाने और मुद्रण की यह तकनीक चीनी व्यापारियों के साथ अरब के रास्ते यूरोप तक पहुँची है। 14वीं और 15वीं शताब्दी में यूरोप में चित्रों के मुद्रण के लिए लकड़ी या धातु पत्रों पर आकृतियों को उकेर कर उनके सहयोग से अनेक चित्रों की अनेकों प्रतियाँ बनाने का कार्य वहाँ के चित्रकारों द्वारा प्रारम्भ किया गया था। अक्षरों को छोटे – छोटे रूप में उकेर कर टाइप बनाने का कार्य जर्मनी के लारेंस जेसजीन द्वारा ही सबसे पहले आरम्भ किया गया था। इन टाइपों के सहयोग से जर्मनी के मेंज नगर के गटेनबर्ग ने पहले पहल बाइबिल के कुछ अंश छापे थे। इस प्रकार के छोटे टाइप सुविधा जनक और उपयोगी थे, इसी कारण शीघ्र ही यूरोप में फ्रांस, इटली, स्पेन, डेनमार्क, इंग्लैण्ड, स्वीडन, पुर्तगाल और रूस मे ईश्वी सन् 1465 से 1553 के बीच इनका व्यापक क्षेत्र में उपयोग होने लगा था। यह समय यूरोप में धार्मिक काति का समय रहा है, छपाई की सुविधा के कारण धार्मिक पुस्तकें जनसाधारण तक पहुँचने लगी।

पुर्तगालियों द्वारा धर्म प्रचार करने की भावना से मुद्रण की यह विधि भारत में लाई गई थी, इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ईश्वी सन् 1550 में सबसे पहले गोआ में मुद्रण की 2 मशीनें लगाई गई, और प्रथम मुद्रणालय स्थापित हुआ। यहाँ ईश्वी सन् 1561 में मुद्रित बाइबिल की एक प्रति आज भी न्यूयार्क के ग्रन्थालय में सुरक्षित है। दूसरा प्रेस ईश्वी सन् 1578 में तमिलनाडु के तिनवेली में स्थापित हुआ। तीसरा प्रेस ईश्वी सन् 1602 में मलाबार में स्थापित हुआ। ईश्वी सन् 1616 में अंग्रेजों के भारत आगमन के समय पोर्चुगीचों द्वारा बम्बई में प्रेस स्थापित किया गया। इसी वर्ष विचुर के दक्षिण अम्बल काड़ में भी एक प्रेस स्थापित हुआ, जिसमें कोचीन तमिल शब्द कोष का मुद्रण हुआ था। इस समय तक ईसाई धार्मिक ग्रन्थों का ही मुद्रण होता

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

था। इनका अनुकरण करते हुए हिन्दु धर्म ग्रन्थों की छपाई की भावना से कठियावाड़ के भीम जी पारख ने ईश्वी सन् 1662 में गवर्नर से बम्बई में प्रेस स्थापना की अनुमति मांगी। इस कार्य के लिए मुद्रण विशेषज्ञ हेनरी वालेस को इंग्लैण्ड से भारत बुलाया गया था। भारत में मुद्रण कला का व्यवस्थित सूत्रपात अंग्रेजों के शासन काल में ही हुआ। ईश्वी सन् 1674 में हेनरी मिल्स नामक व्यक्ति को अंग्रेज शासकों ने बहुत से कागज, टाइप और प्रेस के साथ भारत भेजा था, किंतु इस विधि के जानकार के अभाव में वर्षों तक इनका उपयोग नहीं हो सका था। कलकत्ता में ईश्वी सन् 1778 में एक सरकारी प्रेस स्थापित हुआ, जिसकी देखरेख और प्रबंधन का कार्य सौंपा गया था चार्ल्स विलकिंस को इन्हें प्रेस चलाने का अनुभव नहीं था, लेकिन इन्हें टाइप के सांचे बनाने का काम आता था। हुगली हेलहेड का बंगला भाषा का व्याकरण नामक पुस्तक इन्हीं के द्वारा निर्मित टाइपों से तैयार की गई थी। ईश्वी सन् 1805 में इन्हीं के द्वारा देवनागरी लिपी के टाइप तैयार किए गए थे। इन्हें भारतीय भाषाओं में मुद्रण का जन्मदाता माना जा सकता है। कलकत्ता के निकट श्रीरामपुर में विलियम कैर नामक व्यक्ति ने एक प्रेस खोला। पंचानन कर्मकार नाम का एक बंगाली व्यक्ति विल्किंस से टाइप बनाने की कला सीख कर इनसे आ मिला और इनसे मिलकर ईश्वी सन् 1812 में देवनागरी बाल बोध लिपी के टाइपों के सांचे बनाकर देवनागरी लिपी के टाइप बनाना प्रारम्भ किया। इनके बाद बम्बई के गणपति कृष्ण जी, जावजी दादाजी आदि ने 1831 से1864 तक मुद्रण के लिए व्यक्तिगत रूप से दो प्रेस स्थापित कर लिए थे।

19 वीं सदी के उत्तरार्ध में मुद्रण कला के क्षेत्र में अनेक क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। अन्य उद्योगों के समान छपाई में भी बड़ी – बड़ी मशीनों का प्रयोग आरम्भ हो गया था। मुद्रण विषयक विभिन्न प्रक्रियाओं के लिए भिन्न – भिन्न यंत्रों का उपयोग प्रारम्भ हो चुका था। जिनमें कुछ मानव चालित थे तो कुछ शक्तिद्वारा संचालित होते थे। मानव चालित हैण्डप्रिन्ट मशीन, जिसमें एक धण्टे में मात्र 30–40 प्रतियाँ ही मुद्रित हो सकती थी, से प्रारम्भ मुद्रण कला की यात्रा आज बड़े – बड़े आकार की

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

ऑफसेट और रोटरी मशीनों तक पहुँचने के बाद भी नई – नई मंजिलों का स्पर्श करने की ओर अग्रमान है। वर्तमान में प्रति घण्टे हजारों प्रतियाँ मुद्रित करना संभव हो सका है।

मुद्रण कला ने आज एक उद्योग का रूप ले लिया है, लाखों व्यक्तियों को इस उद्योग में विभिन्न स्वरूपों में रोजगार प्राप्त है। मुद्रण कला के क्षेत्र में पुरानी पद्धतियों को नई पद्धतियाँ निरंतर प्रतिस्थापित करती रहती है। लगभग 25 वर्ष पूर्व तक ट्रेडल मशीनों से मुद्रण का कार्य होता था, जिसे आज स्क्रीन, ऑफसेट जैसी मुद्रण पद्धतियों द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया है। जब तक ट्रेडल मशीनों से मुद्रण का कार्य होता था, उस समय तक मुद्रण सामग्री की कम्पोजिंग के लिए सीसे के बने हुए टाइपों का उपयोग होता था, किंतु कम्प्युटर के प्रचलित होने के कारण छपाई की यह पद्धति लगभग समाप्त सी ही हो गई है। कम्प्युटरों के उपयोग से छपाई की आकर्षकता में भी अभिवृद्धि हुई है, बहुरंगी छपाई भी अब अधिक मात्रा में होने लगी है। आफसेट प्रिंटींग में अब तो पांच रंगों के आधार पर बहुरंगी छपाई की मशीने प्रयोग में लाई जाने लगी है। छोटे आकार की छपाई का काम अब टेबल टॉप मशीन की सहायता से पूर्णतः एक रंगी ऑफसेट छपाई के समान होने लगा है। प्रचार के लिए जो बैनर कुछ समय पूर्व तक पेंटरों द्वारा हाथ से बनाए जाते थे, उनका स्थान अब फ्लेक्स ने लिया है, जिन्हें कम्प्युटर से डिजाइन करके छापा जाता है। फ्लेक्स के युग में हाथों से बनने वाले बैनर अब केवल ऐतिहासिक महत्व के रह गए हैं।

मुद्रण के क्षेत्र में इन्टरनेट के विकास के साथ साथ एक और क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिल रहा है, वह यह कि अब एक स्थान पर स्थित कम्प्युटर के द्वारा भिन्न –भिन्न स्थानों पर स्थित अनेक मशीनों पर एक समान सामग्री की एक साथ छपाई सम्भव हो गई है। मुद्रण कला की यह विकास यात्रा अभी अपने अंतिम सोपान तक नहीं पहुँच पाई है, कितने नए स्वरूप इस विधा में सम्मिलित होने वाले हैं इसकी परिकल्पना कर पाना भी अत्यधिक कठिन कार्य है।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. प्रफुल्ल चंद्र ओझा – मुद्रण परिचय
बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना – प्रथम संस्करण 1972

2. अम्बिका प्रसाद बाजपेयी – समाचार पत्रों का इतिहास
ज्ञान मण्डल प्रकाशन, बनारस – प्रथम संस्करण 1952

3. डॉ. नंदकिशोर त्रिखा – प्रेस विधि
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी – प्रथम संस्करण 1986

सहायक ग्रन्थ सूची :–

1. कृष्ण प्रसाद दर – आधुनिक छपाई।
2. छविनाथ पाण्डेय – मुद्रण कला।

□□□

DMV Journal
Annual Journal of Durga Mahavidyalaya, Raipur (C.G.)

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

Hullabalooing Globalization in the Guava Orchard: Emphasizing Global Norms

Dr. (Mrs) Madhu Kamra

Ms. Vasundhara

Deptt. Of English, Durga College, Raipur (C.G.)

Indian is a home to many religions including Hinduism, Buddhism, Jainism, Sikhism and Islam. It also has a history of political conflicts and non-conformity, exacerbated by the interference of British colonialism and modern globalization. Desai combines these elements of India's traditions and history with a special emphasis on cultural divides that have taken toll on India's population. Hullabaloo in the Guava Orchard has a mixed culture of traditional social norms and modern life, wherein the runaway Sampath Chawla is forced into being a holy man much against his unwillingness. As a postal clerk he fails being a pathological dreamer and escapes from his oppressive family and works to live in a guava tree. Here he spends his life snoozing, musing and eating the ever -more exotic meals cooked for him by his sociopathic mother. He begins to amaze his fellow townspeople by revealing intimate details about them gleaned from a bit of lazy letter opening while working at the post office. Soon he becomes known as a local guru and attracts such a strong flow of visitors that opening hours have to be established in the orchard to allow him to rest. The alienation of Sampath may be labeled as deterritoriablizing state of globalization for he is also surrounded by monkeys and he has no objection to their penetration in his solitude.

… we live in as being increasingly 'penetrated' by the connectivity of globalization. We may live in places that retain a high degree of distinctiveness but this particularly is no longer - as it may have been in the past – the most important determinant of out cultural experience… Modern culture is less determined by location because location is increasingly penetrated by 'distance'.

(Globalization and Culture, 274)

Sampath's village is Shahkot a narrow global village modifying behavior through the process of cultural synchronization. The world of 'monkey baba' is embodiment of global consumer culture where people are living in a single system and in a fragmented world. Ogden et al believe that under globalization, while individuals are generally freer in selecting and incorporating cultural elements from

various origins into their identities and belief systems, a certain individual level factor predisposes people to certain choices.

(Ogden, Denise T., James Ogden and Hope J. Schau. "Exploring the impact of culture and Acculturation on consumer purchase Decisions: Towards a Micro cultural perspective: Academy of Marketing Science Review, 2004, 1-26)

The mango orchard represents a global village in a comic sense. It reflects the truth that globalization has changed most people's sense of who they are and where they live. To this is the idea of how do globally connected people make their new surrounding meaningful. Mr. Sampath through his new adopted 'life-style' answers the query to the most satisfying level.

Globalization is much more then economic process. Indeed many scholars have divided theories of globalization into categories of political –economic and cultural globalization. Various scholars have focused on cultural globalization, such as John Tomlinson (1999) who considers cultural practices as central to the phenomenon of globalization. Anthony Gidden in his book The Consequence of Modernity views Globalization as "the intensification of worldwide social relations, which link distant localities in such a way that local happenings are shaped by events occurring many miles away and vice-versa" (64)

Sampath distinctively represents the first dimension. The injunction to treat other with noticeable attention suggesting care and concern finds explicit depiction in Sampath's role of "monkey baba'. He portrays the principle source of global ethics – the desire of to alleviated the suffering of every individual to the extent possible. There are five core elements of global ethics -

1. Equity – to recognize the ethos of cultural values and to preserve the environment and natural resources to be used by future generations.
2. Human rights and responsibilities – as an indispensable standard of human conduct protects the integrity of all individuals from threats to freedom and equality.
3. Democracy – for full participation of all and to erase discrimination against minorities.
4. Protection of minorities. The promotion of tolerance is central to this process.
5. Fair negotiation: Resolution of disagreements be sought through negotiations for peaceful solutions to problems.

Monkey culture and the local culture at Shahkot share a commonality of basic values that are also the foundation of global ethics. The commonalities of values projects co-operation among people

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

constituting to the expansion of freedom enjoyed by Sampath as Monkey Baba.

Held and McGrew have provided a useful framework for analyzing Globalization. They discuss three main schools of thought in globalization research. The hyper globalists, the skeptics and the transformation-lists. Hyper-globalists focus on economic Globalization, which is argued to denationalize economies creating global markets that transcend state control resulting in less of autonomy and sovereignty for the state.

The second school, the skeptics argue the globalization is a myth and is just a heightened level of economic interdependence. They also question what is exactly. 'global' for to them, the concept is not valid and lacks specificity.

On the other hand the transformation list argue that globalization has structural consequence and is s a driving force in society which leads to re-articulation of political, cultural and economic power.

The two camps, the globalists and the skeptics continue to debate globalization with much rigour. Indeed, with recent world events, such as the terrorists attack of September 11, 2011 and the Iraq war, there has been on increase in the talk of the end of globalization. Skeptics argue that in the aftermath of 9/11 there was a return to geopolitics, and therefore globalization is not on existing condition. Held and McGrew note several scholars who discuss post- globalization: Niall Ferguson, (foreign Affairs: Sinking Globalization) discusses 'Sinking Globalization' and John Saul (the Collapse of Globalism) writes of 'the end of Globalism', in short the concern is how globalization can be governed to lead a more just and stable world.

Commercialism is a current theme in Desai's work, Sampath's father sees a fertile change in his son's new adorned spirituality for bettering his family's fortune. As an entrepreneur, he sets up his picturesque family in a compound around the guava tree that is soon lined with colourful advertisements for tailors, fizzy drinks, talcum powder and insect repellent, consumerism changes the fabric of the guava orchard. There is large volume of money movement alongwith increase in the movements of goods and labour. This new world can be identified as a 'global village' This idyllic world of economic and spiritual interaction is shattered by the alcoholic monkeys whereby 'nastiness' grows unfettered. That the hullabaloo begin with everybody – from the common civilian, to the unrpight militarywallah, to the paunchy police – trying to get rid of the monkey manace. The novelist paints the

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

nuisance as –

One afternoon, about a month after their first appearance in the orchard the monkeys found five bottles of rum. While rifling through the bag of a man who stopped to see Sampath on his way to a wedding. They drank it all up and that afternoon, when they resurfaced in Sampath's tree, where they were accustomed to joining him for a little siesta at 3.00. They felt unable to slip into the general state of stupor that overtook the orchard like a spell particular to this time of day … A few days after their first encounter with alcohol, they discovered a case of beer in a delivery van. A week later. A bottle of whisky in a rickshaw then more beer, then more beer. (107)

The novel also focuses on ridiculousness of hero-workshop, the unpredictability of commercialism and the ineptness of officialdom. Popularity of Sampath Baba in fanned out by setting his photos in the houses glorifying his achievement. The Indians are image and idol worshipper in their cultural behaviors they believe in the glory of their spiritual leaders and there deliverances Similarly the newspaper article in the Times of India spreads the image of the hermit of Shahkot – "Those rare simplicity and profound wisdom" (119) brought" solace and hope to many who are disheartened by these complicated and corrupted time (119). The novelist here underlines the role of prestigious and highly circulated newspapers and spirit to meet the taste of the Indian people by retaining their pseudo-faith in the culture. The cultural history of the nation reveals mostly illiterate, transformed into saints and hermits but in the present time even educated turn to such profession aspiring comfort, honour and money, out of frustration and incapacity. In this era of globalization where individuals are expected to have expertise in technical, commercial and other areas of knowledge to make the nation progress in competitive race, if they shun the responsibilities and duties their roles would deaden the sprit of the nation and its development.

Globalization is more than culture mixing and financial flows. It involves human resources whose ideas and identities can facilitate and manipulate global exchange. Globalization is not all about integration, conflicting modes of nationalism and internationalism follows as trail. So globalization is helpful not so much because it identifies precursors or because it creates symmetrical connections between equals, rather it provides perspective on different constellations of power and ideas that have shaped globalization over time.

Sampath maximizes his quality of life by assembling a life time through personalized act of escape and refuge in a guava tree. By way of his predictions of monkey baba and occupying the local

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

geography shared by monkey represents one of the four dimensions of globalization, suggested by D. Held (ed.) in his book A globalizing world? Culture economics politics:

a) The Stretching of Social relations

b) The intensification of global flows

c) The interpretation of economic and social practices

d) The development of institutional infrastructure for governing the global system (198)

Globalization has brought in inter-translatability within the languages of industrial countries by developing new vocabulary and discourse for new area of knowledge. Interestingly the regional languages are at the receiving end. The industrialists, traders, and their marketing techniques play a major role in shaping the languages. This is so because globalization revolves around market economy and information technology. In this context, the control over the language is not in the hands of scholars or academic institutions but in those of traders and marketing agencies who give contextual and localized flavor to the foreign products and hence new types of collections are created. For e.g. with the profuse donation received from the pilgrim –visitors Chawla amasses a large capital and brings in all necessary articles to make life comfortable. He capitalizes on the blind faith of the society in hermit, his magical power of fortune telling and superstition. He utilizes his son's state of art for gendering money and resources, taking it as commerce. Being an employee of the Reserve Bank, he diverts the amassed money towards stocks and share, keeping 'a careful balance between the look of abstemiousness. To make a cover up for the fund generated in such manner, Chawla has a desire to open up a bank account in the name of special fund for building temple so that “attention would be diverted to religious matters and donations would pour in (92). He is also ready with a complete package of Baba –accessories for the blind and superstitious followers of Sampath.

As for women. The impact of globalization has been interesting. On one hand it has allowed woman to become a longer part of the workforce, with opportunities for higher pay raising their self-confidence and independence. Globalization has provided a power to uproot the traditional views Society is now moving into uncharted waters and women have grabbed their own compass to come along. The new women are the map makers and pacesetters them aiming at the highest point in their evolution. The adage “when women win we all win; when women are suppressed, everybody loses” is reaching its true potential in meaning.

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

The economic globalization has commoditized women and sexuality as never before. Women are portrayed as ever-available sex objects in on endlessly repetitive male dominated world. The increasing rate of sex tourism, sex trafficking and violence against women are inevitable outcome of such commoditization of women and sexuality. Feminist critiques like Jain-2000; Ghosh – 2005, Krishnaraj – 1989 and Kumar – 1994 opine that though globalization in urban India projects of modernity egalitarian and secular world leading to changing female roles, in reality the underlying truth is that globalization has reinforced the unequal gender relation in many folds. Thus dynamics of power distribution and gender discrepancies have taken the new forms of discrimination and victimization of women under the garb of economic empowerment. Globalization has changed the intrahoushold responsibilities for males and females, where females are given more responsibility over the survival of the family. Males are no longer the providers – yet they have more opportunities of financial and social advancement in society. The limited advancement of women in the formal sector shows a great disregard for their social and economic responsibilities within developing nations. Therefore women's work continues, to be stigmatized as inferior, in comparison to male's work regardless of their increased responsibilities in society. Several feminist critiques' like Dex-1985; Sanderson – 1990; Walby - 1990; Cecilia – 2000 and Jain – 2000 believe that the globalization process is not necessarily integrating of 'men' and 'women' into a homogeneous entities in the sphere of economy, Culture technology and governance. Diana Wong in her unpublished essay/article "Globalization Reconsidered; Social and cultured Aspects from an Asian Perspective states – "the challenge of globality today may not lie in the attainment of convergence but in the recognition and acceptance of difference'. (www.feministagenda.org.au)

(Globalization and Woman at work: A feminist discourse –Sumita Sarkar). In short, for women, the impact of globalization has been uneven. A small layer has gained work opportunities in terms of newly emerging forms of employment, especially in IT service and food processing sectors, but the semi/unskilled ones have lost control over. natural resources like land and water as well as traditional industries resulting in the loss of traditional livelihood and sustainability.Reference Book

Desai, Anita. Hullabaloo in the Guava Orchard. Delhi: Penguine India, 1998.

Albrow, M. Globalization and Culture. Cambridge: Polity, 2006.

Held, D. & McGrew, A. Globalization/Anti Globalization. Beyond the great Divide. 2nd ed. Cambridge, Polity, 2007.

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

Gidden, A. The Consequence of Modernity. CA: Stanford University Press, 1990.

Reference Book

Desai, Anita. Hullabaloo in the Guava Orchard. Delhi: Penguine India, 1998.

Albrow, M. Globalization and Culture. Cambridge: Polity, 2006.

Held, D. & McGrew, A. Globalization/Anti Globalization. Beyond the great Divide. 2nd ed. Cambridge, Polity, 2007.
Gidden, A. The Consequence of Modernity. CA: Stanford University Press, 1990.

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

Higher Education and economic Development A Policy Perspective

Dr. Babita Pathak
Durga College, Raipur (C.G.)

Faster economic development has become the prime goal of the present modern economies. They are very keen on looking into the means that augment growth rate through increasing the productivity of the factors of production. Till 1950's education, particularly higher education was not regarded as one of the key factors that influences the process of economic development. Only the 'physical stock' was given top priority and efforts are made to increase the physical stock in order to develop economies. After 1950's the importance of education as key factor in the economic development process was recognized and efforts are being directed towards inclusion on the higher education not only in achieving the economic goals but also achieving growth with equity.

In this paper an attempt is made to incorporate the role of higher education into the process of economic development.

Education and Development

The role of higher education in the process of socio- economic development through intensification of skill and home gestation of the society has been widely supported by the empirical evidences. Studies conducted on the nature and causes of economic growth over a long historical period in the developed countries revealed that whole physical capital undoubtedly played an important role in economic growth, it was by no means as dominant as many economist had earlier visualized. It was broadly accepted that a substantial portion of it, or of the gains in the productivity could be attributed to improvement in knowledge skill and capacities of the people, in short, in the quality of human stock. The economists produced historical case studies of countries which enjoyed superior economic growth as a result of having paid greater attention to raising the educational level of their people than did other countries. The development achieved in Japan and Germany after Second World War is generally regarded as the classical example of education being deliberately utilized as a contributing factor to rapid economic and social change. In sociological point of view, higher education brings about a change in the individual, promoting greater productivity, modern attitudes, values and beliefs about work and quality of life. Moreover, it encourages individuals to an active interest in public affairs and perform their duties and exercise their rights as members of a community and creators an open society and political democracy and foundation of political democratic institutions and their continuation.

There are other important externalities that pave ways for the expansion of the economic activities leading to the ultimate goal of economic development. The higher education enhances the grabbing capacity of people. It is the basic key that unlocks the door to technological break through and sharpens international competitive edge and enables the country to attain certain comparative trade advantages. Most importantly. The high degree of education prepares the people to accept change and

development that are appropriate to modern economy.

The potentially production talents of a larger number of people in the less development countries have remained untapped and inert behind the massive barriers of their illiteracy and poverty lack of education made people poor and poverty prevented them from pursing their education. As the notion that higher education is the key to productive life and national property has come to be accepted. Further more, schools and colleges have a direct influence on the levels of aspirations and expectations, among individuals especially, among the socially and economically disadvantaged group in developing country's like in India. Thus , a new horizon has now been opened in the concept of higher education as an investment enhancing human resources for development.

The Present situation in India

In India, even before independence, the policy makers have realized the vital role of higher education in the transformation of the economy in particular and society in general. After attainment of Independence, significant measures were not only taken to reform the higher education system development by the British regime but also to expand the higher educational facilities within the reach of the majority of who had been this opportunity. Since 1950's the government both at centre and state have vastly increased the proportion of resources devoted to the sector of higher education and the most impressive expansion has taken place in enrolment in colleges and universities.

The average annual growth rate of enrolment during the period 1950-51 to 1980-82 has been about 10 per cent, despite constrains on resources. The percentage of student in higher education to total population in the age group of 17 to 20 year increased form 0.8 in 1950-51 to 5 in 1981-82. Currently , more than 9.8 million students are admitted in to the country's 15,800 colleges and 360 universities as pr annual status of Education Report 2005. Though India has the second largest system of higher education next, only to USA the student enrolment ratio in higher education is just 7.2% which is very low in comparison with other developed nations. The enrolment ratio in higher education is 80% in USA 50% in France, 30% in UK, 52% in Chiana, even in developing and less developed nations the enrolment ratio is higher than in India.

The public spending and allotment of resources for higher education in India is also very low compared with other nations in the world. The percentage of allocations of founds for higher education in India has constantly decreased from one per cent in 1971 to 0.4% in 2001. Where's the position of USA 6.5%, France 5.8%, Germany 4.6%, Thailand 5% and even in Kenya 6.2% is much better than India. So there is urgent need for enhancing the budgetary allotment of funds for higher education in order to achieve economic development.

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

Quality of Higher Education

In terms of quantity, India stands at 3rd place, after US and China but in terms of quality higher education, India is certainly trailing behind. In fact 1% of student population gets exposed to quality education as brought due to limited number of good institutions. As a result of that many students after graduation or post- graduation find it difficult get job which, in turn, leads to frustration emerged the students. Though India can claim to have the third largest pool of scientists and technologists in the world, next only of the USA and erstwhile USSR, it has been rated very low in terms of productivity. This is unfortunate, especially, when international competitive forces, particularly in skill oriented activates, are operating in full measure, Deteriorating quality is further aggravated by inadequate financial resources.

Policy Measures

Planning education for a developing country is a challenging task. If ushering in the technologies is the goal, then development of human potential to meet the challenge becomes the aim of educational administration. The benefit in financial contribution to development or any factor in each line of specialization may be correspondingly worked. Considering the fact that educational expenditure is now regarded as investment in human capital for national development, every effort must be made to see that we get the most out of the available human resources by optimum use. These issue assume special significance in the present context of the rethinking among policy makers on the existing design of programmers for higher education in the country so that it can be transformed into one vibrant with a commitment to development and change.

References :

1. Dr. C.Rangarajan, Chairman – Economic Advisory Council to the Prime Minister.
2. The Globalization of India Economy : A Need for Internationalization of Higher Technical Education (Patil).
3. Globalization of Education (K V Sagar).
4. Reports of UGC, AICTE & Ministry of HRD- Government of India.
5. Various Books, Journals, Magazines, Reports, Presentation, Websites etc

□□□

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

CONSUMER PROTECTION MOVEMENT IN INDIA

Dr . Narayani Shrivastav
Dr. Kamalini Shrivastava
HOD – Economics, Duga College, Raipur
Professor, Department of Geography,
Mahakaushal College, Jabalpur

INTRODUCTION :

In 1985 United Nations adopted the UN guidelines for consumer protection. This was a tool for nations to adopt measures to protect consumers and for consumer advocacy grroups to press their government to do so. At the international level this has become the foundation for consumer movement. Today 100 countries have consumer protection organization. India is the country that have exclusive courts for consumer Protection.

In India consumer movement is organized with the protecting and promoting the interest of consumers against unethical and unfair trade practices. Rampant food shortage holdings, black marketing, adulteration of food and edible oil, gave birth to the consumer movement in an orgainsed form in the 1960s , Till the 1970s consumer organization were largely engaged in writing article and holding exhibitions. They formed consumer good to took into the mal practices in ration shops and overloading in the road passenger transport. A major step taken in 1986 by Indian Government.It was the enachment of the consumer protection Act 1986. Which is popularly known as COPRA the enachent of COPRA has led to the setting up of separate deparments of consumer affairs in central and state governments.

India has been observing 24 December the National consumer Day. The consumer movement in India has made progress in terms of number of organized consumer protection groups and their activities. There are today more than 700 consumer groups in the country.

Market do not work in a fair manner when producers are few and powerful where as consumers are scattered. The large companies can manipulate the market various ways . They passed false information through advertisement, media and other sources to attract consumer .Sometime, traders also use unfair trade practice such as when shopkeepers weight less than what they should or when traders add charges that were not mention before ,or when defective goods are sold. All these ways the consumers are exploited in the market place. Hence, there is a need for protection of consumers.

CONSUMERS RIGHTS :

1. Right to informed warranty.
2. Right to get quality, bill, etc.
3. Right to chose.
4. Right to seek redressal.

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

1. Right to informed warranty :-

Consumer have the right to find certain details information about commodity at the time of purchasing, These details may be about price, batch number date of manufacture, address of manufactures, expiry date, ingredients, are used, and direction for proper use etc,

If consumer find that product is defective he can ask for replacement if expiry period was not printed the manufactures would blame. If medicine as food item have expired sever action can be taken against traders.

Similarly, one can protest and complain if some one sell a good at more than printed price. MRP means maximum Retail price, 50 Consumer can bargain with the seller to sell at less than the MRP.

2. Right to get quality, bill, etc.

Right to get quality, bill warranty etc. consumer have the right to get bill and warranty and conflation about quality etc. For quality consumer can check the List mark, Ag mark or other hall mark. There logos and certification help consumers get assured of quality while purchasing the goods and services. The organization that have monitor and issues these certification allow producer to use their logos provide they follow certain quality standard.

Right to chose.

Any consumer who receives a service in whatever capacity, regardless to age, gender and nature of service has right to choose whether to continue to receive the service, some time Gas supply dealers insist that you have to buy the stove from them when you take a new connection but you choose another stove, Some education at and professional institutions charging fee from students for the entire duration of the course in advance but one can left after one year and choose another institute.

3. Right to seek redressal.

Consumer have the right to seek redressal against unfair trade practice and exploitation. Consumers forums are consumer protection councils guide consumers on how to file cases in the consumer court. Under COPRA a three tier quasi judicial machinery at the district, state and national levels was setup for redressal of consumer disputes. The district level court deals with the case involving claim up to 20 lakh the state level course between Rs. 20 laksh to Rs, one crore and the national level court deals with cases involving claims Rs. One crore. If a case is dismissed in district court, the consumer can also appeal in state court and National level court.

CONCLUSION :

Consumer Exploitation in the market place happens in various ways consumers face many problems in their day to day life like –

1. Manufacture ig companies manipulate the market though advertisement media and other sources.
2. False information passed to attract consumers.

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

3. Trader use unfair trade practice.
4. Consumer not get bill.
5. Consume not get warranty.
6. Consumer have to pay price more than MRP.
7. Weight of commodity is less than what they should be.
8. Medicine cross expiry date.
9. Expiry date not printed.
10. Detail information about ingredient are not mention.
11. Commodity is defective.
12. Peking in not Proper.
13. Quality of commodity is not good as sown.
14. Postal services not in time.
15. Railway services problem.
16. Hospital service problem.
17. Water Pollution.
18. Noice Pollution
19. Unhealthy environment.

SUGESSION :

Hence, there is a need for rules and regulations to ensure protection for consumers. Consumer have various rights. Ie – 1. Right to be informed about 2. Right to get bill, 3.
Right to get warranty. 4. Right to get Quality. 5. Right to get choose commodity, services, shop, dealer. 6. Right to redressal.

GOVERNMENT POLICY :

Indian parliament enacted the consumer protection act in 24Dec. 1986 Every year 24Dec. has been calibrated as consumer day in India. After 25 year of the enactment of the Act consumer averseness in India is spreading but slowly. There are 700 consumer groups in India. There tier system of consumer court at district level, state level and National level. Consumer forum and consumer council also help for redressal. But there so many difficulties also in consumer redressal process. These process is becoming expensive and time consuming. Many time consumers are required to engage lowyers. These cases require time for filing and attending the court proceeding etc.The existing laws also are not very clear the issues of compensation to consumer inject lay defective products similarly, rules and regulation for working of market are after not followed and consumers are not aware,

There is scope for consumers to realize their note and importance, It is often said that consumer movements can be effective only with the consumers active involvement.

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

REFRENCE :

1. CUTS , " Is it Realty Safe"
   Consumer Unity Trust Society, Jaipur, 2004.
2. CUTS, "State of the Indian Consumer, Analysis of the Implementation of the united Nations Guidelines for consumer. Protection, 1985.
3. National Consumer Disputes Rediressal commission, landmark Judgments on consumer Protection Universal Law publishing Co. Delhi. 2005.
4. Ministry of finance "Economic survey" Govt. of India, N.Delhi, 2003.
5. Reserve Bank of India "Handbook of statistics on Indian Economy" Mumbai 2006.
6. http//www.mca,gov.in is a website of central Government ministry of consumer affaires.
7. Website of a consumer organisation working In India.
8. WWW. Cuts – international.org.

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

Invisible Sycorax: Gender Prejudice in Shakespeare's *The Tempest*

Dr Protibha Mukherjee Sahukar
Assistant Professor, Dept of English
Durga Mahavidyalay, Raipur (C.G.)

Shakespeare's plays are timeless tales of the human condition. ***The Tempest*** is a deep rich and a brilliant play. The high status enjoyed by the play within the corpus of Shakespearean plays has never been remotely questioned, and this prominence is reflected in the large amount of creative works ranging from novels, poems, plays to films where the influence of the play is strongly felt. It has exerted a consistently strong influence on audiences and readers alike.

The aim of the present paper is to explore the significance of Sycorax in the context of the patriarchal and gender power as illustrated extensively in Shakespeare's canonical work. In its exploration of the numerous breaches and silences it brings to focus one of the most disturbing absences - that of Sycorax. She is the enigmatic form whose voice becomes the unheard noises of the play. The paper analyzes the amplified absence of the witch and makes her absent presence felt. ***The Tempest*** reveals fascinating power dynamics even though it seems odd to focus on the authority of a woman who is not present and the one female character present does not exert any authority. The silencing of women in Shakespeare's plays has the effect of restricting their access to power. By controlling a woman's voice and sexuality, a man not only reinforces his own power and stops her from challenging him, but he undermines her power in the process. Yet, the valorized female in need of protection and the trepidation towards women in positions of power is all too visible in the play.

The idea that the women of Shakespeare's plays were represented merely as radiant paragons of virtue and veneration held sway for an extensive period of time. ***The Tempest*** is set in a completely male dominated society as it was written in the Jacobean period- a period when society was most certainly patriarchal; where all positions of power were held by men. The women in the plays were never responsible for moving the action forward, but served only as a ground upon which the action moved forward. All the same the onus of blame cannot be put squarely on the bard.

Ann Thompson points out that "women are notably absent from Shakespeare's ***Tempest*** but it only makes logistical sense that most roles on the Elizabethan stage - upon which only men could legally set foot - would have been written for men in order to avoid the often laughable feigning of women by prepubescent boys" (402). ***The Tempest*** investigates the efficacy of undermining a woman's authority by verbally attacking her for her outspokenness and blatant sexuality. Outspoken women challenge male control over female sexuality and voice both symbolically, in their actions, and sometimes in verbalized argument since power and sexuality are inextricably linked. It is a known fact that female voice and sexuality threaten male ambition and the markers like 'witches' and 'whores' are used to silence women. In Shakespeare, women who are referred to as witches possess either a strong, uncompromising voice or supernatural powers, as can be seen of Sycorax in ***The Tempest***. The word 'witch' is a loaded accusation meant to discredit a powerful woman just as 'whore' is used to undermine the power of a woman's voice.

A woman who is in danger of being called a witch in Shakespeare's play flouts a man's control over her voice and her sexuality. A forthright and dominant woman is always in a peril of being called a witch. This biting word diminishes the power of a woman's voice by attacking her name and ensnaring her inside the pejorative inferences of a double standard. In figuratively silencing a woman by discrediting her,

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

and literally silencing a woman who is afraid to speak out, the use of this word is an effective way for the men in Shakespeare's plays to exercise control over women, and so gain power for themselves. The word particularly diminishes the power of female voices and put domination in the hands of men. The word then becomes an effective vehicle of threat and control to target women who challenge the male supremacy.

Moreover Shakespeare was writing ***The Tempest*** in the midst of the European witch craze of the sixteenth and seventeenth centuries, when the persecuted witches were customarily executed by burning in Europe. Quite in the same manner Sycorax was about to be executed for abusing her supernatural powers. As Prospero informs us that Sycorax was "a damned witch" who was nearly put to death by her people for her "mischief manifold and sorceries terrible" only to be spared for her life "for one thing she did" and was "banished" Stripped of her power and her lover, she is cast out and later marooned to become the "witch" in the play. In all probability Sycorax was a clairvoyant or a healer from Algiers who rose to prominence through her magical arts. There is indecipherability present in her race. Although her background cannot be clearly defined yet as a native to Algiers, she becomes a representation of a black woman who is duly silenced. We get an impression on Sycorax when Prospero describes her as a non-white, "Algiers", who is an old and dreadful woman whose outwards appearance seems to mirror her inner spite. The cultural community scapegoated certain women, particularly women who were wise. These women were often older and unattached, uncanny in their powers of perception and unruly in their refusal to conform to societal norms. Such women challenged the discourse of power employed by patriarchy. Sycorax was strong, independent and powerful, everything that was not expected in a woman. There is no doubt that she made an incredible witch and sorceress. Sycorax is held responsible when a calamitous storm destroyed Algiers; so from being a black woman healer who rises to supremacy to eventually being scapegoat and finally banished from her home becomes her fate. Not only is Sycorax excluded and displaced, she is labeled as a witch as this is a convenient phenomenon frequently attributed to social rebels, mainly intelligent women feared for their power and conversation. The witches were associated with women who were masterless and defied masculine authority, inverting the status quo, transgressing established boundaries of acceptable behavior. ***The Tempest*** requires one to read through Prospero's half truths to examine his motive for vilifying Sycorax.

The absent Sycorax is pitted against present Miranda and everything is done to put her on the lowest pedestal. Her femininity is far from the dainty white femininity embodied in young Miranda. Described as a hag "bent into a hoop," her gender identity becomes hard to decipher because of her grotesque look. With his disparaging remarks about her sexuality and body, calling her "a foul witch" whose body was doubled over "with age;" referring to her as a "blue-eyed hag," which was considered a flaw as at that time grey or brown eyes were considered beautiful thus symbolically describing Sycorax as being an imperfection to society. One can instantly discern the racist and sexist remarks made by Prospero (or is it the bard?). Sycorax becomes the archetype for subaltern women, who with all the effort have not reached pinnacle of visibility. The commemoration of her son Caliban as a figure of subaltern struggle automatically leads to her marginalization. Sycorax's silence in the play is particularly exasperating as she is not permitted to give her version of the story. Everything that we know of her is through the lens of Caliban and Prospero.

Sycorax is the counterpart to Miranda and between them they split the patriarchal stereotype of women as complete whores and chaste virgins. Miranda is the glorified woman, representative of virtue and goodness, is in a docile role to her male protector, displaying the idea that the virtuous and

good woman has to be a subservient woman. As virtue and goodness are quintessence of the ideal femininity, Miranda is presented as beautiful, tender hearted and obedient woman who believes that her father can never commit mistakes. Miranda becomes the ideal woman of her time, through her beauty, conformity to her father's wishes, thus submissive to man's rule and through her naivety.

The good and beautiful Miranda is the exact opposite of Sycorax, who takes the form of ugly and evil because she holds power over men. The elements of age, deformity, and the physically gross renders Sycorax ugly and evil who is actually representative of the fear of the power of mature prudent woman. Sycorax is a representation of a strong, independent and feared woman, whose power and ugliness makes her a pariah to Elizabethan society. The Elizabethan women were seen as objects to possess and control. Miranda's obedience and submission to her father shows stereotypical femininity of Elizabethan times; Prospero and Ferdinand, who stand for Masculinity, rule and possess her. The representations of Miranda and Sycorax are pictures of alternative descriptions of femininity.

Sycorax exists as the outlaw female figure and differs from the witches of the other plays in even more fundamental ways. She is neither a tangible character nor is imitated on the stage. She does not have a speaking part in the play yet her presence permeates the play as she stays entrenched in the language of other characters. She has the destructive powers of classical witches having died long before the play opens and poses a threat even in her absence. Sycorax is described as inhumanly powerful, with control over the moon and tides. Prospero goes into detail about the enormity of Sycorax's supremacy, when he says she practiced sorcery “so strong / That could control the Moon, make flows and ebbs”. In spite of his affronts, Prospero is enviously aware of Sycorax's extremely potent powers which she was not afraid to use to further herself. Her prolific connection to lunar cycles links her with archetypal female sources of power. It seems strange that a man who spent most of his life practicing an art that allowed him to call spirits and create tempests equates Sycorax's magical powers with evil. All the same, she is insistently present in his memory ironically far more present than his own wife.

Prospero's narrative overtly denigrates Sycorax, yet upon closer examination, her history is remarkably analogous with his. Interestingly enough, Prospero never meets Sycorax as she died before Prospero's arrival on the island. Prospero never saw her, and everything he knows about her he has learned from Ariel. The play then presents two powerful magicians, the present Prospero and the (k)not present Sycorax. In the beginning it appears that the two are a contrasting duo- the generous Prospero and the rapacious Sycorax. That Sycorax's magic is dark, whereas Prospero's is light, that Prospero's magic comes from books, whereas Sycorax's power is said to come from the devil. Yet, upon closer analysis, the differences between the two characters disappear and the play establishes strong parallels between the two. Prospero was cast out from Milan because of his devotion to 'liberal arts' which gave his brother Antonio a chance to usurp his dukedom. On the other hand, Sycorax was expelled from Algiers to the island because she was accused of witchcraft. Sycorax arrives on the island pregnant with Caliban. Prospero arrive on the island with his infant daughter Miranda (the metaphoric pregnancy of Prospero, one can say). Prospero's methods of control are very similar to Sycorax's, making the opposition between them even less distinct. The fine line between Sycorax's black magic and Prospero's white blurs even further when Prospero, like Sycorax, compels Ariel into doing his bidding, using his powers to regain his dukedom. Both Sycorax and Prospero controlled the natural spirits of the island through Ariel. Sycorax seems to be a perfect foil to Prospero. It is as though the bard intentionally sets up opposites- black (Sycorax) and white (Prospero) and then brings into play they gray areas of moral ambiguity.

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

Sycorax has already experienced expulsion and remains alive in the vile and degrading remembrance of Prospero. By calling her a witch and insinuating that she is the devil's whore, Prospero creates an image of Sycorax as a base and evil woman. This allows him to feel justified in taking the island from her son. The physical absence of Sycorax makes it easier for Prospero to manipulate her memory in order to uphold his own authority. Prospero fashions Sycorax as an unchaste witch in order to enslave Caliban and prevent him from polluting Miranda's body. Although Prospero overpowers Caliban with magic that is unmatched in Sycorax's absence, he finds it difficult to silence Caliban's claim to the island vis a vis his mother's lineage. His persuasive oratory literally vitiates Sycorax's dynasty, but is not compelling enough to remove the shadow of doubt cast by Caliban's matriarchal discourse. Sycorax's memory emerges as point of contention, compelling one to question Prospero's description, and thus his claim to power.

Prospero cites Sycorax's magic as the core of her corrupt nature, but this is the only evidence we have of her wickedness. One could argue that locking Ariel in a pine tree was cruel on her part, but figuratively speaking Prospero too traps Ariel by enslaving him, and he is equally harsh to Caliban. Since there is nothing else to indicate that Sycorax is evil, the needle of suspicious automatically moves towards Prospero's motives in running her down. By harping upon Sycorax's ill will throughout the play, Prospero could be willfully taking advantage of her silence in order to maintain his own claim to the island despite the presence of Caliban, who believes he inherited the island from his mother. In altering history's impression of a dead woman, claiming the island for himself and teaching her only son to speak in his language, Prospero demonstrates how the very structures that allow men to gain power by controlling women's voices act twice as much in their favour by silencing women. Sycorax is a prototype for the voiceless black woman found in colonial literature:

> It is true that Sycorax is invoked quite insistently throughout the play, but only as the disembodied symbol of the men's most terrible fears. She is invoked only to be spoken of as absent, recalled as a reminder of her disposessesion, and not permitted her version of the story. The recounting of her story, as we know it, is in itself significant for its absences (Busia 86).

Since Sycorax doesn't have any voice in the play, Prospero's story on the witch is surely a reproduction of Ariel's. Prospero paints the picture of Sycorax in that manner in which Ariel told him about the witch. It becomes highly advantageous for the Prospero and Ariel to Other Sycorax as she is the muted female. While it is Ariel's endeavor of to be seen as a victim of her persecution, Prospero insists on the cultural diversity so that, through moral depreciation, he could legitimize the usurpation of the island and the slavery of both Caliban and Ariel. In this way Prospero is successful to be the master of the situation, of the island and of Caliban to the very last.

But is Ariel a reliable narrator? One ought to be skeptical of what Ariel has to say after being trapped in a pine tree for so long, Ariel is in all probability is indignant of her magic. Also the question is left unanswered as to what Ariel did to warrant Sycorax's anger. It's plausible that she had some good grounds for punishing him. Moreover the comparison between the magic of Prospero versus Sycorax and calls into question whether the stories about Sycorax's evil powers are indeed correct. The dreadful act for which she is deported is shrouded in darkness. She could have been a Medea like character, a female Prospero of sorts herself. Who is to say that she too was not betrayed the same way Prospero was? She might very well not be the evil person she has always been characterized as since she is not a character and does not have any voice to tell her own story. Busia informs thus, “The terrible deed for which she is banished cannot be mentioned. It is crucial that her absence takes the form of voicelessness - voicelessness in a discourse in which sexuality and access to language together form

part of the discourse of access to power" (87).

Prospero as a well-read man is able to read books for his magic, but in an era when few women could read, Sycorax is constrained by her access to language. Perhaps Prospero's hostility towards Sycorax aggravates because inspite of her illiteracy she has found a source of power outside of written language. Therefore for Sycorax magic becomes a source of communication and voice. Prospero can't control Sycorax herself as she is not present physically, but without scruples maligns her feminity and her supernatural voice. Since he also has the power to control Caliban; he ensures the silence of her matriarchal voice as well.

The feminine power found in Sycorax, thwarts the very patriarchal nature of canonical western writing. Prospero's white magic is keenly contrasted with Sycorax's black art as natural magic cannot escape its demonic shadow. It is a known fact that for every learned magician there were those fortune telling 'wise women' who all too often found themselves demonized as witches, blamed for various epidemics, livestock diseases and the other ills of life in earlier times. Witches were persecuted and witch-hunts did not actually stop until the end of the seventeenth century. Therefore, Shakespeare's use of magic compounded the fact that Prospero was presented in a largely good light (may be a move made as a political statement for all one knows). The fact that Sycorax is equal in power and magic to Prospero immediately makes him believe that she is not ideal in terms of a woman in the first place never mind her looks or her pregnancy.

Sycorax's greatest threat to Prospero's authority lies in her motherhood and not in her witchery. When Caliban invokes his matriarchal lineage in order to lay claim to the island Prospero immediately negates this claim by declaring that Caliban is the bastard son of the devil, "Thou poisonous slave, got by the devil himself/Upon the wicked dam….".He subordinates Caliban's matriarchal origins to his patriarchal line. Caliban invokes his matriarchal lineage in order to lay claim to the island, "This island's mine, by Sycorax my mother, / Which thou tak'st from me" however, Prospero negates this claim by declaring that Caliban is the bastard son of the devil. Whether Caliban is truly the devil's son or not is not established by the play. He negates the legitimacy of Sycorax's matriarchy by constructing Sycorax as not only an evil witch, but also an unchaste mother. Such a discourse opposes Caliban's claim to the island while justifying Prospero's usurpation of power. He erases her lineage by describing her as a perversely sexual witch whose illegitimate affair with the devil polluted the island with Caliban's presence. Whether Prospero fabricated a lie to deny Caliban his inheritance or was told so by Ariel is never clear in the play. Either way, Prospero's ill-treatment of Caliban goes undisputed because Sycorax dies before even teaching Caliban to speak. As a result he lacks the knowledge to negate Prospero's slander. Infact in the beginning when Caliban first meets Prospero he looks up to him as a father figure. Because Caliban is motherless, Prospero becomes the surrogate father:

> Caliban: When thou cam'st first,
> Thou strok'st me and made much of me, wouldst give me
> Water with berries in't and teach me how
> To name the bigger light, and how the less,
> That burnt by day and night; and then I loved thee, (1:2:335-39)

Clearly, the "hag-seed" son is no match for Prospero's verbal skills. Prospero does everything in his power to make Caliban reject his mother's menacing female and spiritual knowledge. Caliban expresses angst because Prospero's magical power is stronger than Sycorax's: "I must obey. His art is of such pow'r / It would control my dam's god, Setebos". Sycorax has a "god" who she apparently turned to, while Prospero is fashioned as godly for actually being capable of controlling Sycorax's god. Caliban approach toward his mother is rather ambivalent; he calls upon her to curse Prospero yet reluctantly

recognizes that his art is more powerful than the art of his mother. Even With the help of Ariel, Prospero's spell distorts Caliban's ability to see reality, leading him to believe that the jester (Trinculo) and the drunkard butler (Stephano) are gods who will help him overthrow Prospero. Once he realizes his foolishness, Caliban becomes resigned to his oppressed condition.

Sycorax, presented as utter monster wields considerable maternal power over Prospero. She is an obstacle to the edifice of Prospero's male subjectivity and is ultimately defeated in order to protect boundaries of the patriarchal state and masculine selfhood. The threat of a monstrous mother looms throughout the action in ***The Tempest***, as we are repeatedly reminded that the island was previously ruled by an evil witch, Sycorax, who, died before Prospero and Miranda arrived. Sycorax's legacy survives in her deformed and degraded son Caliban, who challenges Prospero's claim to the island but whom the exiled duke ultimately enslaves, and the airy spirit Ariel, whom Prospero saves from Sycorax's curse only to subject him to servitude as well. These characters and their histories with the witch keep the threat of Sycorax alive for Prospero and Miranda throughout their years on the island.

Sycorax's invisibility in the play can be read simply as the forceful deportation of the powerful, racially-marked female from the patriarchal narrative. The gendered nature of politics and the creation of feminine passivity are all-pervading. It is not only explicitly present in political talk, but is substantially extended to literary ones as well. As a black woman, Sycorax becomes the ultimate Other for Shakespeare's audiences and remains so for generations to come. Her maternal power which is regarded as monstrosity of maternity threatens white and male privilege. Indeed, making Sycorax visible, listening to and learning to speak her language of healing, can potentially lead to more holistic societal change for numerous reasons. For one, it insists on the participation of women. Moreover, if we imagine Sycorax as a healer who was forcefully labeled as a witch because of her spirituality and sexuality as many women in the early modern period were and continue to be, we can better understand the ways this legacy impacts our relationships with Sycorax, within and without, thus potentially changing the ways we relate to ourselves and one another. The absent presence of the racialized and sexualized witch-mother investigates the marginalization of women, gender, and the connection between sexuality and spirituality in masculinist interpretations of ***The Tempest***.

Works Cited

Thompson, Ann. "'Miranda, Where's Your Sister?': Reading Shakespeare's **The Tempest**." **The Tempest**: **A Case Study in Critical Controversy**. 2nd ed. Ed. Gerald Graff and James Phelan. Boston: Bedford/St. Martin's, 2009. 402-412. Print.

Shakespeare William. **The Tempest**. Harper Collins Publishers. 2012. Print.

Busia, Abena P. A. "Silencing Sycorax: On African Colonial Discourse and the Unvoiced Female." **Cultural Critique**.14 II .1989. 81-104.Print.

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

छत्तीसगढ़ में विशेष पिछड़ी जनजाति "कमार"

* डॉ. किशोर कुमार पटेल
विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग, दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
** प्रेम कुमारी पटेल
शोध छात्रा पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

भारतीय समाज विभिन्न प्रजातीय समूहों का संगम स्थल रहा है। समय–समय पर विभिन्न समुदाय भारत में प्रवेश करते रहे हैं, लेकिन कालान्तर में ऐसे सभी समूहों की सांस्कृतिक परमपराएं भारतीय समाज का अंग बन गई। इसके पश्चात् भी इनके अनेक मानव समूह ऐसे थे, जिन्होंने बाह्य सभ्यता के कुछ तत्वों को ग्रहण करने के पश्चात् भी अपनी मौलिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक विशेषताओं को नष्ट होने नहीं दिया। साधारणतः ऐसे समूहों को हम "जनजाति" के नाम से संबोधित करते हैं। ये जनजातियाँ प्रायः शहरी सभ्यता से दूर गहन जंगलों के अंधेरे कोने में पर्वतों की गगनचुम्बी चोटियों पर एवं उनकी तलहटियों में एक पठारी क्षेत्रों में निवास करती हैं ओर प्रत्येक अर्थ में अत्यधिक पिछड़ी हुई हैं। यही कारण है कि इनको आदिम तथा खानाबदोश मानकर इनकी लंबे समय तक अवहेलना की जाती रही है। सामान्यतः लोग जनजाति तथा आदिवासी शब्द का अर्थ पिछड़े हुए और असभ्य मानव समुह से समझते हैं, जो कि एक सामान्य क्षेत्र में रहते हुए, एक सामान्य भाषा बोलते हैं और सामान्य संस्कृति को प्रयोग में लाते हैं।

जनजाति शब्द की उत्पत्ति तथा अर्थ के विषय में अलग–अलग विचारधारा है। व्युत्पत्ति शास्त्र के अनुसार अंग्रेजी शब्द Tribe (जनजाति) की उत्पत्ति त्रिभुज शब्द से मानी जाती है, जिसका अर्थ तीन अंग है। रोमवासियों के लिए Tribe एक राजनैतिक संस्था के रूप में था। भारत की भांति पश्चिमी दुनिया में "जनजाति" शब्द का अर्थ आज के प्रचलित अर्थ से भिन्न भारत की आदिम जनजातियों को विद्वानों ने अलग–अलग नामों से पुकारा है। प्रसिद्ध नृतत्व शास्त्री एच.एच. रिजले, लेके, ग्रियर्सन, सालर्ट, टेलेट्स, सेनविक मार्टिन तथा भारतीय समाज सुधारक ठक्कर ने इन्हें आदिवासी शब्द से संबोधित किया। हट्टन ने प्राचीन जनजाति कहा है।

इम्पीरियल गजेटियर में जनजाति, परिवारों के एक ऐसे समूह का नाम है, जिसका एक नाम तथा एक बोली हो तथा एक भू–भाग में रहते हों या उस भाग को अपना मानते हों, अपनी जनजाति के भीतर ही विवाह इत्यादि करते हों। कमार छत्तीसगढ़ की एक आदिम जनजाति है। जो प्रदेश के दक्षिणी भाग में निवास करती है। कमार अधिकतर छत्तीसगढ़ के रायपुर संभाग मे कुल जनसंख्या का लगभग 40 प्रतिशत गरियाबंद जिले में निवासरत हैं। कमार जनजाति संख्या में कम हैं। प्रदेश की जनजातियों की कुल जनसंख्या में कमार केवल 0.1 प्रतिशत हैं। कमार जनजाति के प्रजातीय उद्भव के विषय में पर्याप्त जानकारी प्राप्त नहीं है। रसेल एवं हीरालाल के अनुसार कमारों की प्रजाति द्रविड़ है और यह गोड़ जनजाति की एक भाखा है,

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

किन्तु रसेल तथा हरीलाल उन आधारों को स्पश्ट करने में असमर्थ है, जिनके द्वारा उपरोक्त मान्यता को सिद्ध किया जा सके।

कमार जनजाति का संकेन्द्रण वि ोशकर गरियाबंद जिले में हुआ है। रायपुर जिले में इनकी संख्या 1961 में 11,008 थी, जो बढ़कर 2001 में 15,418 हो गयी है। इसके अतिरिक्त इस जनजाति का विस्तार बस्तर ,महासमुंद एवं रायगढ़ के कुछ संभागो में भी है। बस्तर संभाग तथा बिन्द्रानवागढ़, फिंगे वर, मैनपुर तथा धमतरी के नवागढ़ व सिहावा क्षेत्र कमार के लिए विख्यात हैं। लगभग एक शताब्दी पूर्व तक सभ्यता से दूर यह एक नितांत जंगली जाति थी। कमार अपने को गोड़ों के वंशज मानते हैं। अपनी उत्पत्ति के संबंध में उनकी अवधारणा है, कि पृथ्वी पर सर्वप्रथम महाप्रलय हुआ और उसके थमने पर भगवान ने एक पुरूष व एक स्त्री का सृजन किया, जिससे सृष्टि की उत्पत्ति हुई।

एक शताब्दी पूर्व तक कमार जंगलों में गुफा के अंदर रहते थे, किन्तु अब झोपड़ियों में अथवा मिट्टी के कच्चे घरों में रहते हैं। अधिकांशतः कमारों के घर अब पक्की ईंटों तथा सीमेंट के बनने लगे हैं। कमारों के आजीविका के साधन बहुत अविकसित हैं। इनकी आजिविका का मुख्य साधन अस्थाई कृशि है, जिसे ये दाही कहते है। साथ ही बांस की सामाग्री बनाकर अपने परिवार का पालन पोशण करते है। कमार जनजाति आर्थिक दृश्टि से काफी पिछड़ी हुई है। कमारों में विवाह संस्कार अनेक रीति – रिवाजों से पूरा किया जाता है। विवाह अपने गोत्र में नहीं होते, परन्तु भाई व बहन के बच्चों के बीच भाादी हो सकती है। इनमें एक विवाही परिवार पाया जाता है। पारिवारिक पितृवं ीय तथा पितृस्थानीय होते हैं और सामान्यतः एकाकी परिवार पाये जाते है। जिसमें माँ–बाप तथा अविवाहित बच्चे होते हैं। कमारों में उत्तराधिकार सम्पत्ति का स्थानांतरण बहुत कम होता है, क्योंकि व्यक्ति के मरने पर उसके उपयोग की वस्तुएं उसके साथ ही दफना दी जाती है।

कमार ि ाक्षा की दृश्टि से बहुत पिछड़े हुए हैं। 2001 की जनगणना के अनुसार कमारों की साक्षरता 8 प्रति ात से भी कम है। चूंकि कमारों की अर्थव्यवस्था ि ाकार पर भी आधारित है, इसलिए कमार अनेक वन देवी, देवताओं की पूजा करते है। ि ाकार करने के बाद ि ाकार का सिर काटकर पानी से विधिवत धोया जाता है। इसके बाद इसे वन देवता को अर्पित किया जाता है। वन देवता के पूजा के बाद भोश भाग ग्रहण किया जाता है। कमार हिन्दू देवता महादेव तथा हनुमान की भी पूजा करते हैं। कमार जनजाति के लोग लोहे की पूजा करते हैं। इनके हथियार अधिकतर लोहे एवं लकड़ी के बने होते हैं। कमारों के मुख्य त्यौहार हरेली, पोरा (पोला), दसेरा (द हरा), छेरछेरा (होरी), फागुन आदि हैं। कमार सांस्कृतिक व आर्थिक दृश्टि से काफी पिछड़े हुए हैं। एक औरत बच्चे को जन्म देने के दिन से छः दिन तक ंअपवित्र समझी जाती है। छठवें दिन चाथी संस्कार किया जाता है, जिसमें बच्चे के सिर से बाल काटे जाते हैं तथा माँ एवं बच्चे को नहलाया जाता है। यदि बच्चा परिवार के किसी सदस्य के मरने के छः महीने के अन्दर पैदा होता है, तो उसका नाम उस व्यक्ति के नाम पर रख दिया जाता है। चाहे वह लड़का हो या लड़की हो।

कमारों में व्यक्ति के मरने पर उसे जमीन के अंदर दफना दिया जाता है। दफन करते समय

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

मृतक व्यक्ति का सिर उत्तर दिशा में रखा जाता है तथा तीन दिन तक शोक मनाया जाता है। कमारों में बालों को पवित्र समझा जाता है। ये कभी भी सिर से अपने बाल नहीं कटवाते, परन्तु किसी संबंधी या पिता के मरने पर सिर के बाल बनवाये जाते हैं। औरतों का विशेष अलंकार गोदना है, जिसे किशोरावस्था में लड़कियों को गोदना गुदवाया जाता है। औरतें शादी से पहले या बाद में शरीर के विभिन्न भागों में गोदना गुदवाती हैं। छत्तीसगढ़ के दूरस्थ पहाड़ी व जंगली क्षेत्रों में वनों के बीच अपना निवास स्थान बनाकर छोटे–छोटे गाँवों में कमार निवासरत हैं। छत्तीसगढ़ के अन्य जनजातियों की तुलना में कमार जनजाति ज्यादा पिछड़ी व अविकसित है।

कमार जनजाति की लोक–संस्कृति, रहन–सहन, खान–पान, वेशभूषा, बोली व जीवन–यापन के अत्यधिक पुराने तरीके से इस जनजाति की पृथक पहचान है। इन्हें समाज की मुख्य धारा में जोड़ने हेतु शासन बहुत प्रयासरत है। कमार एक ऐसी आदिम जनजाति है, जिसके संरक्षण एवं विकास के लिए शासन द्वारा विभिन्न योजनाएँ चलाई जा रही हैं। इस जनजाति की संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था के उत्थान के लिए शासन द्वारा कमार विकास अभिकरण की स्थापना की गई है। इनकी शिक्षा, रहन–सहन, व रोजगार के विकास हेतु शासन द्वारा इन्हें विशेष जनजाति का दर्जा प्रदान किया गया है।

<u>सदर्भग्रन्थ :–</u>

1. श्यामाचरण दुबे, "सांस्कृतिक मानव विज्ञान की परिचयात्मक पुस्तक" राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1982।
2. भारती, "कमार एक छत्तीसगढ़ी जनजातीय मानव", 1986।
3. प्यारेलाल गुप्त, "प्राचीन छत्तीसगढ़", रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय प्रकाशन, रायपुर, 1973।
4. शिवकुमार तिवारी, "मध्यप्रदेश के आदिवासी" मध्यप्रदेश ग्रंथ अकादमी, 2002।
5. रिपोर्ट, कमार विकास अभिकरण, गरियाबंद, रायपुर, आदिवासी एकीकृत विकास परियोजना।

❏❏❏

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

''छत्तीसगढ़ में रेशम उद्योग–उत्पादन विकास एवं योजनाएं''

डॉ. सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल
सहायक प्राध्यापक
वाणिज्य विभाग, दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

'धान का कटोरा' कहा जाने वाला छत्तीसगढ़ अंचल मध्य–प्रदेश पुनर्गठन अधिनियम, 2000 के द्वारा भारत का हृदय प्रदेश ''मध्य–प्रदेश'' से पृथक होकर 1 नवम्बर, 2000 को माननीय श्री अटल बिहारी बाजपेयी के नेतृत्व में भारतीय संघ का 26 वॉ राज्य 'छत्तीसगढ़' बन गया। राज्य की राजधानी रायपुर है।

प्राचीन समय में यह प्रांत 'दक्षिण कोसल' के नाम से जाना जाता था। स्वतंत्रता पश्चात् देश के अनेक रियासतों के साथ ही इस प्रान्त की कुल 14 रियासतों का 1 जनवरी 1948 को भारतीय संघ में विलय हुआ। मुगल, मराठा काल में यह क्षेत्र छत्तीसगढ़ इसलिए कहा जाने लगा क्योंकि कल्चुरी वंश की रतनपुर शाखा के विभिन्न राजाओं एवं जमीदारों के 36 किले थे। छत्तीसगढ़ 1861 में मध्यप्रांत के गठन पर उसमें तत्त्पश्चात् 1 नवम्बर 1956 में पुनर्गठित मध्यप्रांत अर्थात 'मध्यप्रदेश' का पूर्वांचल बना जो 44 वर्ष के पश्चात् पृथक राज्य छत्तीसगढ़ बन गया।

''कुटीर एवं लघु उद्योग हमारी अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण अंग है, जिनकी कभी भी उपेक्षा नहीं की जा सकती।''

महात्मा गांधी के शब्दों में ''भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार उसके लघु, कुटीर उद्योग एवं कृषि में निहीत है।''

कुटीर उद्योग से आशय ऐसे उद्योगों से है, जो पूर्णतया या मुख्यतः परिवार के सदस्यों की सहायता से पूर्णकालिक अथवा अंशकालिक स्वरूप में चलाया जाता है। कुटीर उद्योगों में हस्त प्रक्रियाओं की प्रधानता होती है। इन उद्योगों में प्रायः परम्परागत विधियों से परम्परागत वस्तुओं का निर्माण किया जाता है तथा स्थानीय बाजार में ही उसकी पूर्ति की जाती है। इन उद्योगों में मजदूरी या वेतन पर कम व्यक्ति लगाए जाते हैं प्रायः कार्यरत व्यक्ति एक ही परिवार के सदस्य होते है। जबकि लघु उद्योग में यान्त्रिक प्रक्रियाओं द्वारा अपेक्षाकृत व्यापक बाजार की मांग की पूर्ति की जाती हैं एवं मजदूरी तथा वेतन पर पर्याप्त लगाये जाते हैं। जो एक ही परिवार के नहीं होते।

कृषि में सहायक ग्रामीण कुटीर उद्योगों में वे उद्योग शामिल किये जाते हैं, जो कृषकों द्वारा सहायक धन्धों के रूप में चलाए जाते हैं। जैसे–मुर्गीपालन, मत्स्य पालन, गाय–भैंस पालना, करघा में बुनाई, रेशम के कीड़े पालना आदि।

प्रस्तुत आलेख का विषय ''रेशम उद्योग उत्पादन विकास एवं योजनाओं'' का अध्ययन है। उत्तर प्रदेश कुटीर उद्योग उप समिति 1947 के अनुसार ''बेरोजगारी के राक्षस से संघर्ष करने का एक उपाय कुटीर एवं लघु स्तरीय उद्योगों के विकास से है।'' प्रकृति ने मानव को कुछ ऐसे कीट उपहार में दिये हैं, जिनसे एक विशेष प्रकार का धागा प्राप्त किया जाता है। इन कीटों को ''रेशम की कीट'' कहा जाता है। वर्तमान में कृत्रिम रूप से रेशम की कीट को पालकर रेशम के धागों का औद्योगिक रूप से उत्पादन किया जा रहा है।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

रेशम का नाम सुनते ही मन में भ्रम पैदा होता है कि कोसा को ही रेशम कहते हैं, जबकि कुछ इसे अलग मानते हैं। कोसा एवं रेशम में समानता एवं असमानता के सम्बंध में निम्न तर्क उल्लेखनीय है–

1. पहला तर्क कोसाफल निर्माण करने वाली इल्लियों की भिन्नता के बारे में देते है। उनका कहना है कि ये इल्लियॉ अलग–अलग जातियों (प्रजाति) के होते हैं जबकि जन्तुशास्त्र की दृष्टि से कोसाफल एवं रेशम उत्पन्न करने वाली इल्लियों में कोई आधारभूत अंतर नहीं पाये जाते इसलिए इन दोनों प्रकार के इल्लियों को एक ही वर्ग में रखा गया है।
2. दूसरा तर्क इल्लियों द्वारा खाई जाने वाली पत्तियों को देते हैं, उनका कहना है कि रेशम की इल्लियां शहतूत की पत्ती जबकि कोसा फल की इल्लियों द्वारा अलग–अलग पत्तियों जैसे– साजा, कहवा आदि की पत्तियॉ खाई जाती हैं।
3. तीसरा तर्क वस्त्रों के चमक एवं लुभावनेपन के आधार पर करते हैं।

यहॉ रेशम एवं कोसा को एक मानने वालों का कहना है कि रेशम के कीड़े स्वतंत्र रूप से जंगल में फल निर्मित करते हैं जबकि कोसा के कीड़ों को मनुष्यों की देखरेख में भी पाला जाता है। अतः स्वाभाविक है कि वस्त्रों के चमक एवं किश्म में अंतर हो सकता है, लेकिन मात्र इसी कारण से इसे भिन्न नहीं माना जा सकता। अर्थात् रेशम के विभिन्न रूप एरी, मूंगा, टसर एवं मलबरी को रेशम का किश्म कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। सम्पूर्ण देश में इसे भिन्न–भिन्न नामों से जाना जाता है, जहां मध्यक्षेत्र में कोसा के नाम से जाना जाता हैं वहीं आसाम में 'मूंगा' तथा अन्य भागों में 'एरी' व 'मलबरी' के नाम से जाना जाता है।

कोसाफल से आशय– सामान्यतः कोसाफल एक फल जैसा लगता है परन्तु वास्तव में यह फल है ही नहीं, वरन् यह कोसाफल तितली के जीवन की एक अवस्था है। इस अवस्था में तितली शंखी के रूप में होती है। यह फल न होकर कोसा कृमि द्वारा निर्मित एक कवच मात्र हैं, जो धागों में गुथा होता है। ये धागे इतने पास व नजदीक होते हैं कि देखने से पता ही नहीं चलता कि फल नहीं ये धागे से गुथा हुआ आवरण मात्र है। कोसा में तितली की चार अवस्था पाई जाती है– अण्डा, इल्ली, शंखी और तितली। जब यह तितली अपने जीवन की पहली अवस्था में होती तब उसमें एक लार ग्रंथी पाई जाती है और यह लार इल्लियों को चारो ओर से समेटने लगती है और घेरे कड़ी हो जाती है और अंत में इसे पूर्ण रूप से ढग लेती है। जिसमें साधारण बोलचाल में कोसाफल कहते हैं।

रेशम कीट के प्रकार– रेशम कीट चार प्रकार के होते हैं। चारों प्रकार के कीट विभिन्न वृक्षों के पत्तियों का भोजन अपने इल्ली अवस्था में प्राप्त करते हैं। अण्डी के वृक्षों पर इल्लियों द्वारा निर्मित कोसाफलों से प्राप्त रेशों से बुने हुए वस्त्र को 'एरी' कहा जाता है। इसी प्रकार सोम, अर्जुन, शहतूत के वृक्षों पर पली इल्लियों द्वारा निर्मित कोसाफल से बुने वस्त्रों को 'मूंगा' आदि नामों से जाना जाता है।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

1. मलबरी – यह एक छोटे आकार का कोसाफल होता है, जिसके रेशे सफेद रंग का होता है।
2. टसर – यह फल सबसे बड़े आकार का होता है, इससे बने रेशे का रंग 'क्रीम कलर' का होता है।
3. मूंगा – यह कोसाफल मलबरी के समान छोटा होता है, इसके रेशे का रंग पीला होता है। इसका उत्पादन आसाम में अधिक होता है।
4. एरी – यह केवल अण्डी के पत्ते खाकर जीवित रहता है। इसका रंग सफेद होता है तथा आकार मलबरी के समान छोटा होता है।

कोसा उत्पादन की प्रक्रिया

कोसा उत्पादन हेतु सामान्यतः निम्न प्रक्रियाएं अपनायी जाती है–

1. वृक्षारोपण,
2. तितलियों के जोड़े प्राप्त करना,
3. परीक्षण,
4. कृमि पालन और
5. फल संग्रहण।

1. वृक्षारोपण– इस प्रक्रिया में साजा, कहवा, अर्जुना के उत्तम किस्म के बीज प्राप्त किए जाते हैं तथा इन्हें छोटी–छोटी क्यारियों में बो दिया जाता है जिसे उचित देखभाल में सिंचाई की जाती है जब बीज अंकुरित होने लगते है तथा 10–12 पत्ते आ जाते है तब इसे जंगल ले जाकर उचित संरक्षण में रोपित करने के पश्चात् कुछ समय के अंतराल कें कृमि पालन किया जाता है। वर्तमान में रेशम उद्योग विभाग द्वारा इन्हीं वृक्षों पर कृमिपालन किया जाता है।

2. तितलियों के जोड़े प्राप्त करना–

इसके लिए कोसाफल को माला के रूप में गूंथ दिया जाता है। गूंथे हुए कोसाफल अंगूर के गुच्छों की तरह दिखाई देते है। तत्त्पश्चात् जालीयुक्त कमरे में लकड़ी के स्टैण्ड में लटका दिया जाता है। जिसे चूहे, सांप मेढ़क आदि के पहुंच के बाहर रखा जाता है जिससे तितली का निर्माण में कोई बाधा उत्पन्न न हो। इन कोसाफलों को सुरक्षित रखने के बाद इनमें से तितली निकलने का इंतजार किया जाता है। थोड़े दिन पश्चात् इन फलों को काटकर इल्लियाँ बाहर निकलती हैं जो 3–4 घंटे में अपने आप उड़ने योग्य बन जाती हैं। 2–4 रोज में सभी फल कट जाते है तथा कमरे में तितलियाँ उड़ने लगती हैं। चूंकि कमरे जालीयुक्त होता है जिससे तितलियाँ ग्रेनेज से बाहर नहीं आ पातीं।

3. परीक्षण– प्रत्येक तितली का सूक्ष्मदर्शी यंत्र से जांचा जाता है। ताकि यह स्पष्ट हो कि तितलियाँ रोग मुक्त हैं। यदि ये तितलियाँ रोगमुक्त होंगी तो रोगमुक्त अण्डे जिससे रोगमुक्त कृमि पैदा होंगे जिससे अन्य कृमियों में संक्रमण का भय न रहे।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

4. कृमिपालन– लगभग 7 से 10 दिनों के बीच इन अंडों से इल्लियॉ निकलना प्रारंभ हो जाती है। इन इल्लियों को बाहर निकालकर वृक्षों पर फैला दिया जाता है। धीरे–धीरे ये इल्लियाँ पत्तियां खाने लगती है तथा 4–5 इंच वृद्धि प्राप्त करके अपनी सभी क्रियाएं बंद कर देती है। इस अवस्था को ''सूप्तावस्था'' (मोल्ट) कहा जाता है। इस समय इसमें लार–ग्रंथि का निर्माण होता है तथा तेजी से वृक्षों की पत्तियों का भक्षण करने लगती है। जब लार इल्लियों को पूर्ण ढक लेती है और कड़ी हो जाती है तब कोसाफल का निर्माण पूर्ण हो जाता है।

5. फल संग्रहण – टसर कोसाफल पेड़ की पतली टहनियों से फसे रहते हैं। मलबरी एवं एरी कोसाफल का पालन ट्रे में किया जाता है, जहाँ ये अपनी जीवन–चक्र पूर्ण करके कोसाफल का निर्माण करती है। तत्पश्चात् कर्मचारियों द्वारा संग्रहण कर लिया जाता है।

छत्तीसगढ़ में रेशम उद्योग राज्य के अत्यधिक लाभकारी उद्योग में से एक हो सकता है। इसके लिए बिलासपुर एवं बस्तर के लिए विशेष प्रोजेक्ट तैयार कर विकास योजनाओं पर कार्य चल रहा है। रेशम घटक द्वारा संचालित रोजगारमूलक योजनाएं निम्न है–

1. पलित डाबा टसर, ककून उत्पादन योजना–

इस योजना के अंतर्गत प्रदेश में उपलब्ध साजा, अर्जुन के टसर खाद्य पौधों पर टसर कीट पाले जाते हैं। इस योजना को अपनाने के लिए हितग्राहियों को किसी प्रकार के पूंजी निवेश की आवश्यकता नहीं होती बल्कि उचित वित्तीय अनुदान के साथ–साथ उचित प्रशिक्षण, मार्गदर्शन एवं संचालन में समस्याओं का उचित समाधान विशेषज्ञों द्वारा दी जाती है। इस योजना में प्रदेश के 17 जिलों में संचालित 117 टसर केन्द्रों एवं चिन्हित वन क्षेत्रों में क्रियान्वित की जा रही है। वर्तमान में 457.10 लाख नग कोसा उत्पादित किया जा चुका हैं एवं 18,912 हितग्राही इस योजना से लाभान्वित हुए है।

2. नैसर्गिक कोसा विकास योजना–

प्रदेश के दक्षिण बस्तर, दंतेवाड़ा, जगदलपुर, उत्तर बस्तर कांकेर, धमतरी, रायपुर, राजनांदगांव, कबीरधाम, जांजगीर–चाम्पा, कोरबा एवं सरगुजा जिले में प्राकृतिक रूप से उपलब्ध साल, सेन्हा, धौरा, बेर के वृक्षों पर नैसर्गिक रूप से कोसा के नाम से जाना जाता है। राज्य में नैसर्गिक कोसा के नाम से जाना जाता है। राज्य में नैसर्गिक कोसाफल का उत्पादन 586.74 लाख नग हो चुका है। इस योजना के अंतर्गत 33,716 हितग्राही लाभान्वित हुए हैं।

3. मलबरी रेशम विकास एवं विस्तार योजना – राज्य शासन द्वारा प्रदेश में गैरपरम्परागत मलबरी योजना के विकास हेतु नवीन मलबरी विकास कार्यक्रम वर्ष 2003–4 से क्रियान्वित की जा रही है। प्रदेश में 106 रेशम केन्द्र/रेशम बीज केन्द्र, 03 शासकीय मलबरी ग्रेनेज, 05 धागाकरण युनिट, 05 ट्विस्टिंग युनिट, 06 ककून बैंक, 04 यार्न बैंक संचालित है। वर्ष 2008–9 तक 5212 किग्रा. मलबरी ककून का उत्पादन किया गया जो 2001–02 में 2268.30 किग्रा. था।

<u>प्रदर्शन प्लॉट योजना</u> – प्रदर्शन प्लॉट योजना के अंतर्गत चयनित निजी कृषकों के स्वयं की भूमि जिसमें फेंसिंग एवं सिचाई सुविधा उपलब्ध है, यह योजना लागू की गयी है। शहतूती पौधारोपण योजना के प्रचार–प्रसार के तौर पर चयनित कृषकों के भूमि पर विभाग द्वारा तकनिकी

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

कर्मचारी के पर्यवेक्षण में हितग्राहियों को सामग्री एवं अन्य अनुदान के रूप से 15000/. रू. प्रति एकड़ दर राशि व्यय की जाती है।

संदर्भ ग्रंथ–

1. त्रिपाठी एवं त्रिपाठी– 'छत्तीसगढ़ वृहद संदर्भ' उपकार प्रकाशन, आगरा–2, 2000 संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्कारण संशोधनकर्ता– कुमार सुन्दरम्।
2. जन संपर्क कार्यालय, रायपुर (छ.ग.)
3. राज्य शासन द्वारा आयोजित राज्योत्सव मेला से प्राप्त जानकारियां।
4. छत्तीसगढ़ ग्राम उद्योग संचालनालय रेशम प्रभाग द्वारा प्रकाशित '' उत्प्रेरण विकास कार्यक्रम'' (कोसा कृमि पालन एकीकृत प्रौद्योगिकी) वर्ष 2006
5. '' रेशम भारती'' केन्द्रीय रेशम बोर्ड की राजभाषा समर्पित गृह पत्रिका, दिसम्बर 2004।
6. दैनिक समाचार–पत्र

□□□

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

"भारत में राजनैतिक विकास का ढ़ाँचा – मिश्रित अर्थव्यवस्था :– रायपुर उत्तर विधानसभा के महिला स्वरोजगारीयों के विशेष सँदर्भ में''

डा. अजय कुमार चन्द्राकर
संयोजक एवं विभागाध्यक्ष राजनीति
विज्ञान विभाग दुर्गा महाविद्यालय,रायपुर (छ.ग.)

"शोध पत्र का उदेश्य एवं शोध प्रविधि"

नेपोलियन का कहना है कि " बच्चे का भावी भाग्य सदा माता के कार्य पर निर्भर करता है। आज तक जो कुछ मैंने किया है, अथवा भविष्य में करने की आशा है, वह केवल मेरी माता की पवित्र शिक्षा का फल है। "[1] जिस समाज में स्त्री, पुरूष दोनों आत्मनिर्भर होते हुए एक दुसरे के सहयोगी होगें वह यथार्थ में लोकतांत्रिक समाज है। "[2]

पिछले कुछ वर्षो में स्त्री शिक्षा का प्रसार हुआ है। जिसमें वर्तमान में नौकरी के प्रति महिलाओं में आकर्षण बढ़ा है, और पुरूषो के साथ महिलाओं ने भी नौकरी प्राप्ति की प्रतिस्पर्धा आरंभ कर दी [3] " परन्तु प्रत्येक शिक्षित महिला को नौकरी मिलना आसान नहीं है।"[4] अतः कुछ महिलायें स्वयं का रोजगार करना उचित समझती हैं। यही कारण है कि ,मैं महिलाओं का स्वयं का व्यवसाय या स्वरोजगार के प्रति आकर्षण और स्वरोजगारी महिला के रूप में उनके बढ़ते हुए महत्व को ध्यान में रखकर इस विषय का चुनाव किया।

भारत के अजादी के 66 वर्ष बाद,राजनैतिक विकास का जो ढ़ाँचा है, उसमें मिश्रित अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत हम कह सकते हैं कि " स्वयं का जो रोजगार है, उसके प्रति जो आकर्षण है उसमें प्रमुख तत्व शिक्षा की ही रही है।"[5]

प्रस्तुत शोध पत्र निदर्शन पद्धति, तथा प्राथमिक समंको पर आधारित है। इस शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र रायपुर उत्तर विधानसभा है। 65 स्वरोजगारी महिलाओं से संबंधित समंको के संकलन के लिये प्रक्षेत्र सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग करते हुए प्रत्यक्ष व्यक्तिगत साक्षात्कार एंव प्रश्नावली तथा अनुसूचि पद्धति का प्रयोग किया गया है। आंकड़ो का विश्लेषण संख्या, एवं प्रतिशत के अधार पर किया गया है।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

" रायपुर उत्तर विधानसभा के पिछले पांच वर्षो में स्वरोजगारी महिलाओं की संख्या "
तालिका क्रं. 1

वर्ष	2008—2009	2009—2010	2010—2011	2011—2012	2012—2013
संख्या	441	318	288	726	1020

स्रोत :— जिला उद्योग केन्द्र रायपुर

" रायपुर उत्तर विधानसभा में चलाए जा रहे महिला स्वरोजगारीयों के नाम जिनका मैनें अध्ययन किया है "
तालिका क्रं. 2

क्रमांक	नाम	संख्या
1	ब्यूटी पार्लर	5
2	टमाटर, चटनी, अचार	5
3	पापड़ बनाना	5
4	सुपारी काटना व बिड़ी बनाना	5
5	जूते के फीते एवं फाइल धागा व पैकिंग धागा	5
6	नेल पॉलिश व कुमकुम	5
7	प्लास्टिक थैलियाँ	5
8	डेयरी व कुक्कुट	5
9	साड़ी फाल	5
10	पेटीकोट, होजियरी बनाना एवं स्वेटर बुनाई	5
11	टोकरी, झाड़ू व अन्य समान बनाना	5
12	कपड़ा व्यवसाय	5
13	मशीन से दोना, पत्तल बनाना	5
	योग	65

"स्वरोजगार के व्यवसाय चुनने का कारण,प्रेरणा एवं स्वरोगार करना ही उचित क्यों"
तालिका क्रं. 3

व्यवसाय चुनने का कारण	आर्थिक कठिनाइयाँ	खाली समय का सदुपयोग	परिवारिक कलह	व्यवसाय का शौक	योग
संख्या व प्रतिशत	27 (41.53)	28 (43.07)	4 (6.15)	6 (9.23)	65.100

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

प्रेरणा दाता	माता और पिता	माता	पिता	पति	मित्र	अन्य में परिस्थितिवश	योग
संख्या व प्रतिशत		7 (10.76) 65.100	10 (15.38)	6 (9.23)	20 (30.76)	15 (23.07)	7 (10.76)
कारण	अच्छी आय	मनचाहा अवकाश	प्रसिद्धि प्राप्ति हेतु	योग			
संख्या व प्रतिशत	39 (60)	17 (26.15)	9 (13.84)	65.100			

"स्वरोजगार के चुनाव के आधार तत्व "
तालिका क्रं. 4

चुनाव के आधार तत्व	शिक्षा	जाति	व्यवहार	आर्थिक स्थिति	परम्पराऐं	इच्छा	योग
संख्या प्रतिशत	32 (49.23)	0 (0)	9 (13.84)	14 (21.53)	7 (10.76)	3 (4.63)	65.100

" स्वरोजगार में महिला स्वरोजगारीयों की आयु रचना एवं धर्म "
तालिका क्रं. 5

आयु रचना	18–25 वर्ष	26–35 वर्ष	36–45 वर्ष	46–55 वर्ष	56 वर्ष से अधिक	योग
संख्या प्रतिशत	17 (26.1)	19 (29.2)	20 (30.9)	8 (12.3)	1 (1.53)	65.100

धर्म	हिन्दु	मुस्लिम	सिक्ख	ईसाई	योग
संख्या प्रतिशत	49 (75.39)	6 (9.24)	9 (13.84)	1 (1.53)	65.100

"महिला स्वरोजगारीयों की " शैक्षणिक एवं वैवाहिक स्थिति "
तालिका क्रं. 6

शिक्षा	अनपढ़	प्राथमिक स्तर	हायर सेकेण्डरी	स्नातक	स्नातकोत्तर	योग
संख्या प्रतिशत	2 (3.09)	9 (13.84)	17 (26.15)	19 (29.23)	18 (27.69)	65.100

वैवाहिक स्थिति	अविवाहित	विवाहित	विवाह विच्छेदक	विधवा	योग
संख्या प्रतिशत	19 (29.3)	39 (60.0)	2 (3.07)	5 (7.69)	65.100

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

"महिला स्वरोजगारीयों का, जाति समूह एवं जाति भेद "
तालिका क्रं. 7

क्रमांक	जाति समूह	संख्या	प्रतिशत
1	गुजराती	11	16.9
2	मराठी	08	12.31
3	सिंधी	05	7.69
4	बंगाली	05	7.69
5	पंजाबी	09	13.84
6	बनिया	03	4.7
7	ब्राम्हण	05	7.69
8	उड़िया	01	1.53
9	कायस्थ	02	3.07
10	कोष्टा	01	1.53
11	मारवाड़ी	07	10.76
12	मुस्लिम	06	9.23
13	गोंड़ (अनु.जन.जाति)	01	1.53
14	ईसाई	01	1.53
	योग	65	100

" जाति भेद "

जाति प्रभाव	निम्न जाति के साथ कार्य करना उचित है।	निम्न जाति के साथ कार्य करना अनुचित है।	योग
संख्या प्रतिशत	54 (83.08)	11 (16.92)	65.100

" महिला स्वरोजगार और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, बच्चों का सहयोग तथा रहन – सहन का स्तर "
तालिका क्रं. 8

पारिवारिक जिम्मेदारियाँ	परिवारिक जिम्मेदारियाँ निभाने में सक्षम	परिवारिक जिम्मेदारियाँ निभाने में सक्षम नहीं	योग
संख्या प्रतिशत	58 (89.23)	7 (10.86)	65.100

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

बच्चों का सहयोग	बच्चों का सहयोग मिलता है।	बच्चों का सहयोग नहीं मिलता है।	बच्चे नहीं है।	योग
संख्या प्रतिशत	32 (49.24)	10 (15.38)	23 (30.38)	65.100
रहन–सहन का स्तर	रहन–सहन का स्तर पहले जैसा है।	बढ़ा है	स्तर घटा है	योग
संख्या प्रतिशत	29 (44.61)	34 (52.30)	2 (3.09)	65.100

" महिला स्वरोजगारीयों की, मासिक आय,बचत एवं विनियोग "
तालिका क्रं. 9

मासिक आय	600–1000 रु.	1000–2000 रु.	2000–3000 रु.	3000– 4000 रु.	4000 से अधिक रु.	योग
संख्या प्रतिशत	11 (17)	33 (50.7)	8 (12.3)	5 (7.7)	8 (12.3)	65.100
बचत	कोई बचत नहीं	100 रु. से कम	100 से 200 रु.	200 रु. से 400 रु.	600 से अधिक	योग
संख्या प्रतिशत	16 (24.6)	7 (10.8)	14 (21.5)	12 (18.5)	16 (24.6)	65.100
विनियोग	रोजगार में	बैंक	ऋण देने में	कहीं भी नहीं	अन्य साधन	योग
संख्या प्रतिशत	27 (41.5)	21 (32.4)	1 (1.5)	12 (18.4)	4 (6.2)	65.100

" महिला स्वरोजगार में आने वाली कठिनाईयाँ "
तालिका क्रं. 10

क्रमांक	कठिनाईयाँ	महिलायें 65 में से	प्रतिशत 100 में से)
1	पूंजी का अभाव	47	72.30
2	कच्चे माल की कमी	15	23.07
3	प्रशिक्षण का अभाव	22	33.84
4	योग्य कर्मचारियों का अभाव	15	23.07
5	ईमानदार कर्मचारियों का अभाव	12	18.46
6	बिक्री की समस्या	25	38.46
7	आपसी सहयोग की कमी	26	40.00
8	स्थान की समस्या	32	49.00
9	स्रकार के सहयोग की कमी	14	21.53
10	जन– सहयोग	22	33.84

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

" शोध पत्र का विश्लेषण "

स्वतन्त्रता के 66 वर्ष पश्चात , भारतीय राजनीतिक विकास का ढ़ाँचा , मिश्रित अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत एक सूक्ष्म अध्ययन 65 महिला स्वरोजगारीयों का किया गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र के विश्लेषण एवं तुलनात्मक अवलोकन से स्पष्ट होता है कि तालिका क्रमांक एक में पिछले पांच वर्षो में स्वरोजगारी महिलाओं की संख्या स्पष्ट की गई है। सन् 2008—09 में यह 441 थी लेकिन 2009—10 व 2010—11 में इसमें कमी आती गयी लेकिन 2011—12 व 2012—13 में इसमें तेजी से वृद्धि होती गयी।

तालिका क्रमांक 2 में रायपुर उत्तर विधानसभा में चलाए जा रहे स्वरोजगारी महिलाओं के रोजगार का नाम है जिनका मैं अध्ययन किया हूँ।

तालिका क्रमांक 3 से स्पष्ट होता है कि स्वरोजगार चुनने का कारण, खाली समय का सदुपयोग के कारण 43.07ः आया। 41.53ः आर्थिक कठिनाईयाँ तथा 9.23ः व्यवसाय करने का शौक होने से स्वरोजगारी क्षेत्र में आये। शेष 6.15ः पारिवारिक कलह के कारण स्वरोजगार करने को प्रेरित हुईं।

इसी तालिका से ज्ञात होता है कि स्वरोजगारी महिला वर्ग स्वरोजगार करने के प्रोत्साहन कर्ता के रूप में पति की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रतिशत है 30.76ः। मित्रों के द्वारा प्रेरणा 23.07ः। माता और पिता के द्वारा 10.76ः केवल पिता के द्वारा 9.23ः और केवल माता के द्वारा 15.38ः तथा 10. 76ः महिलायें प्रिरिस्थितिवश जैसे विधवा होने या विवाह — विच्छेद हो जाने के कारण स्वयं ही स्वरोजगार करने के लिये उत्प्रेरित हुई है।

इसी तालिका से ज्ञात होता है कि स्वरोजगारी महिलाओं में से 60ः महिलायें अच्छी आय होने के कारण इस क्षेत्र को चुना है। 26.15ः महिलायें मनचाहा अवकाश प्राप्ति को और 13.84ः महिलाओं ने प्रसिद्धि प्राप्ति हेतु इस क्षेत्र को चुनाव करना उचित बतायें है।

तालिका क्रमांक 4 में स्वरोजगार के चुनाव के आधार तत्वों में 49.23ः महिलायें , शिक्षा को 0ः जाति , को 13.84ः व्यवहार को , 12.53ः आर्थिक स्थिति को, 10.76ः परम्पराओं को , व शेष 4.63ः इच्छा को कारण मानती है।

तालिका क्रमांक 5 में स्पष्ट होता है कि स्वरोजगारी महिलाओं में अधिकांश 30.9ः अर्थात 36—45 वर्ष के बीच की आयु वाली है। तथा 56 वर्ष से ज्यादा आयु की सबसे कम अर्थात 1.53ः या 1 महिला है। 18—25 वर्ष की महिलाओं का प्रतिशत 26.1ः व 26—35 वर्ष की ऐसी महिलायें 29.2ः है स्वरोजगारी है ।

इसी तालिका में स्वरोजगारी महिलाओं का वर्गीकरण धर्म की दृष्टि से किया गया , तो पता चला की इसमें हिन्दू धर्म की सर्वाधिक 75.39ः महिलायें हैं। और मुस्लिम धर्म की 9.24ः, सिक्ख धर्म की 13.84ः, तथा ईसाई धर्म की 1.53ः महिलायें है ।

तालिका क्रमांक 6 में वर्तमान में महिला स्वरोजगारीयों के शैक्षणिक स्तर का विश्लेषण किया गया है, तो पता चला कि अधिकांश 29.23ः महिलायें स्नातक है तथा 27.69ः महिलायें स्नातकोत्तर है। 26.15ः हायर सेकेण्ड़री तथा 13.84ः प्राथमिक स्तर तक शिक्षित है शेष 3.09ः महिलायें अनपढ़ हैं , परन्तु वे स्वरोजगार संबंधी हिसाब रखने में संक्षम है।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

इसी तालिका में महिला स्वरोजगारीयों में सर्वाधिक विवाहित महिलायें 60ःहै तथा अविवाहित महिलायें 29.3ः विधवा महिलायें 7.69ः एवं विवाह विच्छेद 3.07ः महिलायें हैं।

तालिका क्रमांक 7 में महिला स्वरोजगारीयों की जाति समूह का अध्ययन करने पर सर्वाधिक 16.9ः महिलायें गुजराती हैं। तथा कोष्टा 1.53ः, गोंड़ 1.53ः ईसाई 1.53ः, उड़िया 1.53ः हैं। मराठी ,बंगाली,पंजाबी, ब्राम्हण, मारवाड़ी और मुस्लिम महिलायें क्रमशः 12.31ःए 7.69ः, 7.69ः, 13.84ः, 7. 69ः, 10.76ः और 9.23ः हैं।

इसी तालिका के विश्लेषण से पता चलता है कि 83.08ः महिलायें जाति भेद को नही मानती है पर 16.92ः महिलाओं ने कहा की निम्न जाति के साथ कार्य करना अनुचित है।

तालिका क्रमांक 8 से स्पष्ट होता है कि 100 में 89.23ः महिलायें अपने स्वरोजगार के साथ साथ पारिवारिक जिम्मेदारीयाँ निभाने में सक्षम है परन्तु 10.86ः महिलायें अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियाँ निभाने में अपने आप को असमर्थ मानती है।

तालिका क्रमांक 8 से स्प्ष्ट होता है कि 49.24ः महिलाओं को रोजगार में बच्चों का सहयोग मिलता है 15.38ः महिलाओं को सहयोग बच्चों से नही मिलता, ये ऐसी महिलायें हैं जिनके बच्चें या तो बहुत छोटे है , या फिर आत्मनिर्भर हो चुके हैं। 30.38ः महिलाओं के बच्चें नही है , क्योकि वे या तो अविवाहित है या अभी बच्चें नही हुयें हैं।

इसी तालिका से ज्ञात होता है कि 52.30ः महिलाओं का रहन – सहन का स्तर बड़ा है तथा 44.61ः महिलाओं का कथन है कि स्तर में कोई फर्क नहीं आता हैं। केवल 3.09ः महिलायें ऐसी हैं जिनका रहन – सहन का स्तर गिर गया हैं। तथा कारण जानने पर पता चला कि पति के मृत्यु के बाद उन्ही (महिला) पर आर्थिक बोझ बढ़ने के कारण।

तालिका क्रमांक 9 से स्पष्ट होता हैं कि विभिन्न व्यवसाय में कार्यरत महिला स्वरोजगारियों में से 50.7ः महिलाओं की मासिक आय 1000 से 2000 रू. तक हैं। तथा 17ः महिलायें ऐसी है जो 1000रू. से कम मासिक आय प्राप्त करती हैं। 12.3ः महिलायें 4000 रू. से ज्यादा मासिक आय प्राप्त करती हैं, जो महिलायें 1000 रू. तक आय अर्जित करती है उनका व्यवसाय चाय का ठेला, पत्तल, पुड़ा, अगरबत्ती आदि बनाना हैं, पर 4000 रू. से ज्यादा आय अर्जित करने वाली महिलायें रेडीमेंड़ वस्त्र, साड़ियों का थोक व्यवसाय , ब्यूटी पार्लर आदि में संलग्न हैं।

तालिका क्रमांक 9 से ही स्प्ष्ट होता है कि 24.6ः महिलायें ऐसी है जो कुछ बचत नहीं करतीं तथा 10.8ः महिलायें 100 रू. तक बचत करती हैं 21.5ः तथा 18.5ः महिलायें क्रमशः 100–200 रू. और 200–400 रू. तक मासिक बचत करती हैं । 24.6ः महिलायें ऐसी हैं जो 600 रू. से ज्यादा रूपये मासिक बचत के रूप में बचा लेती हैं।

तालिका क्रमांक 9 से ही ज्ञात होता हैं कि सर्वाधिक 41.5ः महिलायें बचत को व्यवसाय में ही लगा देती हैं , तथा 32.4ः महिलायें बैंक में विनियोग करती हैं। केवल 1.5ः महिला ही ऐसी हैं जो ऋण देने का कार्य करती हैं। शेष 6.2ः महिलायें बचत का उपयोग धार्मिक कार्यों , बच्चों को अच्छी परवरिस आदि में खर्च कर देती है , परन्तु 18.4ः महिलायें बचत कहीं भी विनियोजित नहीं करती ।

तालिका क्रमांक 10 के निष्कर्ष निकालने पर पता चलता है कि 72.3ः महिलाओं को पूंजी के अभाव के मुख्य समस्या सामने आयी तथा 100ः में से 49.2ः महिलाओं के सामने स्थान की समस्या तथा 40ः महिलाओं को सहयोग का अभाव रहा हैं। विश्लेषण से पता चलता है कि 20ः महिलायें ऐसी

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

हैं जिन्हे इन सभी समस्याओं का सामना करना पड़ा हैं ।

" महिला स्वरोजगारीयों की प्रकृतिजन्य समस्यायें "

स्वामी विवेकानन्द " नारी के सम्मान से सभ्यता का परिचय मिलता हैं "[6]

1. महिला स्वरोजगारीयों के दोहरे दायित्व की समस्या।
2. महिला स्वरोजगारीयों के चरित्र पर संदेह करना।
3. पारिवारिक व्यवस्था छिन्न–भिन्न हो जाना।
4. मानसिक तनाव।
5. शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव।
6. ऋण उपलब्धता की कमी।
7. प्रशिक्षण का अभाव।
8. प्रतिस्पर्धा की कमी।
9. बाजार की समस्या।
10. सरकार से सहयोग की कमी।
11. महिला स्वरोगारीयों में आत्मविश्वास की कमी।

निष्कर्ष :– " महिला स्वरोजगार की दुर्बलताओं के निवारण हेतु सुझाव "

जयशंकर प्रसाद :– " नारी की करूणा अर्न्तजगत का उच्चतम विकास है, जिसके बल पर समस्त सदाचार ठहरे हुऐ है "[7]

1. राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय सम्मेलन का आयोजन।
2. नारी के दोहरे दायित्व की कठिनाइयाँ व उपलब्धि।
3. रोजगार से उनके सामाजिक सांस्कृतिक विकास में कोई बाधा नही होनी चाहिए।
4. नागरिक अधिकार व स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।
5. समाज का दृष्टिकोण सकारात्मक हो।
6. रोजगार में उन्हें सम्मान की भावना से देखी जानी चाहिए।
7. जनमानस में भारतीय नारी का बिम्ब प्रगतिशील के रूप में होना चाहिए।
8. स्वरोजगारी महिलाओं को प्रोत्साहन मिलना चाहिए।
9. रायपुर उत्तर विधानसभा में स्वरोजगारी महिलाओं द्वारा चलाये जा सकने वाले सम्भावित रोजगारो का प्रचार प्रसार हो।
10. अन्य रोजगार की तलास रत महिलाओं को स्वरोजगार के प्रति व पर्याप्त जागरूकता उत्पन्न करनी चाहिए।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

11. महिला स्वरोजगारियों में आत्मविश्वास वृद्धि करने का प्रयास किया जाना चाहियें।
12. आर्थिक समस्याओं का निराकरण किया जाये।

स्वामी विवेकानन्द " समन्वय के मार्ग से भरपुर प्रगति व उन्नति करने का सबको एक जैसा अधिकार है , किसी जन को पिछे छोड़कर राष्ट्र आगे नहीं बढ़ सकता। अतः राष्ट्र के प्रत्येक अंग की सुध हमें लेनी होगी । राष्ट्र के शरीर के एक भाग में यदि अंधकार और निर्बलता का निवास हैं, तो समग्र राष्ट्र का स्वास्थ्य अपने अंश में असमर्थ रहेगा।"

संदर्भ ग्रंथ एवं स्त्रोत

1.	नेपोलियन बोनापार्ट	डा. भवानी सिंह
2.	स्त्री पुरूष सहजीवन	दादा धर्माधिकारी
3.	स्त्री पुरूष सहजीवन	दादा धर्माधिकारी
4.	चुनौतियों की चक्रव्यूह में फंसी आधुनिक युवा महिला	विश्वनाथ
5.	भारतीय समाज और संस्कृति	रविन्द्र नाथ मुखर्जी
6.	भारतीय नारी	स्वामी विवेकानन्द
7.	छोटा जादूगर	जयशंकर प्रसाद
8.	भारतीय नारी	स्वामी विवेकानन्द

इस शोध प्रलेख के लिए निम्न पद्धतियों का प्रयोग किया गया।

1. क्षेत्र का सैम्पलिंग 65 महिला स्वरोजगारीयों का (रायपुर उत्तर विधानसभा से)।
2. प्रश्नावली ।
3. प्रश्नावली के आधार पर साक्षात्कार ।
4. क्षेत्र के सर्वेक्षण ।
5. जिला उद्योग केन्द्र रायपुर तालिका क्रमांक 1 ।

□□□

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

छत्तीसगढ़ में कृषि विकास

डॉ.पूर्णिमा शुक्ला
विभगाध्यक्ष भूगोल दुर्गा महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)
प्राध्यापक छत्तीसगढ़ प्रशासन अकादमी रायपुर (छ.ग.)

छत्तीसगढ़ प्राकृतिक दृष्टिकोण से सम्पन्न राज्य है। जहां उर्वरा भूमि, पर्याप्त वर्षा, अनुकूल जलवायु एवं पर्याप्त संसाधन उपलब्ध है। छत्तीसगढ़ भारत में हर्बल स्टेट कहलाता है। क्योंकि आयुवेदिक पौधों की सर्वाधिक प्रजातीय पाई जाती है। वही छत्तीसगढ़ धान का कटोरा के नाम से भी विख्यात है। क्योंकि छत्तीसगढ़ की बनावट कटोरे जैसी है, जहां प्रदेश की मुख्य फसल धान है। प्रदेश में विश्व के अधिकांश खनिज पाये जाते है अतः प्रदेश को खनिजों का संग्राहालय कहा जाना अतिशयोक्ति नही होगी। छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था में 63 प्रतिशत कार्यशील जनसंख्या कृषि पर आधारित है। यहां कृ ा पर 85 प्रतिशत जनसंख्या जीवन यापन कर रहे है।

छत्तीसगढ़ $17^{0}46'$ से $24^{0}05'$ उत्तरी अक्षांश से $80^{0}15'$ से $84^{0}25'$ पूर्वी देशांतर के मध्य 135,194 वर्ग कि.मी. क्षेत्र पर फैला हुआ है। वर्ष 2001 के अनुसार यहां 20833803 व्यक्ति निवास करते है। जो देश की जनसंख्या का 2.02 प्रतिशत व्यक्ति निवास करती है। राज्य के मध्य से 23^{0} $30'$ उत्तरी अक्षांश (कर्क रेखा) तथा 82^{0} $30'$ पूर्वी देशांतर (भारतीय मानक समय) रेखा होकर गुजरती है। यह क्षेत्र भारत के आजादी के पूर्व सेन्ट्रल प्रोविन्स एवं बरार का हिस्सा था। 1956 में राज्य पूनर्गठन आयोग का गठन होने के बाद म.प्र. का हिस्सा तथा भारत के 84 वॉ संविधान संशोधन के द्वारा 1 नवम्बर 2000 में भारत संघ का 26 वां राज्य बनाया गया है।

भारत में चावल का उत्पादन 2077 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर एवं गेहुं का उत्पादन 2713 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर है। जबकि राज्य में चावल का उत्पादन 1455 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर तथा गेहूं का उत्पादन 1024 किलो ग्राम प्रति हेक्टयर है। अतः राज्य की उन्नत तकनीक व कृषि विकास का मूल्यांकन करना आवश्यक है। छत्तीसगढ़ के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में 47 प्रतिशत कृषि क्षेत्र के अंतर्गत जिसमें राज्य को 85 प्रतिशत जनसंख्या निर्भर है। जलवायु एवं कृषि को ध्यान में रखते हुए छत्तीसगढ़ प्रदेश को तीन कृषि जलवायु प्रदेश में में बांटा गया है – 1. उत्तरी कृषि जलवायु क्षेत्र जिसमें प्रदेश की 21 प्रतिशत कृषि क्षेत्र सम्मिलित है। जहां मुख्य रुप से चांवल की खेती की जाती है, प्रदेश के तीन जिले कोरिया जशपुर एवं सरगुजा आते है। द्वितीय मध्य क्षेत्र यहां राज्य की 50 प्रतिशत कृषि क्षेत्र सम्मिलित है। जिसमें प्रमुख जिले बिलासपुर, कोरबा, रायगढ़, दूर्ग, रायपुर, महासमुंद, धमतरी, जांजगीर – चंपा, कांकेर तथा कोरबा क्षेत्र आते है। यहां प्रमुख फसल चांवल है। तृतीय दक्षिण कृषि जलवायु क्षेत्र वहां राज्य का 23 प्रतिशत कृषि क्षेत्र सम्मिलित है इसके अन्तर्गत बस्तर ,दंतेवाड़ा,बीजापुर एवं नारायणपुर जिले आते है, यहां प्रमुख फसल चावल है।

प्रदेश में कुल कृषि भूमि के 75 प्रतिशत भाग पर खाघान फसल तथा खाद्यान फसल के 82 प्रतिशत भाग पर चांवल का उत्पादन होता है। खरीफ फसल के अंतर्गत 47 लाख 81 हजार हेक्टे. क्षेत्र है जिसमें अनाज में चांवल,कोदो,कुटकी मकई एवं ज्वार,दलहन में अरहर,उड़द और कुल्थी तथा तिलहन में मुंगफली तिल एवं सोयाबीन उत्पन्न किया जाता है। जबकि रबी फसल के अंतर्गत 16 लाख 14 हजार हेक्टेयर क्षेत्र सम्मिलित है जिसमें खाद्यान में गेंहू, दलहन में चना,तिवरा और मटर तथा तिलहन में सरसों एवं अलसी का उत्पादन किया जाता है। राज्य के गठन के समय और वर्तमान में कृषि परिदृश्य को देखे तो खाद्यान उत्पादन

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

में वर्ष 2000 – 01 में 39 लाख 1 हजार मिट्रिक टन जबकि वर्तमान (2010–11) में 78 लाख 48 हजार मिट्रिक टन उत्पादन हुआ। जो लगभग 91 प्रतिशत वृद्विको दर्शाता है। उर्वरक उपयोग में खरीफ एवं रबी फसल में वर्ष 2000–01 में 36 किग्रा प्रति हे. जबकि वर्तमान 86 किग्रा प्रति हे. उपयोग हुआ जो 139 प्रतिशत वृद्विको दर्शाता है। इसी प्रकार विद्युतीयकृत सिंचाई पंप में कृषि यांत्रिकीकरण में कमशः 933 प्रतिशत एवं 150 प्रतिशत वृद्धि हूई है। जो यह स्प ट करता है कि कृषि के क्षेत्र में विकास की गति तीव्र है।

आज कृषि के व्यवसायीकरण,वैज्ञानिक और तकनीकी विकास तथा तीव्रगति से बढ़ती जनसंख्या के भरण–पोषण के कारण कृषि के स्वरुप में वृहद परिवर्तन आया है। कृषि को व्यवसायिक रुप देने के लिए पश्चिमी देशों में अभिनव प्रयोग किये जा रहे है। आज छत्तीसगढ़ भी कृषि के स्वरुप में बदलाव लाया है जिससे उत्पादन में वृद्धि हूई है। उन्नत बीज,रासायनिक खाद,समुचित सिंचाई,भूमि संरक्षण एवं संवर्धन आदि तकनीक का प्रयोग कर क्षेत्र के कृषि उत्पादन में आशातीत वृद्धि लायी है।

उच्च गुणवत्ता के बीच – उन्नत बीजों के बिना कृषि विकास असंभव है। भारत में विभिन्न कृषि विकास विघालयों कृषि विभाग तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा विभिन्न फसलों के उन्नत बीजों का विकास किया है। प्रत्येक विकास खण्ड में बीज फर्म तथा 1963 में राष्ट्रीय बीज निगम और भारतीय स्टेट फर्म निगम स्थापित किये गये इनके द्वारा उन्नतशील बीजों का उत्पादन एवं वितरण तथा राष्ट्रीय निगम द्वारा बीजों का प्रमाणिकरण किया जाता है। फसलों के उत्पादन में यह एक महत्वपूर्ण आदान है। छत्तीसगढ़ बीज उत्पादन की दिशा में वर्ष 2000–01 में 27803 क्विंटल वर्ष 2003–04 में 44457 क्वि. उत्पादन किया तथा वर्तमान में 433300 क्वि. उत्पदन हुआ।

राज्य प्रमाणित बीज वितरण 2000–01, में 67077 क्वि. वर्ष 2003–04 में 72955 क्वि. तथा वर्तमान में 447771 क्वि. बीजों का वितरण हुआ। उपरोक्त आंकड़ों से यह स्पष्ट हो रहा है कि राज्य कृषि विकास हेतु सजग है।

सिंचाई के स्त्रोत :– कृषि हेतु जल उपलब्धता आवश्यक है यहा की जलवायु की विशेषता के कारण सिंचाई–साधनों की आवश्कता पड़ती है। सिचाई के साधनों के अभाव में इस प्रदेश के कृषि क्षेत्र में अपेक्षित विकास नहीं हो सका है।

प्रदेश मेंश्शासन के द्वारा लधु सीमांत कृषकों को सिंचाई–कूप एवं पंप स्थापना हेतु शाकम्भरी योजना प्रारंभ की गई है साथ ही पूर्व से संचालित लधु सिंचाई(नलकूप) योजना में देय अनुदान राशि में वृद्धि की गई है। सिंचाई हेतु स्प्रिंकलर एवं ड्रीप सिस्टम की स्थापना हेतु लधु सीमांत कृषकों को 90ः तथा अन्य कृषकों को 50ः अनुदान दिया जा रहा है। वर्तमान में 72145 हे.क्षेत्र में स्क्रिंपलर प्रतिस्थापित किया जा चुका है राज्य में वर्तमान समय में लधु सिंचाई योजना में 4702 नलकूप है। किसान समृद्धि योजना में 2619 नलकुप, 1000 नलकुप सेलो नलकुप के अंतर्गत है जबकि शाकम्भरी पंप योजना वर्ष 2009–10 में संचालित हुई जिसकी संख्या 13900 तथा कूप की संख्या 739 है। सूक्ष्म सिंचाई योजना के अंतर्गत 13359 हे. क्षेत्र को सम्मिलित किया गया है। सिंचाई के साधनों के पूर्ण विकास के बिना कृषि का विकास असंभव है।

भू–जल संरक्षण – राज्य पोषित लधुत्तम सिंचाई योजना के अंतर्गत 40 हे. तक सिंचाई क्षमता वाले लधु सिंचाई तालाब का निर्माण कृषि विभाग के भूमि संरक्षण विभाग द्वारा किया जाता है। निर्मित तालाबों से सिंचाई की व्यवस्था कृषि विकास से प्रोत्साहन मिलता है। इस योजना में वर्ष 2005–06 से 734 तालाब तथा वर्तमान में 1483 तालाबों को लिया गया है।

भू–जल संवर्धन – वर्ष 2007–08 में भू जल संवर्धन योजना प्रारंभ की गई इस योजना के अंतर्गत वर्तमान में 3446 कूप एवं नलकूप के पूर्नभरण हेतु संरचनाओं का निर्माण किया गया है।

कृषि यांत्रिकीकरण को प्रोत्साहन – उन्नत कृषि यंत्रों पर ट।ग समाप्त किया गया। विगत दस वर्षो में कुल 11117 शकि़ चलित एवं 1832269 हस्त चलित कृषि यंत्रों के कर अनुदान पर वितरण किया गया टेक्टर पर

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

45000 रु. पावर ट्रिलर पर अधिकतम 70000 रू. तथा अन्य कृषि यंत्रों तथा स्व चलित रीपर,पैडी ट्रांसप्लांटर पर कीमत का 50 प्रतिशत अधिकतम 80,000रु. अनुदान तथा हस्त/बैल चलित कृषि यंत्रों पर कीमत का 50 प्रतिशत अनुदान दिया जा रहा है।

राज्य में वर्ष 2000–01 में 150 हेक्टयर पर पावर ट्रिलर 54 एवं हस्त /बैल चलित पर 30358 व्यक्ति को अनुदान दिया गया है। यह संख्या वर्तमान में क्रमशः 252,851 तथा 15045 व्यक्ति है। जिस पर अनुदान दिया गया है। हस्त /बैल चलित उपकरण में 30358 से घटकर 15045 हो गया जो यह स्पष्ट हो रहा है कि राज्य में कृषि में नवप्रर्तन हुआ है।

उपरोक्त कारकों के उपयोग से राज्य के फसल उत्पादन में निरंतर वृद्धि हूई है। राज्य में घान फसल के उत्पादन में 45 प्रतिशत कुल अनाज में 49 प्रतिशत दलहन में 159 प्रतिशत एवं तिलहन फसलों के उत्पादन में 172 प्रतिशत की वृद्धि उल्लेखनीय है। 2000–01 में धान का क्षेत्र 3846.66 हजार हे. था जहां उत्पादन 3594.13 हजार टन हुआ, इसी वर्ष अनाज, दलहन, तिलहन का क्षेत्रफल क्रमशः 80.62, 603.07 एवं 341.08 हजार हेक्टेयर था जहां उत्पादन क्रमशः 3901.24, 317.51 एवं 155.96 हजार टन। वर्तमान में इन्हीं फसलों के क्षेत्र में क्रमशः 3610.59, 4052.36, 1268.82, 618.33 हजार हेक्टेयर रहा जबकि उत्पादन में क्रमशः 5215.52, 5797.29, 821.56 एवं 423.73 हजार टन रहा है। उपरोक्त आंकड़ों से स्पष्ट है। प्रदेश में कृषि के क्षेत्र में विकास हुआ है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि राज्य में कृषि के क्षेत्र में विकास हुआ है। भविष्य में यह विकास पारिस्थैतिक संतुलन के साथ हो। आज संपूर्ण विश्व में हरित क्रांति का दुष्प्रभाव भूमि और मानव दोनो पर दृष्टिगत है जो निशचित रुप से एक वृहद समस्या है, इस समस्या से बचने के लिए पारिस्थितिकी को सिद्धान्तः मानकर व्यवहार में ढाले जिससे कृषि विकास के साथ जैव जगत संरक्षण संवर्धन और जैव विविधता संरक्षण के क्षेत्र में भी हमारा ध्यान आकृष्ट हो।

संदर्भ ग्रंथ :

तिवारी,विजय कुमार : भारत का भूगोल, हिमालय पब्लिकेशन
छत्तीसगढ़ का भूगोल, हिमालय पब्लिकेशल
शर्मा, बी.एल. : आर्थिक समीक्षा वर्ष 2009–10
Patil, R.G.and Jha,D.(1978) % Output Groth and Techno-Logical change in Maharashtra Agriculture,A distric with analysis Indian Genral of Agriculture Economics,Vol 33 No.PP.31- 39.
Eldowes,M(1969)% Crop Technology London: Hutchinson Educational

□□□

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

Marxism : Utopian Prophecy and Emperical Sociology

Dr. Rajesh Shukla
Head, Deptt.of Sociology,Durga College, Raipur (C.G.)

Today Marxist sociology is facing world wide crisis and sociologists like other social scientists are finding Marxist ideas and theories in deep trouble. This is apart from the decline and fall of communist states which claim to be based on Marxist Principles. There is clear contradiction between the two roles of Marx as the revolutionary Prophet and Marx as an emperical Sociologist and economist often the scientifically trained sociologists and the economists cannot accept the revolutionary dreams of the prophet Marx, no doubt,. Marx was a profount scholar of the 19th century who devoted his life to the study of working of capitalist system in Europe and particularly the miserable social and economic conditions of the factory workers of England. Sitting ipn the British Museaum library, he was poring over shocking reports about the miserable conditions of the workers. He and his life-long colloborator Engels devoted their whole life to study the problems of marriage, family economy, religion and politics of contemporary Europe based on emperial studies, But the prophet was not merely satisfied with the scholarly studies and wanted to change the face of humanity with his utopian vision and revolutionary ideology. His ideas swept across Europe and other parts of the world like wildfire and by early 20th century he had become the global messipah of the workers, poors and the downtroddens. Nevertheless, there is a growing contradiction between Marx's values and facts, between his communist Utopia and emperial realities of the human society.

(i) Perfectibility of Man and society :

Marx has been a freal scholar but it has been a gross mistake on his part to say that human societes have been miserable & full of oppression, in equality and oppression and that only communist society would be the one which could create just, human and perfect society. He thinks that all the contradictions between rich and the poor, bourgeois and the proletariat, ruler and the ruled, manual workers and the professional workers would end in hips future communist Utopia. In fact, the state itself shall wither

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

away and it would become a kind of paradise on earth, a Garden of Eden. In such a state of human society there would be no need of police. armed forces, bureaucracy of judiciary because there would be no criminals and anti-social behaviour, for hard-headed sociologists, this is pure fantasy.

(ii) Class Society :

The historical nature of social and the class conflict at the very center of theories of Marx and Engles, but they have been often unscientific, biased and careless in their study of the class system from the beginning of humanity to the capitalist stage. They also have been too ambition and dogmatic about the analysis of social classes beginning with slavery to feudalism and capitalism, it taises more questions than solving them. Why should there be merely two opposing social classes at every of human evolution? There could be more than two or any number of them sometimes co-operating and sometimes opposing each other. More receently, why should there be merely two opposing classes for bourgeois and the proletariat in the capiptalist stage? Emperical evidence shows that there were any number of them even in the 19th century Europe and Marx & Engles know it. In their Utopian scheme of communism, the bourgeois would disappear without a trace and merely proletariat would remain and thus it would become a unicalss of classes society. Unfortunately, social stratification can not be abolished by such an Utopian scheme of Marx. The relevent questions has any communist state (Soviet Union Poland, East Germany, Cuba, communist China etc.) been able to abolish the class system?

(iii) Alienation of Man :

Alienation of workers in the factory and alienation of man the capitalist society is a major theme in the theory of Marx. Workeres are exploited and estranged from their work and their products which they create and forced to lead sub-human and unfulfilled lives without creativity. Joy and harmony. we should be grateful to Marx to have provided a brillinat analysis of modern industrial society. But Marx is quite wrong in thinking that once all the industries and business comes under state control, the condition of alienation among workers and the masses goes away and communist Utopia could be ushered. This certanily has not happened in the state controlled industries in Soviet Union, china or even in democratic India. Often in the communist states, workers have less rights than in the capitalist countries. In Marx's Utopia there is no bureaucracy and specilization of work in industry. agriculture. budiness government. science and

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

technology. Man would be free as a birds could be a scientist, invetor, poet, philosher and the artist. But is it ever possible in this world?

(iv) Marx in his own words :

"The history of nither to existing society has been the history of class struggle. Freeman and slave, patrician and Journeyman, in a word, oppress and the oppressed, stood inconstant opposition to each other, carried on an uninterupted, now hideen,. now open fight a fight that each time ended in a revolutionary reconstitution of society at large, or, in the common ruin of the contendding classes."

"The bourgeois historically has played a most revolutionary part."

"The proletariat have nothing to lose but their chains. they have a world to win. Workers of the world unity."

"The Philosophers till now have explained the world, the point is to change it."

References

T.B. Bottomore : sociology as Social Criticism.

T.B. Bottomore : Karl Marx; Sociologist or Marxist?

Karl Marx and Engels : Communist Manifesto.

K.R.P. pper : Open society and its Enemies (Part II)

G.D.H. Cole : A History of Socialist Thought.

G.D.H. Cole : Meaning of Marxism.

Max Eastman : Marxism; Is it a Science?

E.J. Hobsbawm : Introduction to Karl Marx. Pre-capitalist economic formulations (Newyark, 1965)

Documents of the First International, Vol. II, 1866-68 (Moscow, 1964)

□□□

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

Question of Adaptation in The Fire and The Rain and Agnivarsha

Dr. Deepali Sharma
Dept. Of English Durga College, Raipur (C.G.)

Girish Karnad has become an immortal figure in Indian English Literature. He has influenced many writers of today. He doesn't belong to one age but all ages. His genius also got chiselled as an important film-maker and writer of film-scripts. But he is at his best as a playwright. He himself confessed:

"I have been fairly lucky in having a multi-prolonged career. You know, I have been an actor, a publisher, a film-maker. But in none of these fields have I felt quite as much at home as in play writing."

Karnad's plays reflect upon the contemporary Indian cultural and social life through the use of folk tales, myths and historical legends. He weaves together timeless truths about human life and emotions contained in ancient Indian stories with the changing social mores and morals of modern life. **The Fire and the Rain** is no exception to it. It is based on the story of Yavakiri of the Vara Parva in the Mahabharata. The playwright begins the prologue by describing the ritual ground, where the fire sacrifice is being held to appease Indra, the God of rains since his place was under the grip of drought for nearly ten years. The Chief Priest was Paravasu whose responsibility was to see that the sacrifice was performed flawlessly. The Bramha Raksha, a Brahmin soul trapped in between death and rebirth loitered on the sacrificial ground though invisible to human eye. A courtier entered with the Actor Manager as he he had come with a plea to the king and the chief priest Paravasu for staging a play in the sacrificial ground. The king disagreed as Arvasu, brother of Paravasu would enact the play. Actor Manager declaimed his view theatrically.

"So if Indra is to be pleased and bring to an end this long drought which ravages our land a fire sacrifice is not enough. A play has to be performed along with it." (107)

Paravasu finally accepted the challenge and agreed for the play.

"Let's have the play. We shall all watch." (109) The troupe consists of three men : The Actor Manager, his brother and Arvasu. The play starts with benedictory curse. Arvasu thinks about Nittilai and want her to watch the play.

Act I describes Arvasu, son of Raibhya, engaged with Nittilai, a hunters girl. He had to meet the elders of Nittilai who always encouraged him to do so. Together they come across the hermitage of Yavakai's father. A blind man, Andhaka, Sudra by caste was sitting by the gate. He was happy to know about the decision of their marriage. Arvasu enquired about Yavakri who had returned from the jungle after his ten years of rigorous penance. Yavakri received the universal knowledge from Lord Indra. Nittilai wanted to ask two questions to Yavakri :

... Can he make it rain? And then, can he tell when he is going to die...? Just two. What is the point of any knowledge, if you can't save dying children and if you can't predict your moment of death. (117) Andhaka told Arvasu that Yavakri wanted to meet him when the sun is overhead. In another part near the hermitage of Raibhya, Vishakha, sister-in-law of Arvasu was collecting water in her metal urn from the wet sand. Yavakri her past lover pervades her to sit and talk :

Vishakha, after ten years in solitude, “I am hungry for words.” (119)

Nittilai and Arvasu saw them. Vishakha with utmost shame ran towards the hermitage. She confessed –

... Yes, there was somebody else there. Yavakri! And he had come to see me alone : (127) Raibhya became furious and sent Brahma Rakshasha to kill Yavakri. He said that if Yavakri stayed alive for 24 hours he would then accept the defeat and enter fire. Yavakiri could save himself if he hides in his father's hermitage. He exposed his plan that his sole aim was to kill Raibhya and Paravasu. Brahma Rakshasha kills Yavakri and he dies in the arms of Andhaka.

In Act II Arvasu after cremating Yavakri reached the village to meet Nittilai's elders. But he was late and her father and elders declared that she would marry another boy of their tribe. Paravasu enters the hermitage in the dark. His father did not like his idea of coming back when the fire sacrifice was not complete. He was also jealous of his son, as he was given the post of chief priest. To Vishakha both Yavakri and Paravasu were same as they left her whenever they wanted and came back whenever they wished. She pleads Paravasu for the human sacrifice.

For all your experiments you haven't yet tried the ultimate. Human sacrifice! You could now. (142) Paravasu could hear the footsteps of Raibhya. He picked up his bow and arrow and shot to the sound of Raibhya. He did so intentionally as he know his father's intention was to disturb him by killing Yavakri in the last stage of sacrifice.

...I had to attend to him before he went any farther. (142)

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

Paravasu gave the responsibility to Aravasu to cremate his father and also to perform the rites of pertinence as he had to return to the fire sacrifice. When he reached the sacrificial place Paravasu shouted and called him 'Patricide' and ordered to throw him off from the sacrificial area. Aravasu got perplexed and shouted why he had to face this.

Act III begins with the description of the miserable condition of Aravasu who gains consciousness after three days. He was overwhelmed to see Nittilai –

...Am I dreaming? Or are you really here? You won't disappear again, will you? Nittilai! ... please Nittilai – stay, now that you're here. (150)

He narrated everything to Nittilai –

I worshipped my brother. And he betrayed me. I let you down and you risk everything for my sake. (152)

Arvasu wants to meet Paravasu and take revenge. Nittilai tells him that she has left everything for him. She wanted to hide herself from the wrath of her brother and husband. Aravasu decides to enact in a play 'The Triumph of Lord Indra' a play about the struggle between Lord Indra and the demon Vritra. Aravasu would play the character of Vritra 'the demon'. Nittilai encouraged him:

...face your brother as you wanted to. Not in hate, Aravasu in the play. Show him how good you are. I'm sure the play will wash off the fear – the anger. (164)

Nittilai wishes him good bye with a hope that Aravasu's dance would bring rain. She smiles and disappear. Actor Manager enters with the costume of Vritra and asks Aravasu to surrender to the mask of Vritra and pour life into it.

In the Epilogue we find Aravasu applauded by the audience for his dance. The Actor Manager acts as Indra, another actor Vishwarupa enters from the other side and runs towards Vritra. Lord Indra relates the story how Vishwarupa took birth and Indra could not bear the praise of Vishwarupa. He is not able to destroy him because of Vritra. Indra organised a fire sacrifice is honour of their father Brahma and invited all the gods and also Vishwarupa. Vritra was not allowed to enter as he is considered to be the son of demon. Vishwarupa, warned by Vritra to keep himself safe, could not save his life and was killed by Indra. Paravasu objected to it Brahma Raksha leaves him bidding goodbye. Paravasu shouts, “Come back – come back demon!” (168) Aravasu reacts –

...Another treachery! Another filthy death! How long will this go on? How long will these rate crawl around my feet vomiting blood? I must put an end to this conspiracy – wait, Indra... (170)

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

He runs with ferocity towards Indra. He becomes uncontrollable. Nittilai's brother and husband pinned Arvasu to the floor and her husband slashed her throat in swift motion. Aravasu decides to enter into the fire with Nittilai. But the fire slowly dies out and the voice of Indra is heard from the sky. He was pleased with him and asked him to ask for a boon.

We loved the way you challenged Indra and then Bursued him... in the play. But it could also be because of Paravasu's sacrifice or Nittilai's humanity. You humans are free to construe the acts of gods as you wish. The point is we are here and you can ask anything you want. (173)

Crowd shouted for the rain but Aravasu wanted Nittilai back. Along with Nittilai, Paravasu, Yavakri and others who left the world during that period would gain life. The Brahma Rakshasha also wanted release from the bondage of death.

... I want to melt away. I want peace – eternal peace – I beg of you intercede on my behalf with the gods... (174-175)

Aravasu wanted Brahma Rakshasha's release and Nittilai back but both of them was not possible Brahma Rakshasha kept pleading and used the ultimate.

...What you are asking for is not a boon. You are asking Indra to condemn Nittilai to a hell-hole much worse than the one I'm in. Think, Arvasu you're wiser now... (176)

Aravasu asks for the release of Brahma Rakshasha and sits with the body of Nittilai. The land rejuvenates with the rain and Aravasu says, “It's raining, Nittilai! It's raining.” (176) The play comes to an end here.

The relation between literature and film has over the last few decades become the object of increased attention among practitioners of both the art form to regard film as a discipline like literature one should know that primarily both the forms have their specific qualities and strength, demands and controls over their material. Both are creative art forms. In the subject of Cinema Gaston Roberge rightly says about the film adaptation.

A good film adaptation of a novel will not be judged because of systematic resemblance with the novel... In an adaptation the story must be the same ... but the narrative units simply cannot be produced equally in two different means of expression. (210)

The biggest challenge of adapting literature to film is the sophisticated, metaphorical and/or ironic language of a written text and how the film will be able to convey that Cinematic language has different tools. Celluloid adaptation from literature offers a challenge to pick the writer's work and

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

through this transposition to make it as powerful, credible popular and appealing on film as it is in its printed form. It offers infinite scope for argument, discussion, debate and questioning among spectators who also face the challenge the director gives them to come and watch the film, compare it with the original literary work, comment on it and so on.

Karnad's The Fire and the Rain is captured in the celluloid by the debut character, Arjun Sanjani under the title 'Agnivarsha'. Derived from 'The Myth of Yavakri' – a part of the renowned epic. The Mahabharat, this film retains the enounce of the original story that recounts the tale of two brothers while exploring the themes of power, love, lust, sacrifice, faith, duty, selfishness and jealousy.

As the story is from the episodes of the great epic The Mahabharata, a period of drama set in 13th century India against the dazzling background of ancient temples is taken. The movie retains the time period of the play. Agnivarsha was shot entirely on location at Hampi over 65 days the seat of the Vijaynagar Empire in the 13th century, which is now a world Heritage site, under the stewardship of the Archaeological survey of India. The period has been accurately recreated in the film without losing its contemporary insight that is so intrinsic to the original script.

Agnivarsha was screened at the American film Market, Los Angeles, in Feb. 2002. The film was also inaugurated at the prestigious commonwealth film festival in Manchester, in June 2002. It was the first of a series of art films being released in North America by the Los-Angeles based company Cinebella with the theme "Beyond Bollywood."

The director has described the hybrid of commercial and art film in agnivarsha as "stylish mythology." The star cast in the movie is as follows :

Paravasu	-	Jackie Shroff
Aravasu	-	Milind Soman
Nittilai	-	Sonali Kulkarni
Vishakha	-	Raveena Tandon
Yavakri	-	Nagarjuna
Raibhya	-	Mohan Agashe
Indra	-	Amitabh Bachchan
Rakshasha	-	Prabhudeva

Both the movie and the film deal with the universal themes like revenge, retribution, death and salvation and ultimately tackle the very question regarding the cycle of human existence. The purity of

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

love is much higher than the hard rituals which ultimately brings rain which was much awaited Agnivarsha is successful in presenting all these themes very beautifully. Both the book and the movie also address the idea of conflict between the sacred and the secular.

The Fire and the Rain and Agnivarsha associate brahminism with mind games, egocentrism, sterility and ruthlessness and shudra culture with love, compassion, freshness and hope : The title of the play is translated in Hindi having same meaning i.e. Agnivarsha. There is no change in the names of characters both in the play and movie. Dialogues are mostly smilar both in the play and the movie. Example - Aravasu talking to Andhaka in Act I.

Play – Aravasu – Actually, I did have some moments of panic, but then the other day as I sat thinking, trying hard to think, if you like – it suddenly occurred to me how stupid I was. (113) Movie– अरवसु – असल में उस दिन मैं बैठा सोच रहा था ..... कोशिश कर रहा था, सोचने की .... फिर लगा मैं तो बिल्कुल उल्लू हूँ।

Like mainstream Bolloywood films, Agnivarsha includes elaborate song and dance sequences, but here they have a deeper ritualistic and musical weight than in typical Indian movie. Apart from these similarities, there are silight differences also – Appearance of Brahma Rakshasha in the first scene of the play, where as in movie he comes in the later part. In the play Aravasu dreamed a nightmare which indicates what is going to happen in the next part of the play but in the movie it is not there and many more.

Karnad's play and the film are complementary to each other. Both stir the emotions and soul of the audience and are examples of noble works of art that contain poetic truth and poetic beauty, prerequisite for the success of both.

Works Cited

Babu Sarat M. “A Psycho-cultural study of Karnad's Plays”, The Plays of Girish Karnad ed., J. Dodiya. New Delhi : Prestige Publications 1999.

Gulzar. “Cinema and Literature : Question of Adaptation.” FT II, 24 March 2009. Web. 18 December 2009.

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

लोकपाल योजना बैंकिंग एवं उच्च शिक्षा के संदर्भ में

डॉ. राजेन्द्र कुमार शुक्ल
सहायक प्राध्यापक –वाणिज्य

भारतीय रिजर्व बैंक ने 15 जून 1995 से देश में बैंकिंग लोकपाल योजना प्रारंभ की है। जिसमें बैंकों के ग्राहकों की शिकायतों का समाधान करने के लिए ग्राहक प्रहरी नियुक्त करने का प्रावधान है। अब तक 15 अलग अलग क्षेत्रों के लिए इनकी नियुक्त की जा चुकी है। इस योजना में सभी अनुसूचित बैंक और व्यावसायिक बैंक सम्मिलित है, लेकिन क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को इस योजना के दायरे से बाहर रखा गया है। यह योजना बैंकों द्वारा प्रदान की जाने वाली कतिपय सेवाओं से संबंधित शिकायतों के समाधान में सहायता प्रदान करने और इन शिकायतों के संतोषजनक हल अथवा निपटान करने के उद्देश्य से प्रारंभ की गई है। मध्यप्रदेश की तुलना में छत्तीसगढ़ से शिकायतें कम मिलती है क्योंकि यहां बैंक की शाखाएँ कम है। भारत में 15 बैंकिंग लोकपाल कार्यालय है। मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ लोकपाल का मुख्यालय भोपाल में है। बैंक की सेवाओं का गांवों तक विस्तार हो रहा है। ग्राहकों को जागरूक करना जरूरी है। सबसे पहले 1995 में लोकपाल लाई गई थीं, वर्तमान में बैंकिंग लोकपाल योजना 2006 लागू है। [1]

शिकायतों के त्वरित समाधान के लिए बैंकिंग लोकपाल अपने अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत स्थित किसी भी स्थान पर बैठक आयोजित कर सकते हैं, जो उनके समक्ष प्रस्तुत शिकायत अथवा संदर्भ के विषय में उन्हें आवश्यक और उचित लगे। भारतीय रिजर्व बैंक अपने मुख्य महाप्रबंधक अथवा महाप्रबंधक पद स्तर के एक या इससे अधिक अधिकारियों को नियुक्त कर सकता है जो इस योजना द्वारा उनको सौंपे गये कार्यो को करने के लिए बैंकिंग लोकपाल के रूप में जाना जाएगा। बैकिंग लोकपाल की नियुक्ति एक समय में तीन वर्ष की अवधि से अधिक के लिए नहीं की जायेगी। बैंकिग लोकपाल के कार्यालय ऐसे स्थानों पर स्थित होंगे जो भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा विनिर्दिष्ट किये जायगें।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

शिकायत के आधार

निम्न लिखित में से किसी भी आधार पर बैंकिंग अथवा अन्य सेवाओं में गिरावट का आरोप होने पर संबंधित बैंकिंग लोकपाल के अधिकार क्षेत्र में शिकायत दर्ज की जा सकती है।

1. चेकों, ड्राफ्टों, बिलों आदि का भुगतान न होना अथवा उसके भुगतान या वसूली में असाधारण विलंब।
2. किसी भी प्रयोजन हेतु प्रदत्त कम मूल्य वर्ग के नोटों को बिना किसी पर्याप्त कारण के स्वीकार नहीं करना तथा उनके संबंध में किसी भी तरह का कमीशन वसूल करना।
3. किसी भी प्रयोजन हेतु प्रदत्त सिक्कों को बिना किसी पर्याप्त कारण के स्वीकार नहीं करना तथा उनके सबंध में किसी भी तरह का कमीशन वसूल करना।
4. आवक प्रेषणों का भुगतान नहीं करना अथवा भुगतान में विलंब।
5. ड्राफ्ट, पे आर्डर अथवा बैंकर्स चेंकों को जारी करने में विफल रहना अथवा जारी करने में विलंब।
6. कामकाज के निर्धारित समय का पालन न किया जाना।
7. गारंटी साखपत्र संबंधी प्रतिबद्धताओं को स्वीकारने में असफल रहना।
8. पार्टियों के खाते में आगम राशि देर से जमा करना, जमा नहीं करना, किसी बैंक में रखे गए बचत बैंक, चालू अथवा अन्य खाता की जमाराशियों से संबंधित ब्याज दर के बारे में लागू रिजर्व बैंक के निर्देशों, यदि कोई हों, का अनुपालन नहीं किया जाना।
9. इन्कार करने के लिए बिना किसी वैध कारण के जमा खाता खोलने से मनाही करना।
10. ग्राहक को बिना समुचित पूर्व सूचना के प्रभार लगाना,
11. एटीएम/डेबिटकार्ड परिचालन अथवा क्रेडिट कार्ड परिचालन से

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

संबंधित रिजर्व बैंक के अनुदेशों का बैंक अथवा इसकी अनुषंगियों द्वारा गैर अनुपालन।

12. पेंशन का गैर संवितरण अथवा संवितरण में देरी परंतु बैंक कर्मचारियों के संबंध में नहीं।
13. भारतीय रिजर्व बैंक/सरकार द्वारा यथा अपेक्षित करों के मद में भुगतान स्वीकार करने से इन्कार अथवा विलंब करना।
14. बिना समुचित नोटिस अथवा बिना समुचित कारण के जमा खातों को जबरदस्ती बंद करना ।
15. खातों को बंद करने से मना करना अथवा बंद करने में विलंब करना।
16. बैंकिंग सेवाओं के संबंध में रिजर्व बैंक द्वारा जारी निर्देशों के उल्लंघन से संबंधित अन्य कोई मामला।
17. ऋणों और अग्रिमों के विषय में बैंकिंग सेवा में कमी के आक्षेप के संबंध में निम्नलिखित में से किसी एक के आधार पर शिकायत संबंधित क्षेत्राधिकार वाले बैंकिंग लोकपाल से की जा सकती है–
    अ. ब्याज दरों के संबंध में रिजर्व बैंक के निर्देशों का अनुपालन नहीं किया जाना।
    ब. मंजूरी, संवितरण में विलंब अथवा ऋण आवेदनों के निपटान हेतु नियत समय का अनुपालन न होना।
    स. आवेदक को कोई वैध कारण बताए बिना आवेदन पत्र स्वीकार न करना और इस प्रयोजन हेतु, रिजर्व बैंक द्वारा समय समय पर विनिर्दिष्ट किसी भी निर्देशों अथवा अनुदेश का अनुपालन नहीं होना।

लोकपाल बैंकिंग अथवा अन्य सेवाओं में कमी के संबंध में दायर की गई शिकायतों को प्राप्त करेगा और उन पर विचार करेगा और संबंधित तथा शिकायतकर्ता पार्टियों के बीच इस योजना के तहत करार अथवा समझौता अथवा मध्यस्थता अथवा अभिनिर्णय पारित करके उनके संतोषजनक

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

समाधान अथवा निपटान करने में सहायता प्रदान करेगा, ग्राहक सेवा में कमी या नुकसान हुआ है तो लोकपाल को 10 लाख तक क्षतिपूर्ति दिलवाने का अधिकार है। ग्राहक अगर पढ़ा लिखा नहीं है तो अपने प्रतिनिधि के माध्यम से शिकायत दर्ज कर सकता है। अधिवक्ता के माध्यम से की गई शिकायत स्वीकार नहीं की जाती, क्योंकि यह खर्च रहित प्रकिया नहीं है। शिकायत करने की न्यूनतम समय 1 माह व अधिकतम 1 साल है। इसके तहत कोर्ट में लंबित मामले स्वीकार नहीं किए जाते।[2]

यदि बैंकिंग लोकपाल द्वारा शिकायत पर विचार करने और उसके समक्ष प्रस्तुत साक्ष्यों को देखने के पश्चात बैकिंग लोकपाल की यह राय बनती है कि शिकायत की प्रकृति के अनुसार विस्तृत दस्तावेजी और मौखिक साक्ष्य पर विचार करने की आवश्यकता है तथा बैंकिंग लोकपाल के समक्ष की कार्यवाहियां ऐसी शिकायत के अधिनिर्णय के लिए समुचित नहीं है तो बैंकिंग लोकपाल शिकायत को किसी भी स्तर पर अस्वीकृत कर सकता है, इस संबंध में बैंकिंग लोकपाल का निर्णय अंतिम माना जायेगा जो शिकायतकर्ता तथा बैंक दोनों पर बाध्यकारी होगा। वर्ष के 30 जून तक रिपोर्ट प्रकाशित करना आवश्यक समझता है तो बैकिंग लोकपाल से प्राप्त रिपोर्ट और सूचना समेकित स्वरूप अथवा अन्य स्वरूप में, जैसा वह उचित मानता है, प्रकाशित कर सकता है।[3]

बैकिंग लोकपाल की तर्ज पर उच्चशिक्षा में लोकपाल [4]

बैकिंग क्षेत्र के अतिरिक्त उच्चशिक्षा में भी लोकपाल व्यवस्था लागू, करने का विचार चल रहा है। इससे जल्द ही उच्च शिक्षा के स्टूडेंट्स अपनी तमाम शिकायतों के लिए लोकपाल का फायदा उठा सकेगे। बैंकों से जुडी समस्याओं को निपटाने के लिए जिस तरह आम जनता बैंकिंग लोकपाल की शरण में जा सकती है, उसी तरह उच्च शिक्षा से जुडे शिक्षण संस्थानों में शिक्षा लोकपाल बनने जा रहा है। मानव संसाधन विकास मंत्री कपिल सिब्बल के अनुसार, यूजीसी, एमआईसीटीई, एनसीटीई जैसी रेगुलेटरी बॉडी के तहत आने वाले सभी संस्थानों में इस व्यवस्था को लागू करने की योजना प्रस्तावित है। मंत्रालय जल्दी ही इस बारे में इग्जेक्यूटिव ऑर्डर निकालेगा। इस व्यवस्था का मकसद प्रस्तावित एजुकेशनल ट्रिब्यूनल पर शिकायत

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

निपटारे का बोझ कम करना है।

शिक्षा लोकपाल स्टूडेंट्स को दाखिले से मनाही, संस्थान पर सर्टिफिकेट नहीं देना, फीस रकम की वापसी की मनाही और भेदभाव से जुडे विषयों पर शिकायतों का निपटारा करेगा । लोकपाल को एक महीने के भीतर शिकायत का निपटारा करके अपना आदेश संस्थान को देना होगा। आदेश का पालन न करने पर संस्थान की मान्यता खतरे में पड़ सकती है। जुडिशल प्रकिया में भी इसके आदेश का संज्ञान लिया जाएगा।

हर संस्थान को अपने यहां एक लोकपाल रखना होगा। कानून और विधि से जुड़े अनुभवी लोगों को लोकपाल नियुक्त किया जा सकेगा, नियुक्ति एक एक्सपर्ट पैनल करेगी। यह पैनल उस रेगुलेटरी संस्था की सलाह और दिशनिर्देश के आधार पर तैयार होगा, जिससे यह संस्थान जुड़ा हुआ या मान्यता प्राप्त होगा । गौरतलब है कि पिछले कुछ सालों में बड़ी तादाद में स्टूडेंट्स और दाखिला लेने वाली की शिकायते सामने आ रही है। लोकपाल बन जाने से शिकायतों का समाधान किया जा सकेगा।

संदर्भ–

1. www.bhaskar.com
2. www.chhattisgarh.com
3. www.unitedbanksofindia .com
4. नवभारत टाइम्स 17 जनवरी 2012

□□□

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

SERVICES MARKETING-
OPPORTUNITIES AND CHALLENGES IN LIBERALIZED ERA

Dr. V.K. Choubey
Asstt. Prof. (Commerce),
Durga College Raipur (C.G.)

Introduction

Services Marketing is growing area, both domestically and internationally and is substantially different from the marketing of products in several ways. Services marketing has increased in importance. Over the last few years with the advent of competition, Service sector has become very wide in its gamut touching all human activities like health, education, welfare, communication, travel, finance, banking, insurance, professional services, credit rating, IT services, etc.

Statistics revealed that in developed countries, services account for 75% of jobs and contributes nearly 70% of GNP. In developing and less developed countries, the share of service in GDP is generally lower compared to developed countries, but it is growing as a faster speed in countries like India. The service sector which was contributing 26.3% of GDP in 1960-61 contributed 56.4% of GDP in 2011-2012 in India. Further the rate of growth of this sector is significant compared to manufacturing and agriculture. The scope of services marketing is enormous, about half of what we spend goes to services, and more than 75% of non-farm jobs are in service industries. India figures among the first 30 Leading exporters and importers of commercial services and there are bright prospects of faster progress with the emerging external demand for skill intensive services that provide competitively, are in the USA and parts of Europe.

Objectives of the Paper

1. It explains the service marketing features and its changing environment.

2. It outlines challenges and opportunities of service marketing in to-days competitive world.

3. It suggests some key points to service marketing managers while formulating marketing strategy.

Services have a number of unique characteristics that make them to different from products and thus create challenges and opportunities to service marketers. Some of the most commonly accepted characteristics of services may be enumerated as follows:

i) Services are intangibles and cannot be standardized or reproduced in the same form. They are customer- centric and unique.

ii) Both suppliers of service and customer should have rapport, willingly understand each other and co-operate through meaningful dialogue and effective communication.

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

iii) Services are dominated by human element and quality counts. But quality cannot be "homogenized". It will very with time, place and customer to customer.

iv) Inventories cannot be created. Services are immediately consumed and marketing and operations are closely inter linked,

Service marketing strategy

First best market strategy is satisfying customer. **Second** strategy is to maintain quality, humane approach appearances and countesses of the personnel and the available infrastructure facilities for them. **Thirdly** service counts in terms of how it is priced and how much it is cost effective, for the customer and for the service provider each.

The changing Service Environment :

Several factors have stimulated intense competition in many services industries in recent year:

(i) The economic recession in the 1990's

(ii) Increased foreign competition in several fields- The Japanese in banking. The Germans and the English in retailing. And several countries in air transportation.

(iii) Reduced government regulations in some industries – airlines, trucking, banking, insurance, etc.

(iv) Increases in the supply of some service providers – physicians, dentists, lawyers ets. Bringing competition to previously protected field.

(v) New techniques have opened new service fields – in solar energy, and information processing.

Growth of service Industry

Growth of service industry can be attributed to the changing life style, changing world, changing industrial economics, changing population and changing technology. There is a drastic change in the industrial environmental and inter industrial relationships because of two vital components viz. service and Information Technology. Services are contributing to the development of wide-spectrum of business avenues offering broader employment opportunities. Some of the examples of growing services are: advertising and marketing research, consultancy, accountancy, medicine, health care, matrimonial services, hotels, tourism, retailing, e-commerce transport, telephone, broadcasting, banking, share and stock breaking, postal courier service, employment agencies and business process outsourcing. Information technology has made the world boundary less, thus widens the scope of services.

Further, as economics advances, the service industry grows steadily in scale, volume and complexity. In the OECD countries, 60-70% of GDP values is added by service sector, while the share of

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

manufacturing remains in the range of 30-40% Thus the development of service industry has become an important economic indicator of maturity of an economy. In India service sector contributes the highest share of GDP. It can be seen in the following table.

Share of agriculture, Industrial and Services Sectors in GDP (at 1993-94) price

Year	Agriculture	Industry	Service
1994-1995	30.3%	25.8%	43.9%
1998-1999	27.5%	26.1%	46.4%
2002-2003	22.2%	21.8%	56.0%
2008-2009	17.2%	29.1%	53.7%
2011-2012	17.2%	26.4%	56.4%

Source: C.S.O. Revised Services 2011-2012

Challenges of Services Marketing

Services marketing should focus on service quality, service delivery and service management in order of fulfill the broad marketing objectives of increased customer satisfaction and adequate return to service providers. With a view to ensuring service quality – the model of five quality dimensions reliability, assurance, tangibles, empathy and responsiveness (RATER) should be followed by the marketer. The quality has emerged as the competitive, component of strategies of service organization. In order to outsmart competition in quality service marketers should aim at learning what customers are looking for, what are they evaluating. How they perceive quality and the way service quality is influenced. The service marketers must have logical approach to undertake research to find out customers expectation work towards them. Service delivery should conform to time, quantity and quality specifications of the customers. For better service management, service marketing mix broadly comprising the type of service to be rendered, its pricing, promotion and delivery should be designed and followed for realizing service marketing objectives.

With the geographical boarders blurring, deregulation of domestic markets and rapid advancements in communications technologies, service providers are facing stiff competition in the market place. According to Gronross, Service marketing required not only “external marketing” but also “internal” and interactive marketing. These three constitute service marketing triangle that explains the concepts of three types of marketing.

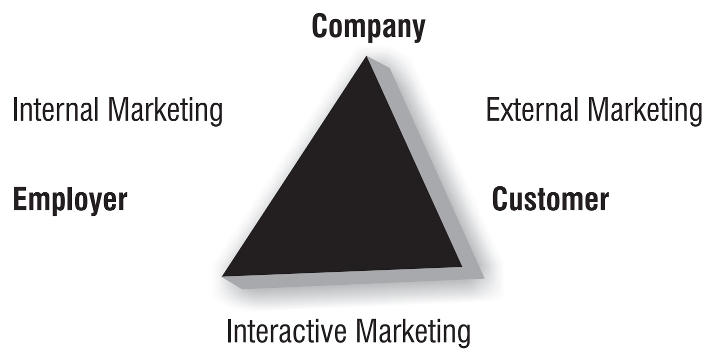

Source : Christian Gronross, "European Journals of Marketing", 1984

External Marketing (setting the promise) describes the normal work done by the company to prepare, fix price, distribute and promote the services to customers.

Internal Marketing (enabling the promise) describes the work done by the company to recruit, train and motivate employees to serve customer satisfaction.

Interactive Marketing (delivering the promise) describes the employees skill in serving the client. The client judges service quality not only by its technical quality but also its functional quality. These three concepts must be implemented effectively by the service organizations to succeed in the today's fiercely competitive liberalization era.

The marketing manager of service marketing should also consider the following 'key points' while formulating " marketing strategy" for other business.

1. **Customer focus**: The customer is the king and his requirements are to be satisfied without anycompromise.

2. **Successful differentiation** : Success in a competitive world demands a firm's ability to create a different product image in the minds of the target customer.

3. **Innovativeness and Management ability** : Ultimately the success of firms marketing strategy depends on the ability and expertise of its management to create innovations and utilize the fruits of innovations in service marketing.

4. **Quality and Professionalism** : Service markets are prone to subjective factors like image reputation, quality of service and professionalism in management. Customers are enlightened and are highly demanding in the present day competitive environment. Service quality, delivery system and process timeliness in conformity with specifications are the prerequisites of successful marketing strategy. Skills training and education of all members (human factors) at all levels in the firm are of vital necessity for any marketing strategy to succeed.

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

Conclusion

The above information reveals that the future of business expansion and opportunities of employment are more in service sector compared to manufacturing. Service marketing strategy calls not only for external marketing but also for internal marketing to motivate the employees and interactive marketing to create skills in the service providers. To succeed, service marketers must create competitive differentiation. Offer high service quality and find ways to increase service productivity.

REFERENCES

1. Stanton, Etzel, Walker : "Fundamentals of Marketing" , Mc Graw Hill edition.
2. Christopher H. Lovelock, "Service Marketing" : prentice Hall 1991.
3. Christian Gronross, " A service Quality model and its marketing implications", European Journal of Marketing. Vol. 18, No. 4, 1984.
4. "Service under siege – the Restructuring Imperative", Harvard Business Review, Sep-Oct 1991.
5. "Lessons in the service sector", Harvard Business Review, Mar-Apr. 1987.

❑❑❑

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

स्वामी विवेकानंद के शिक्षा सम्बन्धि विचार

डॉ. अर्चना गोमास्ता
सहा. प्राध्यापक (शिक्षा विभाग)
दुर्गा महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

"The Very Essence of Education is Concentration of Mind"
''शिक्षा का सारभूत तत्व मस्तिष्क की एकाग्रता है ।''
स्वामी विवेकानंद

आधुनिक भारत के निर्माताओं में महानतम, भारतीय नवजागरण के प्रणेताओं में अग्रणी और पाश्चात्य जगत को भारतीय धर्म, दर्शन, अध्यात्म और संस्कृति से परिचित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले स्वामी विवेकानंद समग्रत, भारतीयता के संदेश वाहक थे । वे विदेशों में भारत के सांस्कृतिक दूत बनकर अमरीका और यूरोपीय देशों के ऊपर छा गये । उन्होने हिन्दू आध्यात्मिकता तथा पाश्चात्य विज्ञान का, वेदांत के विचारों तथा पश्चिम की सामाजिक व्यवस्था के मध्य प्रभावी समन्वय का सच्चा प्रयास किया ।

असाधारण प्रतिभा के धनी स्वामीजी के विचार बहुआयामी हैं । समकालीन संदर्भ में अभिव्यक्त उनके विचार कालांतर में सार्वभौमिक, सार्वकालिक और सार्वदेशीय बन गये । अध्यात्म, धर्म, दर्शन, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक संदर्भ में प्रकट उनके विचार न केवल भारत में वरन समस्त विश्व के लिए अमूल्य धरोहर बन गये । स्वामी विवेकानंद समस्त मानव समाज को अनमोल ईश्वरीय देन है ।

स्वामीजी ने एक संचेत चिंतक, विचारक की भांति जिन विचारों का प्रगटीकरण किया है उन्ही के अंतर्गत शिक्षा संबंधी उनके विचार भी आते हैं । शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर व्यक्त स्वामीजी के विचार उनके जीवनकाल की अपेक्षा वर्तमान में अत्यधिक प्रासंगिक हैं । स्वामजी ने शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषय पर किसी ग्रंथ की रचना नहीं की किन्तु उन्होने अपने बहूमूल्य वक्तव्यों एवं भाषणों के द्वारा इस विषय पर स्पष्ट विचार रखा । उन्होने अपनी अदभूत दृष्टि से साहसपूर्ण शब्दों में यह विचार व्यक्त किया कि वास्तविक शिक्षा का स्वरूप अभी भी हमारे मस्तिष्क में स्पष्ट नहीं हैं ।

भारत की राजनीतिक स्वतंत्रता और नवीन भारत के निर्माण के दावे के इतने वर्षों बाद भी क्या हम निश्चित तौर पर कह सकते हैं कि हमारे शिक्षाविदों, अध्यापकों, विद्यार्थियों, राजनेताओं एवं प्रशासकों ने वास्तविक शिक्षा के स्वरूप को जान और समझ लिया है ?

<u>शिक्षा की परिभाषा</u>

''शिक्षा मानव में अंर्तनिहित पूर्णता / श्रेष्ठता का अभिव्यक्तिकरण / प्रकटीकरण है ।'' शिक्षा की इस परिभाषा के विश्लेषण से कुछ मूल्यवान तथ्य प्रकट होते है । स्वामीजी के अनुसार हर मानव में श्रेष्ठता / पूर्णता का गुण अव्यक्त स्वरूप में विद्यमान रहता है जिसे प्रकट करना, अभिव्यक्त करना होता है । शिक्षा प्राप्त करने का प्रमुख उद्देश्य मानव में छुपे गुणों या श्रेष्ठता

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

को बाहर लाना होता है । स्वामीजी के अनुसार मानव जो 'सीखता' है वह एक प्रकार का अनुसंधान है, खोज है, प्रकटीकरण है । प्रारंभिक चरण की यह खोज या अनुसंधान क्रमशः उसे उच्च्व धरातल पर असीम के ज्ञान की ओर ले जाता है ।

इस परिभाषा के अनुसार शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य मानवीय गुणों / योग्यताओं को बाहर लाना है । अव्यक्त को व्यक्त करने की क्षमता ही शिक्षा है । अज्ञात को ज्ञात करना शिक्षा है । उदाहरणार्थ न्यूटन ने गुरूत्वाकर्षण के सिध्दांत को खोजा । न्यूटन से पहले भी यह सिध्दांत अव्यक्त रूप में विद्यमान था परंतु लोगों को इसकी जानकारी नहीं थी । दूसरे शब्दों में न्यूटन ने अप्रकट / अज्ञात / अव्यक्त सिध्दांत को लोगो के समक्ष प्रकट कर दिया ।

स्वामीजी का यह अटल विश्वास था कि मानव मस्तिष्क मानव मन में निहित बुराइयों के निराकरण में सामाजिक विसंगतियों को समाप्त कर व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन को आदर्श बनाने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । उनका यह भी मानना था मानव / शिशु में अंर्तनिहित विभिन्न गुणों, योग्याताओं और क्षमताओं में आंतरिक संघर्ष को समाप्त कर उचित सामंजस्य स्थापित करना शिक्षा से ही संभव है । अनेक अवसरों पर ऐसे संघर्ष के कारण व्यक्ति अपने उस विशिष्ठ गुण या प्रतिभा का समुचित विकास नहीं कर पथभ्रष्ट हो जाता है । पूर्णता या लक्ष्य की प्राप्ति तभी संभव है जब शिक्षा की दिशा भी उचित हो ।

इस संदर्भ में प्राचीन यूनान के दार्शनिक प्लेटो का शिक्षा संबंधी विचाार उल्लेखनीय है । उसके अनुसार शिक्षा मानसिक व्याधि को दूर करने का मानसिक उपचार है । मनुष्य के अच्छे / बुरे विचारों का केन्द्र मस्तिष्क होता है अतः शिक्षा के द्वारा बुरे विचारों का निस्सारण और अच्छे विचारों का विकास होता है । प्लेटो ने भी माना है कि शिक्षा का प्राथमिक लक्ष्य मानव में निहित सदगुणों को प्रकटीकरण कर उनके विकास के माध्यम से 'सत्य' को जानना है ।

<u>शिक्षा का लक्ष्य</u>

किसी देश में शिक्षा का प्राथमिक और अंतिम लक्ष्य (उद्देश्य) क्या हो इसका निर्धारण सामान्यतः उस देश का समाज / सरकार ही करता है । विभिन्न समाजों की मान्यताओं, विचारों, आदर्शो में व्यापक भिन्नता के कारण शिक्षा के लक्ष्य में भी अंतर होना आवश्यक है । यही कारण है कि एक समाज के विचार अन्य समाजों को ग्राह्य / मान्य नहीं होते । हर समाज परिवर्तनशील परिवेश के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए अपने आदर्शो में सामान्य छिट-पुट परिवर्तनों को स्वीकार कर भी लेता है पर भारत जैसे देश में जहां प्राचीन काल से सदैव ही उच्चस्तरीय आदर्शों एवं मूल्यों को महत्व दिया गया हो , एकाएक परिवर्तनों को मानने में कठिनाई होती है । स्वामी विवेकानंद प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक विरासत से अच्छी तरह परिचित थे । उन्होंने इस वेदांतिक आदर्श को माना कि मानव न तो जन्म से पापी या दुष्कर्मी होता है और न ही परिस्थितियों का शिकार होता है । मानव के समस्त दुखों और विपदाओं का कारण उसकी अपनी ही मूल प्रकृति से अज्ञानता है । यदि वह अपनी इस अज्ञानता को दूर कर लेता है तो क्रमिक रूप से अपने सदगुणों का विकास करते हुए पूर्णता को प्राप्त कर पाने में सक्षम हो जाता है ।

स्वामीजी ने पूर्णता को सामान्य और विशिष्ट दोनों स्तरों पर परिभाषित किया । उन्होने कहा - वास्तविक शिक्षा का तात्पर्य यही है कि वह मनुष्य को उसके पैरों पर खडा होने की शक्ति दे । व्यक्ति जब तक स्वयं आत्म निर्भर नहीं होगा अपने आपसे परिचित नहीं होगा, वह दूसरों को न तो आत्म निर्भर बना सकता है और न उन्हे आगे बढा सकता है । आध्यात्मिक अर्थ में पूर्णता का तात्पर्य है मानव का अपनी आत्मा के वास्तविक स्वरूप को पहचानना ।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

व्यावहारिक धरातल पर पूर्णता मानव को उन विसंगतियों से संघर्ष करने की शक्ति प्रदान करता है जो सामाजिक बुराइयों के रूप में समाज को कमजोर बनाते है।

जीवन और चरित्र निर्माण

स्वामी जी के अनुसार शिक्षा जीवन-निर्माण, चरित्र-निर्माण और मानव-निर्माण का आदर्श हो। ऐसी शिक्षा ही समग्र और एकीकृत मानव का निर्माण कर सकती है जो चरित्र की आधार- शिला पर स्थापित हो। ऐसी शिक्षा उस मानव का निर्माण करेगी जिसे अपनी क्षमताओं का ज्ञान है और वह उन्हे विकसित करने के लिए कटिबध्द है। अपनी स्वार्थगत भावनाओं का सतत शुध्दिकरण करते हुए नैतिक मूल्यों पर अडिग रहकर मानवता की निस्वार्थ सेवा कर सके।

जीवनपर्यन्त शिक्षा

स्वामीजी का यह स्पष्ट विचार था कि शिक्षा को अनवरत रूप से मानव कल्याण का कार्य करना है अतः ज्ञानार्जन का कार्य भी जीवन पर्यन्त चलना चाहिये। इस दृष्टि से शिक्षा प्राप्त करने की कोई निश्चित आयु और अवधि नहीं होती। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने अपने अनुभव के आधार पर कहा था, मैं जब तक जीवित रहूँगा, सीखता ही रहूँगा ? समय विशेष तथा अवस्था विशेष तक समाप्त हो जाने वाली शिक्षा भावी आवश्यकताओं और समस्याओं के समाधान के अनुकूल नहीं हो सकती।

स्वामी विवेकानंद ने सामाजिक न्याय, चरित्र निर्माण शिक्षा, सार्वभौमिक मूल्य, मानसिक प्रशिक्षण एवं छात्र अध्यापक संबंधों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला है। छात्र अध्यापक संबंध के संदर्भ में उन्होने कहा है एक सच्चा अध्यापक / शिक्षक वही है जो तत्परता से छात्र के स्तर तक पहुँच जाता है। अपनी आत्मा को छात्र की आत्मा का स्वरूप प्रदान कर छात्र की आंखो से देखता, उसकी कानों से सुनता और उसके मस्तिष्क से ही समझता है। केवल ऐसा ही शिक्षक वास्तविक रूप में अध्यापन कर सकता है अन्य कोई नहीं।

स्वामीजी के अनुसार शिक्षा के द्वारा ही शिशु संस्कारित होता है और उसका व्यवहार तदनुकूल स्वरूप लेता है। समयानुसार समाज में वह अपनी भूमिका का निर्वाह इसी संस्कार के अनुसार करता है। इस प्रक्रिया में शिशु के माता-पिता, धर्माचार्यों और शिक्षकों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। शिक्षक अपने विद्यार्थियों को कैसे विचार करना, क्या विचार करना और विभिन्नताओं को कैसे समझना के साथ वस्तुओं और कार्यो को पसंद या नापसंद करने में सहायता देता है। शिक्षक का नैतिक गुणयुक्त होना जरूरी है। अध्यापक और छात्र को एक दूसरे का सम्मान करना चाहिये और शिक्षक में छात्रों के प्रति स्नेह भाव संबंधों को और प्रगाढ करता है।

महिला शिक्षा

स्वामीजी महिला शिक्षा के हिमायती थे। महिलाओं को शिक्षित करने का तात्पर्य है परिवार और समाज का शुध्दिकरण कर आगे बढाना। 'सर्वप्रथम महिलाओं को शिक्षित कीजिये और उन्हे स्वतंत्र छोड़ दीजिये तभी वे यह बता पायेंगी कि उनके लिए किन सुधारों की आवश्यकता है। वर्तमान सामाजिक राजनीतिक व्यवस्था की सबसे बडी विसंगति यह है कि महिलाओं की

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

समस्याओं के समाधान का कार्य पुरूष करता है और वह ही यह निश्चित करता है कि महिलाओं के लिए क्या उचित या अनुचित है। पुरूष की सोच हमेशा पुरूष की तरह होती है वह कभी नारी बनकर नहीं सोचता।

शिक्षा का माध्यम

स्वामीजी मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाये जाने के पक्ष में थे पर वे अन्य भाषाओं को भी समान महत्व देते थे। उनके अनुसार शिक्षक को सरल स्पष्ट, भाषा का उपयोग करना चाहिये जो विद्यार्थी के लिए ग्राह्य हो। हृदय की गहराई से निकली भाषा हृदय को स्पर्श करती है। स्वामीजी ने अंग्रेजी भाषा की शिक्षा को परिस्थितियों के संदर्भ में जरूरी माना पर उसके गुलाम बनने से भी बचने को कहा। ज्ञान - विज्ञान क्षेत्र की जानकारियों के लिए आंग्ल भाषा को वे एक साधन (माध्यम) मानते थे। स्वामीजी स्वयं आंग्ल भाषा के प्रकांड विद्वान थे। उनका अनेक भाषाओं पर समान अधिकार था।

मूल्यांकन

भारतीय एवं विश्व समाज को स्वामी विवेकानंद का समग्र अनुदाय अतुलनीय है। उन्होनें पूर्व और पश्चिम के मध्य सेतु निर्माण का कार्य किया। पश्चिम के भौतिकवाद् को भारत के अध्यात्मवाद से जोडकर उन्होंनें एक नवीन समन्वयवादी पृष्ठभूमि तैयार की। हिन्दू नवजागरण को नई स्फूर्ति, चेतना देने का कार्य उन्हीं का था। विभिन्न क्षेत्रों में उनके विचारों का सकारात्मक प्रभाव पड़ा और आने वाले विचारकों, चिंतको, राजनेताओं और समाज सुधारकों ने उनसे प्रेरणा और ऊर्जा प्राप्त की। शिक्षा संबंधी उनके विचारों ने लोगों की चेतना को जागृत कर एक नई दिशा प्रदान की।

संदर्भ ग्रंथ
विवेकानंद वांगमय : संदर्भित अंश
Dr. Kiran Walia : My Idea of Education Swami Vivekananda. Advaita Ashram Kolekata – 2011
Dr. V.P. Vema : Modern Indian Political Thought, Laxmi Narayan Agrawal Agra – 3 1967 Ed.
ज्योतिप्रसाद सूद डॉ सतीश कुमार : आधुनिक भारतीय सामाजिक तथा राजनीतिक विचार की मुख्य धारायें भाग -१, के नाथ एण्ड कम्पनी मेरठ ।।। संस्करण

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

बालिका शिक्षा के प्रति विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले अभिभावकों के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्यन

डॉ. संजीवनी ठाकुर
प्रो. प्रगति दुबे
सहायक प्राध्यापक दुर्गा महाविद्यालय

सारांश–ः

आज सैटेलाइट और टी.वी. के माध्यम से छोटे–छोटे नगरों की महिलाएँ अंतर्राष्ट्रीय जीवनकम के निकट आ गई है। पढ़ी लिखी नारियॉ पोंगापंथी अवरोध करके भारत के निर्माण मे अपना अमूल्य योगदान दे रही है। आज की नारियॉ डॉक्टर, वकील, इंजीनयर और पायलट है।

विभिन्न व्यवसाय में कार्यरत होने के साथ–साथ वे घर का भी कुशल संचालन करती है। परंतु आज भी उच्च वर्ग एवं मध्यम वर्ग के अभिभावकों के सोच में पर्याप्त अंतर दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध में यही अंतर का परीक्षण किया गया है। इस शोध में भिलाई नगर के 150 परिवारों का अध्ययन किया गया। उपरोक्त अध्ययन के परिणाम स्वरूप यह तथ्य सामने आया कि सामाजिक आर्थिक रूप से संपन्न परिवारां मे अभिभावकों की सोच सकारात्मक पायी गई। मध्यम एवं निम्न आर्थिक परिस्थिति वाले परिवारों की सोच बालिका शिक्षा के प्रति अनुकूल नही है।

शिक्षा के महत्व को उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अभिभावको ने समझा है, जाना है एवं अमल किया हैं। जबकि मध्यम एवं निम्न आय वर्ग के लोगों के लिये बालिका शिक्षा आज भी अबूझ पहेली बनी हुई है।

भूमिका–ः

नारी और पुरूष जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिये है जिनमें सामंजस्य होने पर गाड़ी दौड़ती है अन्यथा छोटा बड़ा पहिया होने पर गाड़ी असंतुलित होकर गिर पड़ती है। शिक्षा जीवन के लिये परम आवश्यक है। चाहे वह पुरूष हो या नारी। नारी को शिक्षा से वंचित करके हम देश को विकास में बाधा पहुॅचा रहे है। उन्हे उचित अवसरों से वंचित कर रहे है। जो कदापि उचित नही है। भारतीय समाज मे नारी को अनेक दृष्टियों से उच्च बना दिया गया है। फिर भी समाज के मध्यम एवं निम्न वर्ग में आज भी बेटे एवं बेटी मे पर्याप्त अंतर देखा जा रहा है। स्वंतंत्रता के बाद भी पुरूषों ने स्त्रियों पर अनेक अत्याचार किये है। उन्हे उनके अधिकारो से वंचित रखा है।

यद्यपि सरकार द्वारा सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थायें, ब्यक्तियों द्वारा महिला उत्थान के लिये योजनाये चलायी जा रही है। और प्रयास किये जा रहे है, तथापि जब तक समाज अधिक जागरूक नही होगा और नारियों के प्रति असहिष्णुता का दृष्टिकोण नही त्यागेगा तब तक देश को पर्याप्त सफलता नही मिलेगी। आज आवश्यकता है। पुरूष अपने दृष्टिकोण को बदले नारी के आत्म सम्मान के लिए जब तक नारी जागृत नही होगी, तब तक उसका उत्थान नही होगा । अगर राष्ट्र का समुचित विकास करना है तो बालिका शिक्षा को आगे बढ़ाना होगा। आधुनिक विश्व में आर्थिक एंव सामाजिक उन्नति महिला सशक्तीकरण पर आधारित है । पूर्ण एवं सशक्त शिक्षा न मिलने के कारण वह कही न कही कमजोर पड़ जाती हैं। यदि उन्हे समुचित व पूर्ण शिक्षा मिले तो वह घर एवं बाहर का दायित्व पूर्ण रूप से सफलता पूर्वक सम्हाल सकती हैं। शिक्षा के माध्यम से वह जा ज्ञान अर्जित करती है, जीवन मूल्य एवं जो दृष्टिकोण हासिल करती है उससे वह जीवन में

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

मनचाही गुणवत्ता ला सकती है। और अपने बच्चो पथ प्रदर्शन प्रभावशाली ढ़ग से कर सकती है। यदि एक परिवार में महिला शिक्षित है तो उससे पुरूष प्राभावित होगा, और स्वाभाविक उससे पुरूष प्रभावित होगा, और स्वाभाविक है कि उससे बच्चे भी अवश्य लाभान्वित होगें। यदि कोई भी राष्ट्र महिला शिक्षा पर ध्यान दे रहा है तो वह बच्चों को सुधारने मे प्रथम चरण कहलायेगा। किन्तु अभी भी साक्षरता का कम काफी निम्न हैं।

<u>चयनित समस्या के उद्देय –:</u>

1. भिलाई नगर के उच्च एवं मध्यम सामाजिक एवं आर्थिक स्तर वाले अभिभावकों को बालिका–शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
2. भिलाई नगर के मध्यम एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले अभिभावकों को बालिका–शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. भिलाई नगर के उच्च एवं निम्न सामाजिक एवं आर्थिक स्तर वाले अभिभावकों को बालिका–शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

<u>परिकल्पना–:</u>

1. भिलाई नगर के उच्च एवं मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अभिभावकों की बालिका–शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में पर्याप्त अंतर पाया जायेगा।
2. भिलाई नगर के मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अभिभावकों की बालिका–शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण मे कोई अंतर नही होगा।
3. भिलाई नगर के उच्च आये वर्ग के अभिभावकों एवं निम्न आय वर्ग के अभिभावको के बलिका शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण मे पर्याप्त अंतर पाया जायेगा।

<u>शोध विधि–:</u>

प्रस्तुत अध्ययन के लिये भिलाई नगर के अभिभावको का सर्वेक्षण विधि द्वारा चयन किया गया।

<u>न्यादर्श–:</u>

प्रस्तुत अध्ययन हेतु 150 अभिभावकों का चयन किया गया। जिसमें 50 उच्च आय वर्ग वाले अभिभावकों का लिया गया। इसी तरह 50 मध्यम एवं 50 निम्न आय वर्ग के लोगों को लिया गया।

<u>उपकरण–:</u>

इस प्रयोग के अध्ययन हेतु डॉ. एस. पी. कुलश्रेष्ठ का सामाजिक आर्थिक मापनी का प्रयोग किया गया।

दूसरे उपकरण के लिये स्वःनिर्मित बालिका शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मापनी का उपयोग किया गया।

<u>प्रदत्तो का विश्लेषण–:</u>

प्रस्तुत शोध के अध्ययन हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, प्रमाणिक विचलन त्रुटि एवं टी मूल्य निकाला गया

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

सारणी क्रमांक – 1

क्र.	वर्ग	प्रदत्रों की सेख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक विचलन त्रुटि	टी का मुल्य
1	उच्च आय वर्ग वाले अभिभावक	50	166.30	19	0.98	2.11
2	मध्यम आय वर्ग वाले अभिभावक	50	157.81	27.1		

DF- 0.5

सारणी क्रमांक –2

क्र.	वर्ग	प्रदत्रों की सेख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक विचलन त्रुटि	टी का मुल्य
1	मध्यम आय वर्ग वाले अभिभावक	50	166.30	19	21.4	4.7
2	निम्न आय वर्ग वाले अभिभावक	50	144.9	24.6		

DF- 0.01

सारणी क्रमांक –3

क्र.	वर्ग	प्रदत्रों की सेख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक विचलन त्रुटि	टी का मुल्य
1	उच्च आय वर्ग वाले अभिभावक	50	157.81	27.1	12.6	4.17
2	निम्न आय वर्ग वाले अभिभावक	50	144.9	24.6		

DF-0.01

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

<u>निष्कर्ष–:</u>

1. उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के अभिभावकों का बालिका–शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण के मध्यमान 166.3, मध्यिका 1517, बहुलांक 1590 और प्रमाण विचलन का मान 19 है। जबकि मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर के अभिभावकों का बालिका शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण के मध्यमान 1575 मध्यिका 162.80 बहुलांक 1734 और प्रमाप–विचलन का मान 27.0 है। अतः उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के अभिभावकों के दृष्टिकोण अपेक्षाकृत मध्यम स्तर के अभिभावकों के दृष्टिकोण से अधिक ह। मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर के अभिभावकों का प्रमाप विचलन उच्च स्तर के समाजिक आर्थिक अभिभवको से अपेक्षाकृत अधिक है ।

2. मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर के अभिभावकों का बालिका–शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण के मध्यमान 157.5,मध्यिका162.80, बहुलांक 1734 और प्रमाण विचलन का मान 27.10 है। जबकि निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के अभिभावकों का बालिका शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण के मध्यमान 144.90 मध्यिका 142.50 बहुलांक 137.70 और प्रमाप–विचलन का मान 24.60 है। अतः निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के अभिभावकों के दृष्टिकोण अपेक्षाकृत मध्यम स्तर के अभिभावकों के दृष्टिकोण से कम है। मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर के अभिभावकों का प्रमाप विचलन निम्न स्तर के समाजिक आर्थिक स्तर वालो अभिभवको से अपेक्षाकृत अधिक है।

3. उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के अभिभावकों का बालिका–शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण के मध्यमान 166.3, मध्यिका171.5, बहुलांक 159.0 और प्रमाण विचलन का मान 19 है। जबकि निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के अभिभावकों का बालिका शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण के मध्यमान 144.90 मध्यिका 142.50 बहुलांक 137.70 और प्रमाप–विचलन का मान 24.60 है। अतः निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के अभिभावकों के दृष्टिकोण उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले अभिभावकों से कम है।

□□□

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

FOOD SECURITY FOR SLUM CHILDREN

Dr. A. Rajshekhar
Dep. Of Geography Durga College Raipur.C.G

A slum, as defined by United Nations agency UN-HABITAT, is a run-down area of a city characterized by substandard housing and squalor and lacking in tenure security. According to the United Nations, the percentage of urban dwellers living in slums decreased from 47 percent to 37 percent in the developing world between 1990 and 2005. However, due to rising population, and the rise especially in urban populations, the number of slum dwellers is rising. One billion people worldwide live in slums and the figure will likely grow to 2 billion by 2030. The origin of the word slum is thought to be the Irish phrase 'S lom é (pron. s'lum ae) meaning "it is a bleak or destitute place." An 1812 English dictionary defined slum to mean "a room". By the 1920s it had become a common slang expression in England, meaning either various taverns and eating houses, "loose talk" or gypsy language, or a room with "low going-ons". In Life in London Pierce Egan used the word in the context of the "back slums" of Holy Lane or St Giles. A footnote defined slum to mean "low, un frequent parts of the town". Charles Dickens used the word slum in a similar way in 1840, writing "I mean to take a great, London, back-slum kind walk tonight". Slum began to be used to describe bad housing soon after and was used as alternative expression for rookeries. In 1850 Cardinal Wiseman described the area known as Devil's Acre in Westminster, London as follows: "Close under the Abbey of Westminster there lie concealed labyrinths of lanes and potty and alleys and slums, nests of ignorance, vice, depravity, and crime, as well as of squalor, wretchedness, and disease; whose atmosphere is typhus, whose ventilation is cholera; in which swarms of huge and almost countless population, nominally at least, Catholic; haunts of filth, which no sewage committee can reach - dark corners, which no lighting board can brighten."

India is home to approximately 25% of the world's malnourished poor. Government statistics show that 43% of children under the age of five are malnourished across the country. Urbanization has had a hand in skewing this statistic for the worse, despite the country's economic progress over the last two decades. Today, 28% of the total population lives in cities; this statistic is projected to increase to 41% by 2030. The proliferation of basic needs, such as clean water and access to nutritious food, has not been commensurate with the rapid expansion of India's urban areas. Needless to say, the most vulnerable are newborns and infants (0-36 months). Child malnutrition rates in India are even worse than those seen in sub-Saharan Africa. According to a study by the Institute of Development Studies, 6,000 children in India die every day, and 2,000-3,000 of these deaths are attributed to malnutrition. In Mumbai alone, more than 26,000 children die annually due to malnutrition.

Child Health and Nutrition

Slum dwellings do not easily lend themselves to enforcing a healthy lifestyle for children. The typical size of a slum dwelling in Mumbai is between 10-20 square meters without proper access to clean water or adequate sanitation. It has been noted that children without access to an improved toilet are almost twice as likely to be malnourished than children with access to an improved toilet.

The source of a newborn or infant's nutrition is its mother. It is not surprising then that any effective intervention to help the child must include the mother. Only 21% of Indian children are fed in accord with the standards outlined in India's Infant and Young Child Feeding (IYCF) practices. For example, according to IYCF practices, breast milk and the first breastfeed are the most nutritious for

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

newborns, but only 30% of Indian children are breastfed in the first hour after birth.

There is a very strong correlation between a mother's education and a child's nutritional status. As stated in a new report by Dasra entitled "Nourishing Our Future:" "In India, a child born to a mother with no education is nearly twice as likely to be malnourished as a child born to a mother with 10-11 years of education." The limited formal education of mothers translates into ignorance of basic healthcare practices like proper nutrition, immunization or preventative measures against diseases such as diarrhea. Quality private healthcare is prohibitively expensive, and as the Dasra report explains, the slums in cities like Mumbai and New Delhi are "…characterized by the total absence or shortage of healthcare infrastructure."

Nourishing Our Future

For "Nourishing Our Future," Dasra evaluated 100 non-profit organizations working toward solutions for child malnutrition. The new report features 10 organizations that "…can further leverage their model throughout urban slums," and includes interventions such as improving access to the public healthcare system and training community-based link workers and public healthcare workers.

The public health system has limited resources to tackle the malnutrition issue. With this gap, community-based link workers have been found to be most effective in promoting positive change within their respective communities. These link workers are recruited by non-profit organizations as volunteers to improve awareness of child health and nutrition interventions. To impact urban slum communities, various NGOs have created education and training programs for local women about best healthcare practices, as well as accessing the public healthcare system, identifying malnutrition and working with the community to spread health and nutrition knowledge. Examples of on-the-ground efforts are by The Smile Foundation in New Delhi, which has been working with communities to build improved childcare capacities, and the Society for Nutrition, Education & Heath Action (SNEHA) in Mumbai, which is scaling a community-owned and -led resource center to serve as a repository of child health and nutrition needs and public healthcare referrals. As the Dasra report states: "Training link workers from communities on effective childcare practices and health education is the most sustainable way to ensure that communities and individuals are empowered with the knowledge to improve the health and nutrition status of their own children."

In India, healthcare workers are overburdened. The ideal doctor-to-patient ratio is 1:500, but in Mumbai the ratio in practice is 1:1,588. The availability of hospital beds is another significant constraint where the ideal is one hospital bed per 550 people; in Mumbai, there is one hospital bed per 3,000 people. It is therefore not hard to believe that malnutrition cases often go unnoticed and that nutrition-related interventions are not priority with patients from urban slums. Training public healthcare workers – doctors, nurses, midwives and other healthcare staff – is as essential as training individuals within a community to promote and educate best child health and nutrition practices. Today, "there are virtually no refresher courses for public health providers that update them on effective strategies to tackle malnutrition or a practical approach to incorporating the cornerstones for effective child health and nutrition." This hole in education is being filled by non-profits like the Breastfeeding Promotion Network of India, which has a training program for public healthcare workers, and, again, SNEHA, which has an awareness program targeting public healthcare workers on child health and nutrition best practices.

Aside from training and awareness-raising, there is also the issue of improving access to the public healthcare system. Communities may not know how and where to access healthcare, especially in cities like Mumbai and New Delhi where the complexity of the system can be overwhelming. Linkages need to be created between urban slum communities and public healthcare,

and NGOs have found the following ways to do so: create a referral system, broaden community outreach and improve coordination between the national Integrated Child Development Services (ICDS) Scheme and municipal healthcare infrastructure. In New Delhi, HOPE worldwide is implementing a referral system to make sure that patients go the appropriate health center for treatment. The system includes a registration system, immunization tracking, crowd management protocol, health education and counseling sessions, and customer-friendly staff. In a different intervention in Mumbai, Apnalaya holds regular meetings between community healthcare workers and municipal corporation health workers so that their activities are aligned and to make sure that adequate child health and nutrition services are provided.

The Food Security Bill: Solution to Malnutrition?

The Government of India is fostering an "opportunistic environment" to encourage the work of non-profits as the critical link between local governments and communities. But it is also making moves on its own. Most recently, the government's controversial food subsidy plan under the proposed food security bill has been cleared by the Indian cabinet and sent to Parliament.

The new food security bill proposes to wrestle with widespread malnutrition in India by providing food subsidies to two-thirds of the total population, or ~810 million people. Subsidized grain would be provided to 75% of the rural population and to 50% of the urban population considered "too poor to eat properly." This would mean that the government effectively doubles its food subsidies so that they are equivalent to 2% of GDP. This amounts to an additional US$12 billion in subsidies per year.

Although the new scheme is meant to alleviate the malnutrition challenge, there is criticism that this new plan is neither affordable nor well targeted – not to mention the speculation that India's slowing growth rate and growing fiscal deficit makes the bill irresponsible. Jeff Glekin from Reuters writes: "Critics claim the new food security law is the worse kind of pork barrel populism. The timing of these new state handouts from the beleaguered central government supports the cynical reading. Important state elections are round the corner and a general election is coming in 2014."

The timing of the bill's introduction and projected passage is questionable. India's assembly elections, or state elections, have commenced and will continue in phases throughout the country this year. The multi-billion dollar bill has a strong chance of being passed in time for state government elections in one of India's poorest states, Uttar Pradesh, in March 2012.

Conclusion

The subject of food subsidies is a politically charged one, so it is not surprising that the food security bill may be approved now to win key votes. Political motivations aside, will the bill be effective in combating malnutrition? It is hard to say, but it seems unlikely. The new bill simply "extends" existing programs that are already too inefficient and corrupt to be effective. Also, and perhaps more importantly, the bill may not be affordable. The Government of India cannot just keep spending indefinitely. With analysts predicting the contracting of India's economy over the next two-to-three years, this bill may end up doing more harm than good.

Malnutrition is not primarily a political issue; it has been made that way. Malnutrition is a health issue and needs to be treated as such. If healthcare and nutrition are given greater priority in government plans, more efficient ways of tackling such problems would be to design effective childhood programs and to continue to nurture on-the-ground partnerships so that, in the end, children benefit and are able to lead longer, healthier, more productive lives.

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

REFERENCES

1. Slum Dwellers to double by 2030 UN-HABITAT report, April 2007. UN-HABITAT 2007 Press Release on its report, "The Challenge of Slums: Global Report on Human Settlements 2003".
2. See, for instance, the press release from Abahlali baseMjondolo on the Slums Act in South Africa
3. For instance see the work of Marie Huchzermeyer
4. "Slum Tourism: A Trip into the Controversy". May 15, 2010. Cassidy, D: "How the Irish invented Slang", page 267, Counter Punch Press, 2007, ISBN 978-1-904859-60-4
5. Dyos, H.J.; Cannadine, David & Reeder, David (1982). 131 Exploring the urban past: essays in urban history. Cambridge University Press. ISBN 9780521288484. Ward, Wilfrid Philip (2008). The Life and Times of Cardinal Wiseman, Volume 1. BiblioBazaar. pp. 568. ISBN 9780559688522. Dyos, H.J.; Cannadine, David & Reeder, David (1982). Exploring the urban past: essays in urban history. Cambridge University Press. pp. 240. ISBN 9780521288484. Wohl, Anthony S. (2002). The eternal slum: housing and social policy in Victorian London. Transaction Publishers. pp. 5. ISBN 9780765808707. Politics in the Slum, New York Indymedia, 2008
6. Slums of the World UN-HABITAT report, downloadable.
7. Measure Evaluation / NIPORT (2006) Slums of urban Bangladesh: mapping and census, 2005. Centre for Urban Studies / Measure Evaluation / Nationaldiei.
8. Millenium Development Goals - News, 5 April 2005
9. Comhabitat: Briefing paper produced for the Commonwealth Civil Society Consultation, Marlborough House, London, Wednesday, 15 November 2006
10. Page, Jeremy (2007-05-18). "Indian slum population doubles in two decades". The Times (London)
11. Chandran V 2003. Kerala study reveals Health Amidst Poverty. Retrieved March 6, 2005, from http:/www.expresshealthcaremgmt.com.
12. Chant S 1992. Women and Poverty in Urban Latin America; Mexican and Costa Rican Experiences. United Kingdom: London School of Economics and Political Science.
13. Madhiwala N, Jesani A 2000. Health, households and women's lives. Center for Enquiry into Health and Allied Themes. Retrieved April 16, 2005, from http:/ www.expresshealthcaremgmt.com.
14. Mulgaonkar VB 1996.Reproductive Health of Women in Urban Slums of Bombay. Social Change, 26(4): 144
15. Parikh I, et al. 1996. Gynecological Morbidity among women in a Bombay slum. Social Change, 26(3): 137-156.
16. Tripathy N 2003. Women in Informal Sector. New Delhi: Discovery Publishing House, pp. 26-82.

- http://dasra.org/IPF/sites/default/files/NOURISHING%20OUR%20FUTURE.pdf
- http://www.hindustantimes.com/India-news/NewDelhi/The-real-India-story-PM-calls-malnutrition-a-shame/Article1-794014.aspx
- http://www.ifpri.org/publication/2011-global-hunger-index
- http://in.reuters.com/article/2011/12/19/us-india-food-idINTRE7BI04G20111219
- http://in.reuters.com/article/2011/12/19/breakingviews-india idINDEE7BI0AJ20111219? type=economicNews
- http://wcd.nic.in/nationalguidelines.pdf
- http://wcd.nic.in/icds.htm
- http://www.wfp.org/countries/india
- http://en.wikipedia.org/wiki/Malnutrition_in_India

□□□

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

छत्तीसगढ लोक साहित्य मे व्यंग्य चेतना

डॉ. रोशनी मिश्रा
सहायक प्राध्यापक दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

लोक साहित्य मानव समाज का आदिम साहित्यक रूप है, जो अजर है, अमर भी है, अनुपम भी सरल और सहज तो यह होता ही है। यह युग–युगान्तर का वह साहित्य है,जो मौखिक परंपरा से प्राप्त होता है एक पीढी से दूसरी पीढी को हस्तांतरित होता है। लोकसाहित्य के स्वयिता का स्वतंत्र कोई अस्तित्व नहीं रह पाता वह सार्वजनिक हो जाता है। वैयक्तिक होते हुए भी यह पूरे समाज की संपत्ति बन जाता हैं।

लोक शब्द जन से जुडा है। संपूर्ण समाज की लोकाभिव्यक्ति का धरातल जड नहीं है, नदी की निर्मल अजस्त्र धारा की तरह युगीन चेतना से छनती, आगे बढती रही है। अतः लोक साहित्य का रूप भारतीय मानस संस्कृति आंतरिक चेतना में एक समान एक रस है।

व्यंग्य एक प्रकार की आलोचना है। प्रसि्द्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई की मान्यता है कि – व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है,जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों, मिथ्याचारों और पाखण्डों का पर्दाफाश करता है, यह नारा नहीं है। मैं कह रह रहा हूँ कि जीवन के प्रति व्यंग्यकार की उतनी ही निष्ठा होती है,जितनी गंभीर रचनाकार की,बल्कि ज्यादा ही। वह जीवन के प्रति दायित्व का अनुभव करता है। जिदंगी बहुत जटिल चीज है। इसमें खालिस हॅसना या खालिस रोना जैसी कोई चीज नहीं होती। बहुत सी हास्य रचनाओं में करूणा की धारा है अच्छा व्यंग्य सहानुभूति का सबसे उत्कृष्ट रूप होता है।

वास्तव में व्यंग्य में कहीं न कहीं मानव की त्रुटि छिपी रहती है जिससे वह अनभिज्ञ रहता है। जब कोई व्यक्ति अपनी व्यंग्य–शैली में कुछ बातें कह देता है, तब उसे अपनी त्रुटि का भाव होता है। व्यंग्य में वास्तविकता छिपी रहती है। व्यंग्य किये हुए को उजागर करने वाला एक माध्यम है। यह गद्य की सशक्त एवं प्राचीन विद्या है। जब से इस धरा पर मानव–संवेदना का पदार्पण हुआ तब से व्यंग्य का प्रादुर्भाव हुआ है।

व्यंग्य न केवल शिष्ट साहित्य में निहित है, बल्कि यह लोकसाहित्य में भी समाहित है। '' छत्तीसगढ के नैसर्गिक वैभव की भांति इसका लोकसाहित्य भी अत्यंत समृद्ध और हृदयग्राही है। यहॉ के लोगों की उदार मनोवृत्ति और आदर्शों की छाप यहां की कथाओं गीतों और वार्ताओं में विद्यमान है। लोक शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम्य नही है, बल्कि नगरों और गॉवों में फैली हुई वह समूची जनता है जिनके व्यवहारिक ज्ञान का आधार पोथियॉ नहीं है। किसी लोक समाज में जो लोक सृजनात्मक प्रतिभा से उत्पन्न होते है, उन्हीं को हम लोक कहते है। लोकसाहित्य के अंतर्गत लोकगीत, लोकगाथाएँ,लोकनाट्य,लोकाचार, लोकोत्सव, पर्व आचार–विचार में नियम आदि है। छत्तीसगढ लोक साहित्य में व्यंग्य विनोंद,परिहास, उपहास व वकोक्ति का समन्वय है। भारतीय संस्कार परंपरा में विवाह के अवसर में गीतों के माध्यम से मनोरंजन प्रधान गाली गायी जाती है। छत्तीसगढ में भी '' गारी '' का व्यंग्य हास्य–विनोद पूर्ण ही रहता है।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

अरछा जरगे, बरछा जरगे मुर के पाग हो।
हहो कहि के नहीं कहा,जरय तुहंर नाक हो।।

हे समधी सुजन—गन्ने के खेत जल गये, गुड का पाक जल गया, आपने बाजे, गाजे पटाखे की बात कहकर इंतजाम नहीं किया, आपकी नाक कट क्यों नहीं गई।

समधी के साथ वर तथा उसके परिजनों को भी जमकर गाली गायी जाती है। मिथिला मेंप्रभु राम को भी जेवनार में गाली सुनायी गयी थी।

समधिन के दुखा श्वपर लेबे आइस,
ओला गइगे खदर बज के खोंस ।
लानि देवबे तै भइया बसूला बिंघना
हरि देबे ओर तन के खोस।।

समधिन का बेटा जंगल में वृक्ष काटने आयाथा, किन्तु उसे जंगल के कॉटें चुभ गए। अरे भाई बसूला— निंधना ले आओं, उसके शरीर या कॉटा निकाला

पइसा अउ कौड़ी जतका लेबे ओतका देहंव
कि तोर बहिनी ल देबे बिहाय
व्यापारी ह एक दिन सुनय दूसर दिन सुनय
कि तोर ऑखी नइ दिखय
अपन मनखे ल तैं नइ चिन्हस
का होगे तोर ऑखी रे '04'

व्यापारी भाई के व्यंग्य ने राजा की ऑख खोल दी। वह अपनी पत्नी को पहचान लेना है। उसे अपनी भूल का पता चलता है। राजा को वास्तविकता का भान होता है।

छत्तीसगढी लोककथा 'भरथरी' में व्यंग्य का सुन्दर उदाहरण विद्यमान है। राजा भरथरी की माता पवन रानी के संतान न होने के कारण उसे अन्य स्त्रियॉ ताना मारती है।

संगी जवरिहा देख तो दीदी ताना मारन रे
बॉझ कइथे दीदी
बोली—बोली मं ओ
तन दैदे दीदी। '05'

व्यंग्य—बाण का घाव इतना गहरा होता है कि वह भरने का नाम नहीं लेता। व्यंग्य की बोली ने पवन रानी के कलेजे में घाव बना दिया है,जो काफी गहरा है।

व्यंग्य का प्रभाव कई रूपों में देखनें को मिलता है। उनमें से एक रूप सहज,सरल और सामान्य होता है, जबकि दूसरा रूप उग्र। इसी उग्र रूप के दर्शन हमें लोकगाथाऑं में होता है।

हास्य व्यंग्य का सबसे उज्जवल रूप लोकोक्तियों में मुखरित होता है जहॉ जीवन की मौलिक अनुभूति अभिव्यक्त होती है। उल्टा—पुलटा भय संसारा नाउ के मूड़ ल मुंड़य लोहारा—जगत की नीति विपरीत हो गई है लुहार नाई का मुंडन कर रहा है।

आज स्वार्थी जग में बैठन दे, पीसने दे, फेर सूतन दे। 'तोर तेल ला भुयां म धर, मोला

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

ढेमवा दे।' ' बर न बिहाव छठ्ी बर धान कूटय' । सूपा बोलय त बोलय चलनी बोलत हे, जेमा बहत्तर छेद। स्वार्थी दुनिया पर करारा व्यंग्य देखिए–

तिल बोवत ले भाहौं
'नइ तो गर ल काटों।

नाचा छत्तीसगढ का अत्यंत लोकप्रिय सांस्कृति प्रदर्शन है। नाचा में दो अंग होते है – पहला गीत और दूसरा हास्य–प्रहसन जिसे हम गम्मत के नाम से जानते हैं। गीत का संबंध नृत्य से और गम्मत का संबंध अभिनय से है। गीत एवं नृत्य में जहॉ छत्तीसगढ़ का स्वर झंकृत होता है वहीं गम्मत में हास्य –व्यंग्य के साथ ही अंधविश्वास एवं बुराईयों पर जमकर प्रहार किया जाता है। गम्मत में प्रयुक्त व्यंग्य तीक्ष्ण होता है। नाचा में प्रायः सामाजिक जीवन की गाथा ही प्रस्तुत की जाती है गम्मत के चरित्रों में दाउ जमीदार, कोतवाल, पंडित, नेता आदि प्रमुख होते है नाचा का महत्वपूर्ण पात्र जोकर होता है। जोकर को मंच पर मसखरा अभिनय करने की छुट होती है। वह अजीबों–गरीब हरकते करता हुआ अपना संवाद अभिनय के माध्यम से श्रोताओं को हसांने गुदगुदाने की होती हैं।

छत्तीसगढ़ में प्रचलित राउत दोहों में जहॉ शौर्य का भाव है, वहीं स्फूट हास्ट व्यंग्य का भाव परिलक्षित होता है। सम–सामयिक संदर्भों के प्रदूषित पर्यावरण में राउतों की सूक्ष्म निरख–परख लोक चेतना को प्राणवत्ता प्रदान करती हैं। सार्थक व्यंग्य भी करती है।–

कलियुग की दो टूक व्याख्या मानवीय नीत व धर्म के हास पर राउत दोहों में निहित व्यंग्य है। –

सतयुग त्रेता अउ द्वापर धरती घलो बुढ़ागे।
देवता धामी मन पथरा लहुटगे नीति धर्म गंवागे।

अपने अस्तित्व का मान प्रत्येक मनुष्य जाति, समाज व देश को गौरवान्वित कर देता है, किन्तु सामाजिक मूल्यों का विघटन विक्षोभ के रूप में मुखरित होता है–

कृष्ण राज म दूध–दही अउ राम–राज म घी
ये जुग में चाहा मिलत हे फूंक–फूंक के पी।
राउतों के दोहें है उसमें हास्य और व्यंग्य दोंनों होते है।
दार–भात रांधे चटनी पीसे कचूर के हो।
घर म बाड़ी बछिया नइये घोड़ा चढे ससूर के हो।
सबके लउढी रिंगी–चिंगी, अउ मोर लउढी कुसुवा रे।
घर बॉध के डउकी लानेंव उहू ल लेगे मुसुवा रे।

छत्तीसढ़ी लोक साहित्य में हास्य और व्यंग्य की जुगल बंदी है। इसमें लोक मानस का जो सहज उमंग उल्लास है, उसमें हास्य रसोद्रेक तथा जो विपरीतता की संस्थिति है, वहीं व्यंग्य का स्वरूप समादृत है। इस प्रकार लोक साहित्य में व्यंग्य सहज रूप में संप्राप्य है, जो शिष्ट साहित्य को प्रेरणा प्रदान करके परिमार्जित रूप में प्रतिष्ठित होता है। छत्तीसगढ़ के जीवन में निरीहिता विपन्नता असमर्थता लोकजीवन के व्यंग्य को पल–पल में अभिव्यक्ति देती है,जो अनगढ़

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

होते हुए भी स्वाभाविक है सरल होते हुए भी समर्थ है, अलंकार विहिन होते हुए भी आकर्षक है।

जहाँ हिन्दी में व्यंग्य को उलाहना, ताना, कोसना आदि शब्दों से जाना जाता है, वहीं छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य में आभा, अभियाना या आभा मारना कहां जाता है।

संदर्भ सुचि

1. मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य स्वरूपे – हरि शंकर परसाई भारती ज्ञानपीठ प्रकाशन हैदाराबाद
2. सदाचार का ताबीज – हरिशंकर परसाई ज्ञानपीठ प्रकाशन हैदाराबाद
3. हिंदी व्यंग्य कर्म एवं समकालीन परिदृश्य डॉ विजय कुमार पाठक, प्रयास प्रकाशन बिलासपुर पृ 348
4. हिंदी की हास्य' व्यंगमयी कविता का सांस्कृति विवेचना पृ 152
5. हिंदी साहित्य का समृद्ध इतिहास – सोलहवां भाग पृ 74
6. हिंदी साहित्य का वृहद् इतिहास – सोहलवां भाग पृ 76

□□□

DMV Journal
Annual Journal of Durga Mahavidyalaya, Raipur (C.G.)

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

गैर बैंकिग वित्तीय संस्थाओं की कार्यप्रणाली एवं विकास

डॉ. आशीष दुबे
डॉ. ए. करीम

गैर बैंकिग वित्तीय संस्थाओं में उन संस्थाओं को शामिल किया जाता है जो जन निक्षेपों के अतिरिक्त विभिन्न बाह्य स्त्रोतों से अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन कोषों का एकत्रण करती है जिनका उपयोग विशिष्ट क्षेत्रों के विकास कार्यो के लिए अग्रिम उपलब्ध कराने में करती है वर्तमान परिदृश्य में देश की गैर बैंकिग वित्तीय क्षेत्र में अस्थिरता एवं परिवर्तन की प्रक्रिया दिखलाई पड़ रही है।

छोटी गैर बैंकिग कम्पनियाँ संविलियन द्वारा अथवा सहायक संस्था के रूप में अपना स्वरूप परिवर्तन कर रही है अथवा कुछ जमा न लेने वाली अथवा स्वामित्तव पूँजी वाली गैर बैंकिग वित्तीय कम्पनियों के रूप में अपना स्वरूप परिवर्तित कर रही है तथा गैर बैंकिग वित्तीय कम्पनियाँ पूंजी की अधिकता के कारण सुविधाजनक स्थिति में है। गैर बैंकिग वित्तीय संस्थाओं का स्वरूप वित्तीय कम्पनी के रूप में परिवर्तित होने से इन संस्थाओं के कार्य निष्पादन में सुधार हुआ है जिससे इन संस्थाओं के परिचालन लाभों में वृद्धि हुई है किन्तु इन संस्थाओं के जमा निक्षेप स्वीकार नहीं करने तथा बैंक वित्त पर बढ़ती हुई निर्भरता के कारण इन संस्थाओं की संपत्तियों की गुणवत्ता में गिरावट आई है। इन संस्थाओं की संपत्तियों की गुणवत्ता में वृद्धि के लिए उचित नियमावली बनाया जाना आवश्यक है। इन वित्तीय संस्थाओं के वित्तीय विवरणों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इन संस्थाओं के परिचालन लाभ तथा निवल लाभ में वृद्धि हुई है साथ ही इन संस्थाओं की अवरूद्ध संपत्तियों की मात्रा में भी वृद्धि हुई है जो इन संस्थाओं के वित्तीय सृदृढ़ता के लिए घातक है। गैर बैंकिग वित्तीय संस्थाओं में प्राथमिक व्यापारियों को भी शामिल किया गया है प्राथमिक व्यापरियों से आशय उन व्यापारियों से है जो प्रारंभिक स्तर पर विभिन्न व्यापरिक संस्थाओं की वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति करते है इन प्राथमिक व्यापारियों के व्ययों की अधिकता के कारण इन व्यापारियों के लाभ में कमी आई है।

गैंर बैंकिग वित्तीय संस्थाएँ भारतीय वित्तीय प्रणाली का महत्वपूर्ण भाग है गैर बैंकिग वित्तीय संस्थाएँ भारतीय अर्थव्यवस्था के वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रमुख गैर बैंकिग वित्तीय संस्थाओं में भारतीय निर्यात आयात बैंक (एक्जिम बैंक) भारतीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) राष्ट्रीय आवास बैंक (एनएचबी) भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) और भारतीय औद्योगिक निवेश बैंक (आई.आई.आई.बी.) हैं भारतीय औद्योगिक निवेश बैंक स्वेच्छा से परिसमापन की प्रक्रिया हैं। इन संस्थाओं के स्वामित्तव पूँजी में भारत सरकार भारतीय रिर्जव बैंक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंको बीमा कम्पनियों तथा विभिन्न वित्तीय संस्थाओं का योगदान है। इन वित्तीय संस्थाओं के संपत्तियों एवं दायित्वों का संयुक्त विवरण निम्नलिखित है–

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

तालिका क्रमांक – 1
गैर बैंकिग वित्तीय संस्थाओं के संपत्तियों एवं दायित्वों का विवरण
(राशि रूपये दस करोड़ में)
मार्च के अंत तक

मद देयताएँ	2011	2012	प्रतिशत परिवर्तन
1. पूंजी	49000(1.7)	62000(1.8)	26.5
2. रिर्जव	4260711 (14.7)	465001(13.8)	9.1
3. बांड और डिबेंचर	900968(31.0)	1072973(31.9)	19.1
4. जमा राशियाँ	927817(31.9)	1090780(32.4)	17.6
5. उधार राशियाँ	426807(14.7)	495207(14.7)	16.0
अन्य देयताएँ	175493(6.0)	177294(5.3)	1.0
कुल देयताएँ	2906156	3363255	15.7

मद संपत्तियाँ	2011	2012	प्रतिशत परिवर्तन
1. नगद और बैंड शेष	65219(2.2)	67398(1.9)	3.3
2. निवेश	118023(4.1)	125559(3.7)	6.4
3. कर्ज एवं अग्रिम	2561759(88.2)	2982001(88.7)	16.4
4. मुनाए एवं पुनः मुनाए गए बिल	35422(1.2)	29636(0.9)	–16.3
5. अचल सपंत्तियाँ	5374(0.2)	5365(0.2)	–0.2
6. अन्य सपंत्तियाँ	186822(6.4)	153296 (4.6)	–17.9
कुल सपंत्तियाँ	2906156	3363255	15.7

स्त्रोतः–एक्जिम बैंक, नाबार्ड, तथा सिडनी को 31 मार्च को समाप्त तथा एनएचबी की 30 जुन को वर्ष समाप्त एक्जिम बैंक नाबार्ड, सिडनी तथा एनएचबी की लेखा परीक्षित विवरणियां।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

गैर बैंकिग वित्तीय संस्थाओं के संयुक्त वित्तीय विवरण से स्पष्ट है कि वित्तीय संस्थाओं के संपत्तियों एवं दायित्वों में 15.7 प्रतिशत का विस्तार हुआ है। वर्ष 2011 एवं 2012 में संस्थाओं के कोषों के प्रमुख स्त्रोत जमा राशियाँ बांड तथा डिबेंचर तथा उधार राशियाँ रही तथा वर्ष 2011 एवं 2012 में इनमें क्रमशः 19.1, 17.6 तथा 16.0 प्रतिशत की वृद्धि हुई तथा इन कोषों का मुख्य उपयोग कर्ज और अग्रिम के रूप में किया गया जिसमें वित्तीय संस्थाओं की कुल संपत्तियों में 415 से अधिक हिस्से का योगदान किया उपरोक्त तथ्य स्पष्ट करते है कि गैर बैंकिग वित्तीय संस्थाओं की देश के आर्थिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान रहा है जो वृद्धिगत रही है।

तालिका क्रमांक – 2
वित्तीय संस्थाओं द्वारा अर्जित संसाधन
(राशि दस करोड़ रूपये में)

संस्थाएँ	दीर्घावधि		अल्पावधि		विदेशी मुद्रा		कुल		कुल शेष राशि (मार्च के अंत तक	
	2010–11	1011–12	2010–11	1011–12	2010–11	1011–12	2010–11	1011–12	2010–11	1011 –12
एक्जिम बैंक	111	88	15	55	111	84	237	227	472	547
नाबार्ड	97	179	185	90	–	–	283	269	339	423
एनएचबी	75	555	295	827	–	–	370	1382	109	607
सिडनी	100	139	23	80	12	20	135	239	341	440
कुल	384	961	518	1052	123	104	1025	2117	1261	2016

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

स्त्रोतः एक्जिम बैंक, नाबार्ड, एनएचबी, सिडिबी की लेखा परीक्षित विवरणियां

दीर्घावधि कोषों के लिए बांड एवं डिबेन्चरों का तथा अल्पावधि कोषों के लिए निवेश प्रपत्र, सावधि जमा राशियों प्रतिज्ञा पत्र तथा मुद्रा बाजार के माध्यम से एकत्रण किया गया। इस प्रकार वर्ष 2010–11 तथा वर्ष 2011–12 में अल्पावधि कोषों में दुगनी वृद्धि तथा दीर्घावधि कोषों में लगभग तीन गुना वृद्धि हुई। विदेशी मुद्रा के स्त्रोतों में वर्ष 2010–11 की तुलना में वर्ष 2011–12 में कमी आई। इन कोषों का उपयोग गैर बैंकिग संस्थाओं द्वारा विभिन्न व्यापारिक संस्थाओं एवं सार्वजनिक संस्थाओं को अग्रिम देने हेतु किया गया गैर बैंकिग वित्तीय संस्थाओं द्वारा वर्ष 2010–11 तथा 2011–12 में स्वीकृत तथा वितरित वित्तीय सहायता का विवरण निम्न लिखित है–

तालिका क्रमांक – 3
गैर बैंकिग वित्तीय संस्थाओं द्वारा स्वीकृत और वितरित वित्तीय सहायता
(राशि दस करोड़ रूपये में)

श्रेणी	राशि				प्रतिशत वृद्धि या कमी	
	2010–11		2011–12		स्वीकृत	वितरित
	स्वीकृत	वितरित	स्वीकृत	वितरित		
1. भारत की सावधि ऋणदाता संस्थाएँ	545	472	478	478	–12.2	1.2
2. विशेषी कृत वित्तीय संस्थाऍ	9	5	11	8	21.3	66.8
3. निवेश संस्थाऍ	450	401	544	520	20.8	29.5
4. गैर बैंकिंग वित्तीय संस्थाऍ द्वारा प्रदत्त कुल सहायता	1004	878	1033	1006	2.9	14.5

स्त्रोतः सम्पूर्ण गैर बैंकिग वित्तीय संस्थाओं का वार्षिक विवरण प्रपत्र

भारतीय सावधि ऋणदाता संस्थाओं में आई एफसी आई सिडबी और आई आई बी विशिष्टी कृत वित्तीय संस्थाओं में आई.बी.सी.एफ., आई.सी.आई.सी.आई, टी.एफ.सी.आई. तथा निवेश संस्थाओं में एल.आई.सी, जी.आई.सी., एन.आई.आई.सी. और ओ.आई.सी. शामिल है।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

भारत की सावधि ऋणदाता संस्थाओं के द्वारा जहाँ वर्ष 2010–11 और 2011–12 के दौरान स्वीकृत सहायता में –12.2 प्रतिशत की कमी आई वही वितरित सहायता में 1.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसी प्रकार विशेषी कृत संस्थाओं द्वारा स्वीकृत सहायता में 21.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई वही वितरित सहायता में 66.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई इसी प्रकार निवेश संस्थाओं द्वारा स्वीकृत सहायता में 2.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई तथा वितरित सहायता में 14.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वित्तीय संस्थाओं द्वारा स्वीकृत तथा वितरित सहायता में वर्ष 2011–12 के दौरान वृद्धि हुई इसका मुख्य कारण निवेश संस्थाओं तथा विशिष्ट वित्तीय संस्थाओं द्वारा स्वीकृत तथा वितरित वित्तीय सहायता के वृद्धि है। आईएफसीआई द्वारा उपलब्ध की गयी स्वीकृत तथा वितरित राशि में कमी आई है।

उपरोक्त तथ्य स्पष्ट करते है कि गैर बैंकिग वित्तीय संस्थाएँ भारतीय अर्थव्यवस्था के आर्थिक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है इन संस्थाओं द्वारा अर्जित संसाधन तथा स्वीकृत एवं वितरित सहायता में वृद्धि हुई है जो संस्थाओं के वित्तीय विवरणों से स्पष्ट होता है कि संस्था के संपत्तियों एवं दायित्वों में विस्तार हुआ है जो संस्था के विकास को प्रदर्शित करते है। विश्व परिदृश्य में जहाँ वैश्विक मंदी का पूरे विश्व में प्रभाव दिखाई पड़ रहा है इन परिस्थितियों में भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करने में इन संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। इन संस्थाओं के आर्थिक संसाधनों के स्त्रोत का विस्तार किया जाना चाहिए तथा इन संस्थाओं के कार्य क्षेत्र का भी विस्तार किया जाना चाहिए। गैर बैंकिग वित्तीय संस्थाओं का कार्यक्षेत्र देश के विकसित क्षेत्रों तक है अतः इन संस्थाओं के कार्यक्षेत्रों का विस्तार सम्पूर्ण देशों में किया जाना आवश्यक है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ है कि गैर बैंकिग वित्तीय संस्थाओं के कोषों के स्त्रोत असंगठित अस्थिर तथा अस्पष्ट है। अतः उन में सुधार की आवश्यकता है।

स्त्रोत –

1. एन.डी.एस.आई. मासिक विवरणियां
2. सिडबी वित्तीय विवरणियां
3. एन.एच.बी. वित्तीय विवरणियां
4. एन.बी. एफ.सी.एन.डी.एस.आई. की मासिक विवरणियां
5. आई.डी.बी.आई. बैंक वित्तीय विवरणियां
6. नाबार्ड वित्तीय विवरणियां
7. भारतीय रिर्जव बैंक बुलेटिन

□□□

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

"Changing Dimensions of Indo-US Relations"

Dr. Aman Jha

India–United States relations (or Indo-American relations) refers to the international relations that exist between the Republic of India and the United States of America.

Despite being one of the pioneers and founding members of the Non-Aligned Movement of 1961, India developed a closer relationship with the Soviet Union during the Cold War. During that period, India's relatively cooperative strategic and military relations with Moscow and strong socialist policies had a distinctly adverse impact on its relations with the United States. After the dissolution of the Soviet Union, India began to review its foreign policy in an unipolar world, and took steps to develop closer ties with the European Union and the United States, in furtherance of its national interests. Today, India and the US share an extensive cultural, strategic, military, and economic relationship.[1, 2]

Ties under the Obama Administration (2009-present)

Just days into President Barack Obama's term, Secretary of State Hillary Clinton and India's External Affairs Minister agreed to "further strengthen the excellent bilateral relationship" between the two countries. Soon afterward, President Obama issued a statement asserting that, "Our rapidly growing and deepening friendship with India offers benefits to all the worlds citizens", and that the people of India "should know they have no better friend and partner than the people of the United States." As part of her confirmation hearing, Hillary Clinton told US senators she would work to fulfill President Obama's commitment to "establish a true strategic partnership with India, increase our military cooperation, trade, and support democracies around the world."

Despite such top-level assurances from the new US Administration, during 2009 and into 2010, many in India became increasingly concerned that Washington was not focusing on the bilateral relationship with the same vigor as did the previous. Many concerns arose in New Delhi that the Obama Administration was overly focused on US relations with China in ways that would reduce India's influence and visibility. In addition, the government of India was concerned that America was intent on deepening relations with India's main rival, Pakistan, in ways that could be harmful to Indian security and perhaps lead to a more interventionist approach to the Kashmir problem, that a new US emphasis on nuclear nonproliferation and arms control would lead to pressure on India to join such multilateral initiatives as the Comprehensive Test Ban Treaty (CTBT) and the Fissile Materials Cutoff Treaty, and that the Administration might pursue (so-called) protectionist economic policies that could adversely affect bilateral commerce in goods and services.

New Delhi has also long sought the removal of Indian companies and organizations from US export control lists, seeing these as discriminatory and outdated. Assistant Secretary of State for South and Central Asian Affairs Robert Blake contends that much progress has been made in this area, with

less than one-half of one percent of all exports to India requiring any license.

India also continued to seek explicit US support for a permanent seat on the United Nations Security Council. However, the Obama Administration said it recognized a "need to reassess institutions of global governance", and asserted that India's rise "will certainly be a factor in any future consideration of reform" of that Council.

Secretary of State Clinton was widely seen to have concluded a successful visit to India in July 2009, inking several agreements, making important symbolic points by staying at Mumbai's Taj Mahal hotel (site of a major Islamist terrorist attack in 2008), and having a high-profile meeting with women's groups. While in New Delhi, Clinton set forth five "key pillars" of the US-India engagement: (1) strategic cooperation, (2) energy and climate change, (3) economics, trade, and agriculture, (4) education and development, and (5) science, technology, and innovation.

In November 2009, President Obama hosted an inaugural state visit with Prime Minister Singh at the White House. Despite its important symbolism, the resulting diplomacy was seen by many proponents of closer ties as disappointing (if not an outright failure) in its outcome, at least to the extent that no "breakthroughs" in the bilateral relationship were announced. Yet from other perspectives there were visible ideational gains: the relationship was shown to transcend the preferences of any single leader or government, the two leaders demonstrated that their mutual strategic goals were increasingly well-aligned, and plans were made to continue taking advantage of complementarities, with differences being well-managed. Perhaps most significantly, the visit itself contributed to ameliorating concerns in India that the Obama Administration was insufficiently attuned to India's potential role as a US partner.

President Obama's May 2010 National Security Strategy noted that, "The United States and India are building a strategic partnership that is underpinned by our shared interests, our shared values as the world's two largest democracies, and close connections among our people," and "Working together through our Strategic Dialogue and high-level visits, we seek a broad-based relationship in which India contributes to global counterterrorism efforts, nonproliferation, and helps promote poverty reduction, education, health, and sustainable agriculture. We value India's growing leadership on a wide array of global issues, through groups such as the G-20, and will seek to work with India to promote stability in South Asia and elsewhere in the world."

June 2010 Strategic Dialogue

In June 2010, the United States and India formally re-engaged the US-India Strategic Dialogue initiated under President Bush when a large delegation of high-ranking Indian officials, led by External Affairs Minister S.M. Krishna, visited Washington, D.C. As leader of the US delegation, Secretary of State Clinton lauded India as "an indispensible partner and a trusted friend".[3] President Obama appeared briefly at a United States Department of State reception to declare his firm belief that America "will be one of the defining partnerships of the 21st century."[4] The Strategic Dialogue produced a joint statement in which the two countries pledged to "deepen people-to-people, business-to-business, and government-to-government linkages ... for the mutual benefit of both countries and for the promotion of global peace,

stability, economic growth and prosperity."[5] It outlined extensive bilateral initiatives in each of ten key areas: (1) advancing global security and countering terrorism, (2) disarmament and nonproliferation, (3) trade and economic relations, (4) high technology, (5) energy security, clean energy, and climate change, (6) agriculture, (7) education, (8) health, (9) science and technology, and (10) development.[6]

President Obama's planned travel to India

While US-India engagement under the Obama Administration has not (to date) realized any groundbreaking initiatives (comparable to that of the Bush Administration), it may be that the growing "dominance of ordinariness" in the relationship is a hidden strength that demonstrates its maturing into diplomatic normalcy. In this way, the nascent partnership may yet transform into a "special relationship" similar to those the United States has with the United Kingdom, Australia, and Japan, as is envisaged by some proponents of deeper US-India ties.

As the US President planned his November 2010 visit to India, an array of prickly bilateral issues confronted him, including differences over the proper regional roles to be played by China and Pakistan, the status of conflict in Afghanistan, international efforts to address Iran's controversial nuclear program, restrictions on high-technology exports to India, outsourcing, and sticking points on the conclusion of arrangements for both civil nuclear and defense cooperation, among others.

According to some foreign policy experts, Obama's India visit was going to change US approach towards India permanently. This was later proved when President Obama saw India as a prominent Great Power on the world stage and declared it as one of the most important allies of the US. President Obama also openly supported India's bid for a permanent seat in the United Nations Security Council. Obama's India Visit is seen by some foreign relations experts as the most successful US Presidential Visit to India.

Foreign policy issues

According to some analysts, India-US relations have been strained over the Obama administration's approach to handling the Taliban insurgency in Afghanistan and Pakistan.[7,8] India's National Security Adviser, M.K. Narayanan, criticized the Obama administration for linking the Kashmir dispute to the instability in Pakistan and Afghanistan, and said that by doing so, President Obama was "barking up the wrong tree."[9] Foreign Policy in February 2009 also criticized Obama's approach to South Asia, saying that "India can be a part of the solution rather than part of the problem" in South Asia. It also suggested that India take a more proactive role in rebuilding Afghanistan, irrespective of the attitude of the Obama Administration.[10] In a clear indication of growing rift between the two countries, India decided not to accept a US invitation to attend a conference on Afghanistan at the end of February 2009.[11] Bloomberg has also reported that, since the 2008 Mumbai attacks, the public mood in India has been to pressure Pakistan more aggressively to take actions against the culprits behind the terrorist attack, and that this might reflect on the upcoming Indian general elections in May 2009. Consequently, the Obama Administration may find itself at odds with India's rigid stance against terrorism.[12]

Robert Blake, Assistant Secretary of State for South and Central Asian Affairs, dismissed any

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

concerns over a rift with India regarding American AfPak policy. Calling India and the United States "natural allies",[13] Blake said that the United States cannot afford to meet the strategic priorities in Pakistan and

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

13. Reflections on U.S. - India Relations - Robert O. Blake
14. a b New Strategic Partnerships Robert O. Blake
15. India says it will oppose U.S. 'protectionism'
16. Anger Grows in India over U.S. Visa Rules
17. India may contest Obama's move against outsourcing in WTO '
18. Obama on outsourcing is no reason to panic'
19. U.S.-India Relations Strained under Obama
20. a b Remarks at U.S.-India Business Council's 34th Anniversary "Synergies Summit"
21. The China-India Border Brawl
22. U.S. OKs record $2.1 billion arms sale to India
23. Cohen, Stephen and Sanil Dasgupta. "Arms Sales for India". Brookings Institution. Retrieved 18 March 2011.
24. Indian Vote May Revive Stalled U.S. Defense, Nuclear Exports
25. Indo-U.S. nuclear deal in jeopardy
26. India warns Obama on nuclear test ban treaty
27. Hillary: fully committed to nuclear deal
28. India has emerged as a strategic partner for U.S.: Mullen
29. http://gsn.nti.org/gsn/nw_20100602_6708.php
30. "US India relationship is global in scope: Pentagon". 2 August 2012.
31. "Boeing Could Win Another Indian Helicopter Contract". 20 November 2012.
32. Stolberg, Sheryl (8 November 2010). [http://www.tribuneindia.com/2010/20100131/spectrum/main1.htmRichard Nixon visited India in 1969 after becoming the presiden t http://www.nytimes.com/2010/11/09/world/asia/09prexy.html "Obama Backs India for Seat on Security Council"]. The New York Times. Retrieved 8 November 2010.
33. Reynolds, Paul (8 November 2010). "Obama confirms U.S. strategic shift towards India". BBC. Retrieved 8 November 2010.

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

❑❑❑

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

भारतीय साहित्य और लोक मिथक

डॉ. नीलिमा भार्मा
सहायक प्राध्यापक
दुर्गा महाविद्यालय रायपुर (छ. ग.)

'भारतीय साहित्य' की अर्थ परिधि विस्तृत और कठिन है । विविध भाषाओं के साहित्य को हम भारतीय साहित्य के नाम से जानते हैं । यहाँ पंजाबी, उर्दू, हिन्दी, उत्तर पि चम की भाषा है, तो उड़िया, बंगला, असमिया पूर्वी प्रदे ा की, मराठी, गुजराती, मध्य पि चम की, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम दक्षिण प्रदे ा की । अन्य में क मीरी, डोंगरी, सिन्धी, कोंकणी आते हैं । सभी भाषाओं का अपना साहित्य है । जब हम हिन्दी साहित्य की बात करते हैं, तो खड़ी बोली के साहित्यकारों प्रसाद, पन्त निराला, अज्ञेय, य ापाल के साथ अवधी ब्रज मैथिली भाषाओं के साहित्यकार जायसी, सूर, तुलसी, विद्यापति की रचनाओं को स्वीकार करते हैं । विभिन्न भाषा, बोली में अभिव्यक्त होने वाला साहित्य एक है । डॉ. नगेन्द्र के अनुसार–'भारतीय मनीषा की अभिव्यक्ति का नाम भारतीय साहित्य है और भारतीय मनीषा का अर्थ है भारत के प्रबुद्ध मानस की सामूहिक चेतना – सहस्त्राब्दियों से संचित अनुभूतियों और विचारों के नवनीत से इसका निर्माण हुआ है । यह भारतीय मनीषा ही भारतीय संस्कृति, भारत की राष्ट्रीयता और भारतीय साहित्य का प्राणतत्व है ।'

भारतीय साहित्य में लोक मिथक इस प्रकार मिला है मानो दूध में पानी । साहित्य–सृजन में सत्य और कल्पना के अतिरिक्त जो तत्व सक्रिय हैं, उनमें पुराकथा, आद्यबिंब और फैंटेसी आते हैं । लोकानुभूति की ऐसी कथा जिसमें अलौकिकता का संकेत होता है । ऐसी कथा जिसमें आदिम वि वास के साथ अंधवि वास भाामिल हो, उनकी व्याख्या कठिन हो, एक धुंधलके में लिपटी हो ऐसी कथाओं और वि वासों को 'मिथक' भाब्द से जाना जाता है । मिथक में लोक कथा और आख्यानात्मक कथाओं का समावे ा रहता है । प्राचीन साहित्य में उपलब्ध देवता, राक्षस, गंधर्व, यक्ष, किन्नर मिथक के अंग बन गये हैं ।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते हैं–वाक्तत्व के साथ ही मिथक तत्व का आविर्भाव हुआ था । मिथक तत्व वस्तुतः भाषा का पूरक है । सारी भाषा इसी के बल पर खड़ी है । आदि मानव के चित्त में संचित अनेक अनुभूतियाँ मिथक के रूप में प्रकट होने के लिए व्याकुल रहती हैं । मिथक तत्व अपनी समस्त ऊर्जा के साथ किसी न किसी रूप में भाषा और साहित्य में जीवित हैं । यह किसी एक भाषा या एक दे ा के साहित्य में नहीं बल्कि वि व की सभी भाषाओं और साहित्यों में दिखाई देता है । मिथकों की प्रयोजनीयता का प्रमाण है । डॉ. सुरे ा भाुक्ल का नाटक 'अर्द्धनारी वर' भांकर और सती पुराकथा से हैं भांकर और सती का 'मिथ' हर युग के लिए प्रासंगिक है । इस 'मिथ' के मूल में हैं– भांकर और सती का प्रेम–विवाह और उनका सुखमय दाम्पत्य जीवन, दक्ष का अहम् जन्य प्रति ाोध और सती का आत्मदाह तथा भांकर और दक्ष के बीच घटित युद्ध । दुष्यन्त कुमार का एक कण्ठ विषपायी काव्य नाटक इसी श्रेणी का है । दक्ष का आतंक और अहंकार उसके परिवार और समाज, सभी क्षेत्रों में फैल गया । उसका दम्भ पुत्री तक को न्याय न दे सका । जिसके कारण सती को योगाग्नि में भस्म होना पड़ा । क्या कन्या के अपने विवाह में उसकी भागीदारी नहीं होती ? पिता, जिसके भी साथ चाहे उसे बाँध दे । आज कितने हैं, जिनका दाम्पत्य जीवन सुखी है ?दाम्पत्य जीवन के त्रासद होने के कारणों की खोज होनी चाहिए । भांकर और सती का 'मिथ' इस समस्या पर सोचने के लिए अनके तथ्य प्रदान करता है । आज की अनेक बहुएँ आत्महत्या कर रही हैं । प्रतिदिन इसमें वृद्धि हो रही है । कारण कई हो सकते हैं । 'एक दिन' एकांकी डॉ. लक्ष्मीनारायण द्वारा रचित उनके पात्र राजनाथ, भीला, मोहन और निरंजन के वार्तालाप में जनक, जानकी और राम, रावण का 'मिथ' प्रयोग किया गया है 'ह्यवदन', 'गिरी ा कर्नाड', 'इला', प्रभाकर श्रोत्रिय जैसी अनेक साहित्यिक कृतियाँ हैं, जिसमें 'मिथक' है ।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

'मिथक' भाब्द के अन्तर्गत हम किन कथाओं, उपाख्यानों, वि वासों और लोक–मान्यताओं को ले सकते हैं, इसका निर्णय अब तक नहीं हो सका है । यदि ऋग्वेद से लेकर आधुनिक युग तक व्याप्त समस्त पुराकथात्मक मिथकीय सन्दर्भों को समेटा जाय तो वृहत् भंडार होगा । भारतीय साहित्य में सृष्टि उत्पत्ति की कथा अनेक ग्रन्थों में है । डॉ. भयामाचरण दुबे कहते हैं–'व्यक्तिगत तथा सामाजिक आधार पर मिथक तथा प्रतीक बनते हैं । मुण्डकोपनिषद का मंत्र––

''द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिपक्व जाते ।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वादु अत्तिख्अन ननन्यो अभिचाक ीति ।।''

'दो पक्षी जो हमे ा एक साथ रहते हैं और मित्र हैं, एक ही वृक्ष पर बैठे हैं, एक पक्षी उस वृक्ष के के मीठे फल ;पिप्पलद्ध को स्वादपूर्ण खाता है और दूसरा केवल साक्षी रूप में बैठा है ।'' इसमें दो पक्षी जीव और आत्मा के प्रतीक हैं । कबीर साखियों, दोहों, पदों और उलटबांसियों में ये प्रतीक दिखाई देते हैं ––

एक अचंभा देखा रे भाई
ठाढ़ा सिंग चरावै गाई ।।

'कामायनी' में प्रसाद लिखते हैं ––

हिमगिरि के उत्तुंग ि ाखर पर
बैठ ि ाला की भीतल छाँह
एक पुरूष देख रहा था
भीगे नैनों से जल प्रवाह

राम की भाक्तिपूजा 'निराला' साकेत, य ोधरा में मैथिली ारण आदि अनेक साहित्यकारों के नाम हैं । छायावादी काव्य में जहाँ पौराणिक मिथक आये हैं, वे अत्यन्त व्यंजक और अप्रस्तुत विधान की दृश्टि से सटीक हैं ।

साहित्य को व्यापक परिप्रेक्ष्य में ग्रहण करते समय हम उसमें जगत् और जीवन की नाना समस्याओं को पाते हैं और साहित्य समाधान भी करता है । मिथक कथाएँ साहित्य की निधि हैं और समाज द्वारा स्वीकार होती हैं तथा लोक व्यवहार में भी चलने लगता है । मानव मिथक के माध्यम से अनदेखे जगत् में प्रवे ा करता है । मिथक बहुआयामी व्यापक स्वरूप है । वैदिक साहित्य से लेकर आधुनिक भारतीय भाषाओं के साहित्य तक मिथक विस्तृत है । हिन्दी काव्य में मिथकीय प्रयोगों की भरमार है । कुँवर नारायण के 'आत्मजयी', धर्मवीर भारती के 'अंधायुग' और 'कनुप्रिया', दिनकर के 'उर्व ी' आदि में ये देखे जा सकते हैं । मिथकों की ऊजप्त परम्परा वैदिक वाङमय, बौद्ध–जैन साहित्य, रामायण–महाभारत, पुराण अभिजात संस्कृत साहित्य, प्राकृत एवं अपभ्रं ा साहित्य तथा आधुनिक हिन्दी साहित्य तक है । इन मिथकों में भारतीय सांस्कृतिक परम्परा का रूप सुरक्षित है । भारतीय संस्कृति की मूलभूत चेतना निरन्तर पल्लवित होती रही है । मिथक साहित्य मनुष्य को मृत्यु के भय से दूर रहकर कार्य करने का आदे ा देता है । जैसे यम–नचिकेता संवाद । मिथक साहित्य दे ीय इतिहास के साथ–साथ अपना स्वरूप बदलता चलता है । भारतीय मिथक–साहित्य ने भक्ति के समस्त प्रकारों का सुन्दर अंकन प्रस्तुत किया है । भारतीय मिथक में 'देवता' की परिकल्पना बहुत प्राचीन है । देव, देवता, देवी और ऋषि–मुनि का उल्लेख भी मिलता है । विशमताओं में जीवन काटकर ही मनुष्य कुछ बन जाता है । भौतिक विषमताएँ जीव को दृढ़ और सुकर्मी बनाती हैं । इसी कारण आज जो देवता रूप में प्रतिष्ठित हैं, उन्होने जीवन में बहुत कष्ट झेले । मिथक कथाएँ इस तथ्य की पुष्टि करता है ।

हिन्दी साहित्य का उदभव और विकास लगातार मिथकों से जुड़ा हुआ है । लोकमंगल के उदार आद ों को लक्ष्य बनाने के कारण मिथक–कथाएँ आगे बढ़ती हैं । हिन्दी साहित्य का कोई भी युग मिथकीय अवचेतना से अछूता नहीं है । डॉ. भांकर भोष ने 'कोमलगांधार' नाटक में भीष्म के चरित्र को बदल दिया है । गांधारी का मन क्षुब्ध है कि अंधे धृतराष्ट्र से उसका विवाह क्यों किया गया ?इसी प्रकार 'एक और द्रोणाचार्य' में

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

वर्तमान अध्यापक की स्थिति का सुन्दर चित्र भांकर भोष ने निपुणता से व्यक्त किया । द्रोणाचार्य में वर्तमान युग दिखाई देते हैं । हिन्दी साहित्य में चिरकाल से मिथक कथाओं का प्रयोग हुआ । मिथकीय घटना और पात्र समाज के हर परिवे   ा के अनुरूप बदलते गये । आधुनिक हिन्दी साहित्य तक पहुँचते–पहुँचते वे बहुआयामी प्रयोगों का माध्यम बन गये । प्रयोगवादी साहित्यकारों ने नये उपमानों की खोज आरम्भ की फलतः मिथकों को चिर–प्राचीन परिपाटी से हटाकर एक नया मोड़ दिया । कैकेयी वीरांगना बनी, कौ   ाल्या पुत्र प्रेम में, रावण स   ाक्त संगीतज्ञ, राधा समाज सेविका और उर्मिला लक्ष्मण विरह में अकुलाने लगी ।

मिथक में कथात्मकता की प्रवृति के साथ धार्मिक माहात्म्य के कारण ही लोक संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में साहित्य कारों ने मिथक को धर्मगाथा के रूप मे भी संज्ञायित किया है। मिथक और लोककथा तात्विक दृष्टि से समान आधार रखते हैं । मिथक विश्लेषण में विद्वानों ने लोककथा को मिथक के ही एक भेद के रूप में विश्लेषित किया है । मूल रूप में मिथक ही एक परम्परागत कथा है जो अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्वरूप में विकासशील होती है । मिथक कथा परिवर्तित स्थितियों में क्रमश : विकास को प्राप्त होती है जो युग दर्शन या बदले सन्दर्भो में नवीन मूल्यों और मान्यताओं को अपने अन्दर समाहित करने की प्रवृत्ति रखती है । जैसे राम और कृष्ण मिथक का प्रयोग भिन्न – भिन्न युगों में साहित्यकारों ने अपने युग की मांग के अनुरूप ही किया है । अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध , ने प्रियप्रवास में कृष्ण मिथक का आधुनिक बुध्दिवादी धरातल पर जिस प्रकार उपयोग किया है , वह सूरदास के लीलामय कृष्ण मिथक प्रयोग से भिन्नयुग की विकासमान धारा के अनुरूप है । अन्धायुग में वर्णित कृष्ण मिथक का धरातल सर्वथा नये परिप्रेक्ष्य में द्रष्टव्य है । परिवर्तित स्थितियों को आत्मसात करने की प्रवृत्ति के कारण मिथक कथा नित्य नवीन बनी ाहती है। मिथक काल्पनिक कथा नहीं बल्कि यह मनुष्य के अनुभविक यथार्थ का संग्रह अथवा मूर्तरूप है । मिथ या मिथक शब्द के आविष्कारक हजारी प्रसाद द्विवेदी है। अर्थ गत सन्दर्भ की बात कहें तो , "मुँह से निकला हुआ", "आप्तवचन" अतर्क्य कथन। स्पष्ट है वेदों में मिथक साहित्य के सूत्र विद्यमान है। सूत्र, संवाद , गााथा , देवकथा पवित्राख्यान सभी में मिथक के लक्षणात्मक सूत्र संकेत उपलब्ध होते है । ऋग्वेद के अतिरिक्त अन्य संहिताओं भारती संस्कृति का संघठन जीवन में बिखरे अनन्त लाकाचारों संस्कारों एवं परम्परागत विचारों की नानारूप भेदात्मक स्थितियों से हुआ है ।

हिन्दी साहित्य में भी मिथक साहित्य का प्राचीन रूप दिखाई देता है । शौनक, द्याद्विवेद, षड्गुरूशिष्य आदि साहित्यकारों ने वैदिक मिथक का मन्थन प्रस्तुत किया है । वैदिक देवशास्त्र अत्यन्त विकसित था । वेद की व्याख्या करने वाले ब्राह्मण ग्रन्थों, संहिताओं, पुराणों, महाभारत, वृहद् देवता (भाष्यों) आदि में भी जो आख्यान आये है, वे भी प्राचीन मिथकों के दृष्टांत है । गाथा मिथक का उदात्त रूप प्रस्तुत करती है । यम–यमी संवाद, संवाद पुरूरवा – उर्वशी संवाद, शुनः शेपाख्यान तथा समुद्र मंथन, उर्वशी मेनका आदि की कथाएँ भी वैदिक मिथकों के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। मिथक और लोककथा तात्त्विक दृष्टि से समान आधार रखते है। मिथक विश्लेषण में विद्वानों ने लोक कथा को मिथक के एक भेद के रूप में विश्लेषित किया है । मिथक के अन्तर्गत लोक प्रचलित विश्वासों को धार्मिकता की प्रवृत्ति के साथ स्वीकार किया गया है । प्रसिद्ध विश्वकोश के अनुसार मिथक अलौकिक जगत की कहानियाँ है। भाषा में प्रयुक्त कई ऐसे शब्द है जो अपना एक मिथकीय सन्दर्भ रखते उदाहरणार्थ – भीष्म प्रतिज्ञा, ध्रुव सत्य, भगीरथ–प्रयत्न, भस्मासुर, चीरहरण, कंचनमृग, चक्रव्यूह आदि शब्द अमिधा से अधिक मिथकीय गूढ़ार्थो के व्यंजक है । साहित्य की दृष्टि से मिथक का रूप उसे बिम्ब , प्रतीक और पुराणों से जोड़ता है। सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय की भी मिथक के विश्लेषणोंपरान्त यही धारणा बनी कि, साहित्य के सन्दर्भ में उसका (मिथक का) जो रूप होना चाहिए, वह उसको बिम्ब से या प्रतीक से या पुराण से अलग नहीं करता, उनके साथ जोड़ता है।, प्राचीन एवं अर्वाचीन साहित्य इसका प्रमाण है कि साहित्य में मिथक का प्रयोग इस रूप में रूढ़ और मान्य होता जा रहा है।

जल प्लावन की कथा का मिथक रूप विश्व की प्रायः सभी संस्कृतियों में किसी न किसी रूप में

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

वर्णित है। पौराणिक प्रसंग के रूप में यह हमारी परंपरा में सुविदित है। पुराण पुराने को नये करने का व्यापार है, केवल इतना ही नहीं, वह पुराकथा को उसके देशकाल के दायरे से बाहर निकालकर सनातन बनाने तथा पूर्ण से पूर्णतर बनाने का भी व्यापार है । वह केवल देववृत नहीं है वह मनुष्य की चेतना के आयामों का परिमापन भी है। परिमापन कोई भी पूरा नही होता, इसलिए उसके निरंतर आयामों की व्याख्या देशकालानुसार होती है । सन् 1950 के बाद नयी कविता में सृजन के एक विशिष्ट उपादान की तरह प्रयुक्त होने लगा। पुराकथा रूपों से प्राप्त ज्ञान के माध्यम से समकालीन जीवनानुभवों की सर्जकीय अभिव्यक्ति करने की कला को मिथक कहा गया है । धर्मवीर भारती के अंधायुग ने छः हजार वर्ष पूर्व के अंधेपन को मिथक यथार्थ में ढाल कर बीसवीं शताब्दी के छठे दशक के अंधेपन का बोध कराया । नयी कविता के मिथक काव्यों में मानववादी प्रवृत्तियाँ चिंतन पर रही हैं। नयी कविता के मिथक काव्यों में कवियों ने मनुष्य का सब वस्तुओं का प्रतिमान खंडकाव्य महाभारत की कथा पर आधारित है कवि ने स्वर्गारोहण की घटना को समकालीन यथार्थ बोध से जोड़कर एक नयी अभिव्यक्ति प्रदान की है । इसके वर्तमान परिवेश की युगीन समस्याओं को उभारने की कोशिश की है। मानवीय गरिमा को कवि ने जीवन के यथार्थ – परिप्रेक्ष्य में उजागर किया है । कवि दुष्यन्त कुमार के बारे में यह चर्चित है कि वे वाणी के सम्राट थे । एक कण्ठ विषपायी की कथा में दूसरे विश्व युध्द में मानवीय मूल्यों के ह्रास की व्यंजना मिलती है। कवि शिवकथा से अनुप्राणित प्रस्तुत कृति में इतिवृत का सहारा लेकर सामयिक बोध और युगीन सन्दर्भों को अभिव्यक्त किया है। कवि चीन, भारत संबंधों के खट्टे – मीठे चिट्ठों को खोलने का प्रयास किया । चीनी आक्रमण के बाद भारतीय नेताओं द्वारा इस चुनौती को स्वीकार कर लेना और जिस प्रकार के निर्णय के लिए है , कवि को यह अच्छा नहीं लगता । रामधारी सिंह दिनकर भी परशुराम की प्रतीक्षा नामक कविता में दुष्यन्त कुमार की इसी पीड़ा को व्यक्त करते है। मिथक हिन्दी साहित्य के सहचर है। यही इनकी जीवनी शक्ति है। वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद्, महाभारत, रामायण, पुराण और इतिहास के मिथकीय संदर्भो के साथ ही समकालीन कविता में विज्ञान, हाइटेक और इंटरनेट संस्कृति द्वारा प्रदत्त लघु मिथक रूपों का भी प्रयोग होने लगा है ।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

1. भारतीय साहित्य – डॉ. नगेन्द्र, प्रभात प्रका न– 2007
2. भारतीय साहित्य – डॉ. रामछबीला त्रिपाठी, वाणी प्रका न– 2008
3. आज का भारतीय साहित्य – हिन्दी अनुवाद–प्रभाकर माचवे, साहित्य अकादमी – 2007
4. लोक साहित्य – डॉ. विद्या चौहान
5. भारतीय मिथक को – डॉ. उषा पुरी विद्यावाचस्पति, ने नल पब्लि िंग हाउस– 1998
6. अर्धनारी वर – डॉ. सुरे भुक्ल 'चन्द्र' प्रका न संस्थान–नयी दिल्ली, 2004
7. लोक वि वास और संस्कृति – डॉ. भयामाचरण दुबे
8. कामायनी – जय ंकर प्रसाद
9. कबीर – कबीर बानी, संकलन– यामसुन्दर दास

□□□

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय उद्यान एक पर्यटन स्थल का अध्ययन

जीतेन्द्र कुमार होता
भूगोल विभाग, दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर

प्रस्तावना–

राष्ट्रीय उद्यान एक ऐसा वन क्षेत्र है। यहां वन्य प्राणियों के प्राकृतिक आवासों एवं वन संसाधनों को संरक्षित रखा जाता है, तथा इनकी सुरक्षा एवं परिरक्षण अर्थात संकटापन्न प्रजातियों को विलुप्त होनें से बचाने का शासन का उचित प्रयास होता है। छत्तीसगढ़ में तीन राष्ट्रीय उद्यानों में सर्वप्रथम 12–05–1981 में इन्द्रावती राष्ट्रीय उद्यान के नाम से स्थापित किया गया है। जो राज्य का सबसे बडा राष्ट्रीय उद्यान है। यह स्थल भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों में स्थान है। इसके आस–पास क्षेत्रों में अनेक ऐसे धार्मिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक नदी–नाले, जलप्रपात, स्थल है। जिन्हे पर्यटक मनोरंजन के उद्देश्य से सैर करने प्रति वर्ष हजारो की संख्या में आते है। पर्यटन विकास के लिए–पर्यटन क्षेत्रों में सैर की सुविधा, पर्यटकों के लिए भोजन, विश्राम गृह, पानी की सुविधा, पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र हो। वर्तमान में छत्तीसगढ़ पर्यटन स्थल विकास के क्षेत्र में देश के प्रथम चार अग्रणी राज्य में चौथा स्थान रखता है।

उद्देश्य–

1. वन्य जीवों एवं वनस्पतियों का संरक्षण कर पर्यटन विकास के लिए अध्ययन करना।
2. स्थानीय लोगों को पर्यटन के महत्व को समझाना।
3. भविष्य में पर्यटन की संभावना को विकसीत करना।

परिकल्पना–

किसी भी क्षेत्र के पर्यटन विकास में प्राणियों कि संख्या का घटना असंतुलित पारिस्थितिकी तंत्र को प्रदर्शीत करता है। वन्य जीवों की संख्या तथा प्रजाति को संकटग्रस्त से बचाने तथा विलुप्त होने की स्थिति को रोकना आवश्यक है। पारिस्थितिकी पर्यटन क्षेत्र के विकास के लिए प्राकृतिक धरोहर तथा सौंदर्य को बना कर रखना है।

अध्ययन क्षेत्र–

छत्तीसगढ़ प्रदेश (17°46′ से 24°28′ उ. अक्षांश तथा 80°15′ से 84°24′ पूर्वी देशांतर) के मध्य विस्तृत है। छत्तीसगढ़ में तीन राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना 4439.391 वर्ग किमी क्षेत्रफल पर की गई है। इंद्रावती एवं कांगेर घाटी, गुरू घासीदास राष्ट्रीय उद्यान है। यह स्थल भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों में हैं।

शोध विधि तंत्र–

प्रस्तुत शोध पत्र के लिए द्वितीयक आकड़ो का उपयोग किया गया है एवं पर्यटन क्षेत्र की जानकारी छत्तीसगढ़ शासन द्वारा प्रकाशित विवरणीका, दैनिक समाचार पत्रों की सहायता से संकलित की गई है।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान

इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना 1978 में कुटरु अभ्यारण्य के नाम से किया गया बाद में 12–मई–1981 में इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान के नाम से छत्तीसगढ़ में प्रथम राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना की गई। यह राष्ट्रीय उद्यान बीजापुर जिले में विस्तृत है। बीजापुर से 50 कि. मी. दूर जगदलपूर–भोपालपट्नम मार्ग पर स्थित है। यहां सागौन के अतिरिक्त शीशम, बीजा, साजा, सरई, सेन्हा, तिनसा, तेन्दु, धावडा, साल, चार, इत्यादि प्रमुख वृक्षों के घने वन पाए जाते है। वन्य प्राणी में शेर, तेंदुआ, लकडबग्घा, भालू, वनभैंसा, चितल, सांभर, सियार, घडियाल, सांप तथा विभिन्न प्रकार के पक्षी में बाज, चील, हुदहुद, किंगफिशर, उल्लु, तोता, बगुला एवं मैना पाए जाते है। यह उद्यान वनभैंसों का निवास स्थल है।

प्रमुख पर्यटन क्षेत्र :–

भद्रकाली– भोपलपट्नम से 70 किमी दूरी पर इन्द्रावती एवं गोदावरी का संगम स्थल भद्रकाली पर्यटन स्थल के नाम से जाना जाता है। यह स्थल पर्यटकों के लिए बहुत ही सुंदर एवं मनमोहक है। जिससे पर्यटक यहां पिकनीक का आनन्द लेने पहुंचते है।

कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान

कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना 22–जुलाई–1982 को बस्तर जिले में किया गया है, राष्ट्रीय उद्यान प्रकृति की अद्‌भुत सौंदर्य लिए इस जिले में विस्तृत है। कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान के लिए वाहन सुविधा में जीप एवं कार होती है। रायपुर से 303 किमी जगदलपुर स्थित है, जहांसे आसानी पूर्वक यहां पहुँचा जा सकता है। देश के सबसे सघन वन इस राष्ट्रीय उद्यान को माना जाता है। यहां बेंत के वृक्ष सर्वाधिक पाए जाते है। इसके अतिरिक्त औषधियों में सफेद मुसली, काली मुसली, तेजराज, सतवर, रामदतौन, जंगली प्याज, जंगली हल्दी, तिखुर, सर्पगंधा, इत्यादि प्रमुख है। यहां प्राणी में बाघ, तेन्दुआ, लकडबग्घा, भालू ,सियार, चीतल, सांभर, घडियाल, विभन्न प्रकार के सांप तथा पक्षी में पहाडी मैना प्रमुख पाए जाते है।

प्रमुख पर्यटन क्षेत्र :–

1. कोटमसर गुफा – इस गुफा में हाथी मुंह जैसी रचनाए स्टेलेग्माइट तथा स्टेलेक्टाइट चूने के पत्थर से निर्मित हैं, इस गुफा की खोज 1900 में की गई थी तथा 1951 में डॉ शंकर तिवारी ने इसका सर्वेक्षण किया। इसका मुख्य मार्ग 330 मी. लम्बा तथा 20 से 72 मी. चौडा है। इस गुफा के निर्माण में प्रकृति को कितना समय लगा इसको बता पाना कठिन है। गुफा के धरातल में छोटे छोटे पोखर हैं, जिसमे अंधी मछलीयॉ तथा मेंढक पाए जाते है, यहां स्टेलेग्माइट शिवलिंग स्थित है। जिसे देखने लोग दूर–दूर से आते हैं। गुफा में सोलर लैम्प तथा गाइड की सहायता से सुहाना दृश्य देखा जा सकता है।
2. कैलास गुफा – इस गुफा के अंदर स्टेलेग्माइट तथा स्टेलेक्टाइट एवं डिपस्टोन की रचनाएं है, जो अत्यंत आर्कषक हैं। इसकी खोज अप्रेल 1993 में वन अधिकारी श्री कृष्ण अवतार एव सहयोगी कर्मचारी के द्वारा की गई । इस गुफा की लम्बाई 200 मी तथा चौडाई 35 से 50 मी तक है। अन्दर एक म्यज़िक सेंटर है जहां पर चूने की संरचना से टकराने पर संगीत की ध्वनि निकलती है। यहां पर शिवलिंग स्थापित है, जिसके दर्शन के लिए हजारों भक्त आते है।
3. दंडक गुफा– इस गुफा में स्टेलेटाइट तथा स्टेलेग्माइट की आर्कषण संरचना दिखाई देती है।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

इसकी खोज 1995 में की गई थी । जिसकी लम्बाई 200 मी, चौड़ाई 15 से 25 मी तथा गहरा भाग है। इसे दो भाग में विभाजित किया गया है। प्रथम भाग प्रवेश करने के पश्चात विशाल सभागृह है तथा दूसरे भाग में पहुंचने के लिए घुटने के बल पर सरक कर जाना पडता है। यहां कुएं के समान संरचना है। यहां सौर ऊर्जा से बिजली लगाई गई है।

तीरथगढ़ जलप्रपात – यह जलप्रपात 50 मी ऊचाई से गिरता है। जलप्रपात मुनगाबहार नाले पर है, यहां नीचे उतरने के लिए कांक्रीट की सीढियां बनी हुई है। यहां पर शिव पार्वती का मंदिर है।

4. भैसादरहा – यह एक प्राकृतिक झील है जिसका विस्तार कांगेर नदी पर 4 हेक्टर क्षेत्र पर है। यह घने बांस के वन एवं झुरमुटो के बीच स्थित है। जहां पर मगरमच्छ एवं कछुवों का प्राकृतिक आावास है। इस दरहा की गहराई 20 मी है। इसमें उतरना खतरनाक होता है। यह झील पूर्व दिशा में कोलावन नदी मे समा जाती है।
5. गुप्तेश्वर – कोलावन नदी उसकी सीमा निर्धारित करती है। यहा नदी के किनारे शिव मंदिर है। जहां पर्यटक एवं श्रद्धालु शिवरात्रि के अवसर पर दर्शन करनें आते हैं। शिव मंदिर में पहुचने के लिए नदी के ऊपर लकडी एवं बांस के पूल बनाए गए हैं, मंदिर के अंदर भाग में गुफा है।
6. दंतेश्वरी मंदिर – जगदलपुर के राजमहल के अंदर मां दंतेश्वरी का मंदिर है। देवी दर्शन के लिए नवरात्रि के समय श्रद्धालु बडी संख्या में आते है, जो यहां पर ज्योत जलाते है।
7. बालाजी मंदिर– यह मंदिर जगदलपुर शहर के अंदर स्थित है। जहांपर दक्षिण भारतीय श्रद्धालु अधिक दर्शन करने आते है।
8. कोलाब एवं कांगेर नदी का संगम स्थल– कोलाब एवं कांगेर नदी का संगम स्थल अत्यन्त रमणीय है। जहां पर कांगेर नदी का स्वच्छ जल एवं कोलाब का मटमैला पानी आपस में मिलते है। यहां से ओड़िसा की सीमा प्रारंभ होती है।

राष्ट्रीय उद्यान में पर्यटकों की संख्या

क्र.	राष्ट्रीय उद्यान	पर्यटक	2003	2004	2005	2007	2008	2009	2010	2011
1	कांगेरघाटी	भारतीय	28743	24587	37114	45819	51559	52064	39914	47638
		विदेशी	09	67	143	150	182	206	174	187

9. चित्रकोट जलप्रपात – यह स्थान जगदलपुर से पश्चिम की ओर 40 किमी दूरी पर स्थित है। जिसे पहले छिन्दक राजाओं के काल में चककोट के नाम जाना जाता था । इंद्रावती नदी के द्वारा 15 मीटर ऊचे जलप्रपात का निर्माण किया गया है। इस जलप्रपात के कुछ ही दूरी पर नीचे ऊपरी तल के किनारे शिवलिंग स्थापित है। लोगो की यह धारणा है कि शिवलिंग की स्थापना श्री रामचंद्र जी ने अपने श्रीलंका से आगमन के समय की थी। इस शिवलिंग की ऊंचाई 1.5 मीटर तथा गोलाई 1.5 मीटर है जो काले पत्थर से निर्मित है, यह बीच से टूट गया है। यहांपर हमेशा पानी की बूंद टपकता है। चित्रकोट में प्राचीन काल में छिंदक राजा निवास करते थे, छिंदक बस्तर के नांगवंश के रूप में प्रसिद्ध थे ।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

गुरू घासीदास राष्ट्रीय उद्यान

गुरू घासीदास राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना कोरिया जिले में दिनांक 7–अगस्त–2001 को किया गया है। यहां पहुंचने के लिए रायपुर से 369 कि.मी. बैकुण्ठपुर पहुंचकर जीप एवं कार के माध्यम से 35 कि.मी. दूरी पर सौनहत, रामगढ़ मार्ग पर गुरू घासीदास राष्ट्रीय उद्यान स्थित है, यहां साल, साजा, धावडा, कुसुम, तेन्दु, आंवला, आम, हल्दू, जामुन, कर्रा तथा बांस, इत्यादि के वृक्ष पाए जाते हैं। जीवों में चिंकारा, कोटरी, सांभर, चीतल, नीलगाय, गौर, जंगली सुअर, लंगुर, सेही, खरगोश, बंदर, जंगली मुर्गे, मोर, एवं मैना तथा सियार, लोमडी, भेडिया, लकडबग्घा, भालू, तेन्दुआ, बाघ, इत्यादि पाए जाते है।

प्रमुख पर्यटन क्षेत्र ं :–

1. खेकड़ा माडा हिलटाप :– इस ऊंचे भाग से राष्ट्रीय उद्यान के घने वन तथा यहां की घाटी एवं पहाड़ के मनोरम दृश्य,तथा वन्य जीवों को विचरण करते पर्यटक देख सकते है।
2. अमापानी :– यहां से गोपद नदी का उद्गम हुआ है। यहां से 6 कि.मी. की दूरी पर मेडरा पहाड़ से हसदेव नदी का उद्गम स्थल है। यहां से घाटियों एवं पहाड़ो के घने एवं दुर्गम वन दृश्य का मनोरंजन पर्यटकों द्वारा किया जा सकता है।
3. नीलकंठ जलप्रपात बसेरा :– यह जलप्रपात सघन वन से घिरा हुआ है जो 30 मीटर से अधिक ऊंचाई से गिरता है। यहां पर विशाल शिवलिंग स्थापित है, जो पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है।
4. च्युल जलप्रपात :– यह जलप्रपात च्युल से 5 कि.मी. की दूरी पर सघन वन से घिरा हुआ है 15 मीटर की ऊंचाई से गिरता है। इस सदाबहार जलप्रपात के नीचे जल कुंड है, जिसमें पर्यटक जल कीडा का आनंद ले सकते है।
5. गांगी रानी माता की गुफा :–यहां गांगी रानी माता विराजमान है जिससे इसका नाम गांगी रानी गुफा हो गया है। इसके पास में बहुत बड़ा तालाब है, जिसमें वर्ष भर पानी भरा रहता है। यहां पर रामनवमीं में मेला लगता है। जहां हजारो की संख्या में श्रद्धालु उपस्थित होते है।
7. सिद्बबाबा की गुफा :– यहां पर सर्प देवता स्वरूप में सिद्बबाबा का निवास स्थल है। यहां पर रामनवमी के दिन मेला लगता है। लोग यहां अपनी इच्छा पूर्ति के लिए मन्नत भी मांगते है।
8. आनन्दपुर :– यह स्थल सघन वन एवं पहाड़ियो से घिरा रमणीय स्थल है। यह चारो ओर से ऊंचे ऊंचे जलप्रपात एवं झरने से घिरा अत्यंत मनोहर एवं आंनददाई स्थल है।
9. बीजाधुर :– यह पहाडी नदी सदाबहार है, जो बीजाधुर नदी के नाम से जाना जाता है। यहां पर बैठकर राष्ट्रीय उद्यान के घने वन, पक्षियों के चह–चहाट एवं उनकी जल कीडा का आनन्द लिया जा सकता है।
10. नेऊर नदी :– खोहर पाट से नीचे उतरने पर सदाबहार बहती नेऊर नदी के चौडे पाट का दृश्य अत्यंत मनोहर है। नदी का जल भी गहरा है एवं यह एक रोमांचक पर्यटन स्थल है।
11. छतोड़ा की गुफा :– यह चट्टान के कटने से निर्मित गुफा है। यहां पर छतोड़ा गांव के ग्राम देवता की मूर्तियां है। यह छोटी सी गुफा दर्शनीय पर्यटन स्थल के रूप में सर्वाधिक महत्व रखता है।

पर्यटन स्थल विकास की संभावना–

पर्यटन विकास की संभावना में राज्य सरकार के प्रयास में राष्ट्रीय उद्यानों के आस–पास दर्शनीय स्थलों का संरक्षण कर विस्तृत जानकारी उपलब्ध किया जाए तथा स्थानीय लोगों से जनभागीदारी

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

की अपील की जाए जिससे पर्यटकों को आकर्षित कर संख्या में वृद्धि हो सके। निम्न लिखित उपाय अपनाना आवश्यक है।

1. पक्की सड़क मार्ग की उचित व्यवस्था तथा मार्ग दिशा एवं सामान्य जानकारी के पोस्टर लगे हों।
2. पर्यटन क्षेत्र में सौरऊर्जा से विद्युत की आपूर्ति हो।
3. पर्यटकों की सुविधा एवं सुरक्षा को ध्यान में रखा जावे तथा भ्रमण मार्ग व्यवस्थित हो।
4. पर्यटन स्थलों की पूर्ण जानकारी का इन्टरनेट, पत्रिका, समाचार–पत्रों से प्रचार हो तथा संस्कृति, परम्पराओं की जानकारी दी जाए।
5. विदेशी पर्यटकों के साथ ''मेहमान भगवान हैं'' सा व्यवहार हो।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

कुमार, कौशलेन्द्र	2007–08	प्रबंध आयोजन, तोमर पिंगला अभ्यारण्य
तिवारी, विजय कुमार	2001	छत्तीसगढ़ एक भौगोलिक अध्ययन, हिमालय पब्लिसिंग हाऊस, गिरगॉव, मुम्बई
मुख्य, वन संरक्षक	2006	छत्तीसगढ़ के राष्ट्रीय उद्यान एवं अभ्यारण्य, वन्य प्राणी संरक्षण छत्तीसगढ़ शासन वन विभाग, रायपुर
ममोरीया, चतुर्भुज	2009	भारत का वृहत भूगोल, साहित्य भवन आगरा
पर्यटन मंत्रालय,	1998	भारत में पारिस्थितिकी पर्यटन नीति तथा भारत सरकार दिशा निर्देश
गौतम, शिवानंन्द	2005	संसाधन एवं पर्यावरण, भारत का भूगोल, राम प्रसाद एण्ड संन्स
छत्तीसगढ़ संदर्भ	2001	देशबन्धु प्रकाशन, रायपुर

□□□

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

"विश्व को अधिक समृद्ध बनाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार अप्रतिबन्धित एवं मुक्त होना चाहिए एक आलोचनात्मक अध्ययन"

डॉ. गिरजा शंकर गुप्ता
सहा. प्राध्यापक दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर

किसी देश के आर्थिक विकास में विदेशी व्यापार के महत्व के सम्बन्ध में अर्थशास्त्री एकमत नहीं है। क्लासीकल तथा नव–क्लासीकल अर्थशास्त्री किसी देश के आर्थिक विकास के लिये विदेशी व्यापार को न केवल आवश्यक मानते थे बल्कि उन्होनें इसे विकास का इंजन **(engine of growth)** कहा है।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या विदेशी व्यापार किसी देश के आर्थिक विकास में सहायक है या बाधक है?हमारी राय में इस विवादास्पद प्रश्न का कोई निश्चित उत्तर तब तक नहीं दिया जा सकता जब तक कि अल्प–विकसित देशों के संदर्भ में विदेशी व्यापार के आर्थिक विकास को बढ़ावा देने वाले तथा उसकी अवरूद्ध करने वाले प्रभावों का तुलनात्मक विश्लेषण न कर लिया जाये।

विदेशी व्यापार आर्थिक विकास का एक प्रमुख स्त्रोत है।

विदेशी व्यापार आर्थिक विकास की लालसा उत्पन्न करता है, ज्ञान तथा अनुभव प्रदान करता है जो विकास की दिशा सम्भव बनाते है और इसे पूरा करने के साधन प्रदान करता है। विदेशी व्यापार के लाभ को दो भागों में बॉटकर अध्ययन करेंगे–

क. विदेशी व्यापार के प्रत्यक्ष लाभ –

(1) उत्पादन में वृद्धि – विदेशी व्यापार विशिष्टीकरण के सिद्धान्त पर आधारित है और विशिष्टीकरण का प्रभाव उत्पादन लागतों को घटाने का होता है। इस प्रकार पूंजी गहन तकनीक से उत्पादन बढ़ाने के लाभ अनायास ही प्राप्त होने लगते है।

(2) बाजार के आकार का विस्तार – बाजार का सीमित आकर अल्पविकसित देशों के विकास की सबसे बड़ी बाधा है क्योंकि यह उत्पादन की पर्याप्त मात्रा को खपा नहीं पाता। फलस्वरूप इन देशों में निवेश की प्रेरणा कमजोर होती है। बाजार का आकार इसलिये भी छोटा होता है क्योंकि प्रति व्यक्ति आय तथा क्रय शक्ति कम होती है। अतः विदेशी व्यापार के माध्यम से बाजार के आकार का विस्तार हो सकता है।

(3) उत्पादन के साधनों का कुशलतम् उपयोग – विदेशी व्यापार का सिद्धांत तुलनात्मक लागतों के अनुसार विशिष्टीकरण की मान्यता पर आधारित है। इसके अन्तर्गत वर्तमान साधनों का सर्वोपयुक्त ढंग से प्रयोग किया जाता है और प्रदत्त उत्पादन फलनों के साथ साधनों का

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

विभाजन अधिक दक्ष होने लगता है।

(4) उत्पादन की लागतों में कमी – चूँकि विदेशी व्यापार से बाजारों का विस्तार होता है जिससे अनेक प्रकार की आन्तरिक तथा बाहरी बचतें उत्पन्न होती है। फलस्वरूप उत्पादन की लागतें घट जाती है।

(5) निर्वाह क्षेत्र का मौद्रीकुल क्षेत्र में रूपान्तरण – विदेशी व्यापार कृषि उपज के लिये विस्तृत बाजार उपलब्ध कराता है। इससे निर्वाह क्षेत्र (**subsistence sector**) मौद्रीकृत क्षेत्र (**monetized sector**) में बदलने लगता है जिसके फलस्वरूप कृषि क्षेत्र में आय तथा जीवन स्तर ऊँचा हो जाता है।

ख. परोक्ष लाभ –

(1) औद्योगीकरण को प्रोत्साहन – एक विकासशील देश को अपने औद्योगीकरण के लिये प्रायः तीन प्रकार के आयातों की आवश्यकता होती है जो केवल अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार द्वारा ही सम्भव हो सकता है। (अ) विकासात्मक आयात जैसे मशीनरी, उपकरण, पूँजी पदार्थ आदि (ब) परिशोषक आयात जैसे अन्तर्वर्सी वस्तुयें व कच्चा माल तथा (स) अव–स्फीतिकारी आयात।

(2) आय और रोजगार में गुणक विस्तार – जब देश से वस्तुओं का निर्यात किया जाता है तो उससे घरेलू उद्योगों को आय प्राप्त होती है जिससे उनमें लगे श्रमिकों की आय भी बढ़ जाती है। जब इस बढ़ी हुई आय को उपभोग वस्तुओं पर खर्च किया जाता है तो उससे उपभोक्ता वस्तु उद्योगों का विकास होता है और घरेलू आय कई गुना बढ़ जाती है। इस प्रकार विदेशी व्यापार गुणंक के अनुपात में निर्यातों द्वारा जनित (**generated**) रोजगार व आय में गुणित रूप में वृद्धि होती चली जाती है।

(3) अधिक पूँजी निर्माण – विदेशी व्यापार का प्रभाव साधनों के कुशल वितरण के रूप में वास्तविक आय और उसके फलस्वरूप बचत क्षमता को बढ़ाने का होता है। बचत करने की क्षमता के अलावा विदेशी व्यापार निवेश प्रेरणा को भी बढ़ाता है जिससे पूँजी निर्माण की सम्भावना बढ़ जाती है।

(4) विदेशी पूँजी के आयात को बढ़ावा – प्रो. हैबर्लर के अनुसार "अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार विदेशी पूँजी की धनी देशों से निर्धन देशों में गतिशील करने का एक सशक्त माध्यम है।" एक अल्प विकसित देश कितनी मात्रा में विदेशी पूँजी प्राप्त कर सकता है।

(5) शिक्षाप्रद प्रभाव – सीमित चिन्तन तथा सीमित सम्पर्क सीमित विकास का प्रतीक है। इस अर्थ में विदेशी व्यापार का शिक्षाप्रद प्रभाव यह है कि इससे अल्प विकसित देशों के निवासी विकसित देशों के सम्पर्क में आते हैं जिससे उनके विचारों, कुशलताओं, आकांक्षाओं तथा तकनीकी ज्ञान में वृद्धि होती है जोकि आर्थिक विकास के लिये नितान्त आवश्यक है।

(6) अकुशल एकाधिकारों पर रोक – अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का सिद्धान्त एक प्रकार से खुली प्रतियोगिता या सत्ता शक्तिशाली के हाथों में की धारणा पर आधारित है। इस दृष्टि से विदेशी व्यापार स्वस्थ प्रतियोगिता का पोषण करता है और शिशु उद्योग संरक्षण का सहारा

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

लेकर पनपने वाले अकुशल एकाधिकारों तथा इकाइयों पर रोक लगाता है। एक अर्थव्यवस्था जितनी अधिक प्रतिस्पर्धात्मक होती है वह उतनी ही अधिक कुशल भी होती है इस दृष्टि से भी विदेशी व्यापार का अपना विशेष महत्व है।

विदेशी व्यापार आर्थिक विकास को अवरूद्ध करता है –

आधुनिक अर्थशास्त्रियों जैसे प्रो. सिंगर, रॉल प्रैबिश तथा गुन्नार मिर्डल के अनुसार ऐतिहासिक दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार ने अल्प विकसित देशों के आर्थिक विकास में बाधायें उत्पन्न की हैं और स्वतन्त्र व्यापार के संस्थापित सिद्धांत ने अन्तर्राष्ट्रीय असमानताओं को बढ़ावा दिया है। विदेशी व्यापार आर्थिक विकास में निम्न रूप से बाधक रहा है–

(1) पूँजी की अन्तर्राष्ट्रीय गतिशीलता का प्रतिकूल प्रभाव – धनी देशों से निर्धन देशों में गतिशील होने वाली पूँजी ने इन पिछड़े देशों का एकपक्षीय विकास किया है। विदेशी पूँजी के आयात से केवल निर्यात प्रधान क्षेत्र (प्राकृतिक साधनों) का तो विकास किया गया है जबकि घरेलू क्षेत्र उपेक्षित बना रहा है।

आलोचना – हमारी दृष्टि में यह आरोप निराधार है कि विदेशी निवेश घरेलू क्षेत्र के मार्ग में बाधक रहा है। इस बात का कोई ऐतिहासिक तथा अनुभव जन्य प्रमाण भी नही मिलता है। और फिर मुख्य बात तो यह है कि अल्प विकसित देशों के निर्यात क्षेत्र में, विदेशी निवेश के प्रेरित होने का मुख्य कारण घरेलू बाजार का छोटा आकार और सहयोगी साधनों का अभाव होना रहा है, न कि विदेश निवेशकर्त्ताओं की शोषण प्रवृत्ति।

(2) अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनकारी प्रभाव का प्रतिकूल प्रभाव – विदेशी व्यापार के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनकारी प्रभाव ने अल्पविकसित देशों के विकास में बाधा पहुँचायी है। विकसित देशों के रहन–सहन और उपभोग के तौर–तरीकों की नकल करने की प्रवृत्ति से अल्प विकसित देशों में उपभोग की प्रवृत्ति बढ़ी है जिससे घरेलू बचतों में कमी आई है और फलस्वरूप इनकी पूँजी निर्माण की क्षमता घट गयी है।

आलोचना – यह आरोप भी अधिक सही नहीं है। हमारी दृष्टि से प्रदर्शनकारी प्रभाव धनात्मक विकास प्रभाव रखता है और उच्च जीवन स्तरों और श्रेष्ठ उपभोक्ता वस्तुओं का अनुकरण, कम विकसित देशों के निवासियों को उत्पादकता बढ़ाने तथा संवर्द्धित प्रयास करने के लिये अधिक प्रेरित करता है।

(3) व्यापार की शर्तों की निरन्तर प्रतिकूलता – अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का एक अन्य दुश्प्रभाव निर्धन देशों के लिये व्यापार की शर्तों की निरन्तर प्रतिकूलता है जिसका प्रभाव निर्धन देशों से धनी देशों की आय का हस्तान्तरण करने का होता है। विदेशी व्यापार ने धनी देशों की दरिद्र देशों की लागत पर ही विकसित होने का अवसर दिया है जिससे इन देशों की वास्तविक आय तथा विकास क्षमता घट गयी है।

आलोचना – पहली बात तो यह है कि व्यापार की शर्तों की निरन्तर प्रतिकूलता का तर्क पुराने तथा अपर्याप्त आँकड़ों पर आधारित है जिनका सम्बन्ध 1870 से 1930 के बीच इंग्लैण्ड में

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

तैयार किये गये वार्षिक सूचकांक से है। ब्रिटिश सूचकांक अथवा उससे निकाले गये निष्कर्षों को अन्य औद्योगिक देशों का सही प्रतिनिधित्व करने वाला नहीं माना जा सकता है। दूसरा, अल्प विकसित देशों के व्यापार का स्वरूप पिछले कुल वर्षों से काफी बदल चुका है और अब वे केवल प्राथमिक वस्तुओं के निर्यातक और निर्मित वस्तुओं के आयातक ही नहीं रह गये है। तीसरा, निर्मित उपभोक्ता वस्तुयें इन देशों के कुल आयातों का मुश्किल से 10 प्रतिशत होती है। अतः अल्प विकसित देशों की व्यापार शर्तों की निरन्तर प्रतिकूलता को यदि कोई कारण है तो विश्व व्यापी स्फीतिकारी दबाव है जिनसे लागतें तथा कीमतें बढ़ी है और फलस्वरूप यह बाह्य घाटा उत्पन्न हुआ है।

निष्कर्ष – अतः यह सोचना गलत है कि विदेशी व्यापार ने अन्तर्राष्ट्रीय असमानता को जन्म दिया है और पिछड़े देशों के विकास को अवरूद्ध किया है। सच तो यह है कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार ने आर्थिक विकास के इन्जन, प्रगति के प्रेरणा–स्त्रोत और औद्योगिकरण के सशक्त यन्त्र के रूप में कार्य किया है। विदेशी व्यापार ने विश्व धरातल पर विशिष्टीकरण के नये अवसर पैदा किये हैं जिनका लाभ प्रमुख रूप से प्राथमिक वस्तुओं का उत्पादन करने वाली अर्थव्यवस्थाओं ने उठाया है। विदेशी व्यापार ने अशोषित प्राकृतिक साधनों के विदोहन को सम्भव बनाया है, बाजारों का विस्तार किया है और सुप्त आकांक्षाओं को जगाकर विकास प्रेरित बनाया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रूद्रदत्त के.पी.एम. सुन्दरम, भारतीय अर्थव्यवस्था नवीन संस्करण एस चंद पब्लिकेशन
2. आर्थिक विकास एवं नियोजन, एस.पी. सिहं संस्करण 2007 एस. चंद पबिलकेशन, नई दिल्ली
3. डॉ. जगदीश नारायण मिश्र, भारतीय अर्थव्यवथा संस्करण 2008 किताब महल पब्लिकेशन इलाहाबाद
4. भारत में आर्थिक नियोजन – डॉ. विमल कुमार जैन कालेज बुक डिपो नई दिल्ली
5. आर्थिक समीक्षा 2008–09 भारत सरकार

□□□

DMV Journal
Annual Journal of Durga Mahavidyalaya, Raipur (C.G.)

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

रायपुर जिले में उपलब्ध धान की किस्में एवं भूमि के प्रकार

डॉ. श्रीमति ऋचा पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य),
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ0ग0)

प्रस्तावना :—

चावल के वैश्विक व्यापार परिणाम में आ रही गिरावट का एक प्रमुख कारण वैश्विक बाजार में चावल की कीमतों में गिरावट का दौर रहना है । चावल की औसत कीमत जनवरी 1999—350 डॉलर प्रति मीट्रिक टन से नीचे गिरकर वर्ष 2001 के मध्य में 170 डॉलर प्रति मीट्रिक टन तक निचले स्तर पर आ गई, इस प्रकार पांच वर्षों की अल्पावधि में ही चावल की औसत कीमत घटकर आधे से भी कम रह गई । चावल की कीमतों में गिरावट की कुंजी बड़े निर्यातक देशों के पास है जिनके पास चावल के वैश्विक भण्डार का 85 प्रतिशत तक भण्डार है वही निर्यातक चावल के वैश्विक बाजार में कीमत निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । वैश्विक स्तर पर खाद्य सुरक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने की दृष्टि से चावल की कीमतों में कमी एक सकारात्मक तथ्य हो सकता है, क्योंकि इससे समाज के उस वर्ग को चावल उपलब्ध हो सकेगा जो इसकी ऊंची कीमत के कारण इसे खरीदने की स्थिति में नहीं थे ।

चावल विश्व की आधी से अधिक जनसंख्या का प्रमुख भोजन है। विश्व के कुल चावल क्षेत्र का 28 प्रतिशत तथा उत्पादन का 24 प्रतिशत भारत में है। धान विश्व की एकमात्र ऐसी फसल है, जो कि 3000 फिट की ऊँचाई से लेकर 4 मीटर गहरे पानी तक में उगाई जा सकती है। धान की फसल हर प्रकार की भूमियों में एवं हर प्रकार के जलवायु में ली जा सकती है। धान की खेती की पद्धति अत्यंत सरल किंतु पूर्णतः वैज्ञानिक है। चावल में मनुष्य के लिये आवश्यक पोषक तत्व जैसे कार्बोहाईड्रेट, प्रोटीन, वसा, खनिज एवं विटामिन्स उपलब्ध होते है। चावल विश्व की बहुसंख्यक गरीब जनता की खाद्य एवं पोषण सुरक्षा का प्रमुख साधन है। यह देखा गया है कि जहाँ भी धान की खेती प्रमुखता से की जाती है, वहाँ भी भूमिगत जल स्तर उच्च बना रहता है, क्योंकि धान की खेती की पद्धति ही ऐसी है कि जिसमें स्वतः ही सतत् भूमिगत जल का भराव वर्षा जल द्वारा होता रहता है।

छत्तीसगढ़ राज्य में कुल धान क्षेत्र 37.5 लाख हेक्टेयर है, मगर यहाँ की उत्पादकता जो 1980 में लगभग 100 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर थी उसमें किंचित वृद्धि 1314 कि.ग्रा. हुई है, जो कि देश की औसत धान उत्पादन (1921 कि.ग्रा. / हे.) से काफी कम है। अतः इसके उत्पादन में वृद्धि करना अति आवश्यक है।

छत्तीसगढ़ को भौगोलिक आधार पर तीन कृषि जलवायु क्षेत्र :—

छत्तीसगढ़ का मैदान, बस्तर का पठार एवं उत्तरी पहाड़ी भाग में विभाजित किया गया है। छत्तीसगढ़ में धान के अंतर्गत 38.27 लाख हेक्टेयर क्षेत्र आता है, जिसमें 28.07 (73.34 प्रतिशत) लाख हेक्टेयर रकबा छत्तीसगढ़ के मैदान में, 4.62 (12.07 प्रतिशत) लाख हेक्टेयर रकबा बस्तर के पठार में एवं 5.57 (14.68 प्रतिशत) लाख हेक्टेयर रकबा उत्तरी पहाड़ी क्षेत्र में आता है। छत्तीसगढ़ में धान की खेती का रकबा तथा उत्पादकता निम्नलिखित है :—

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

तालिका : 1.1

धान की खेती का रकबा एवं उत्पादकता

विवरण		सिंचित क्षेत्र 000 हे.	असिंचित क्षेत्र 000 हे.	कुल क्षेत्र 000 हे.	सिंचित	उत्पादकता (क्वि./हे.) असिंचित औसत
छ.ग. का मैदान	919.233	1887.90	2801.37	1649	1107	1398
बस्तर का पठार	6.522	456.462	462.984	17978	1016	1406.5
उत्तरी पहाड़ी क्षेत्र	7.119	549.894	557.013	1894	1019	1456.5
छ.ग. कृषि सांख्यिकी	1998—99					

भूमि के प्रकार :—

छत्तीसगढ़ क्षेत्र में मुख्यतः चार प्रकार की भूमि पायी जाती है। कमोवेश अधिकांश गांवों में इन्हीं भूमियों में धान की खेती की जाती है। जिनकी बनावट तथा संरचना भिन्न—भिन्न गुण—धर्म वाली होती है। इन भूमियों का संक्षेप में विवरण निम्न प्रकार है :—

(1) भाठा :—

यह बहुधा ऊँची जगहों में पाई जाती है तथा इसका रंग लाल मुरूम के जैसा दिखाई देता है। यह ज़मीन बहुत कम गहरी (15—45 से.मी.) होती है, तथा नीचे की सतह पर लाल रंग के बड़े—बड़े कण मिलते है। इसकी उर्वरा शक्ति बहुत कम होती है।

(2) मटारसी :—

यह भूमि भाटा से अधिक तथा डोरसा भूमि से हल्की होती है। इसका रंग पीला—भूरा होता है तथा धान की कास्त के लिये सर्वथा उपयुक्त होती है। इसकी गहराई 1—1.5 मीटर होती है तथा भाटा भूमि से ज्यादा जल धारण क्षमता होती है।

(3) डोरसा :—

यह भूमि रंग तथा गुणों के आधार पर मटारसी तथा कन्हार भूमि के बीच की श्रेणी में आती है। यह न तो कन्हार मिट्टी जैसी काली तथा भारी होती है कि बरसात के मौसम में हल चलाना कठिन हो सके और न ही इतनी हल्की होती है कि हर सप्ताह इसमें सिंचाई देना पड़े। इसकी जल धारण क्षमता मटारसी भूमि की तुलना में काफी अधिक होती है।

(4) कन्हार :—

यह भूमि भारी, गहरी व काली होती है। वर्षा—ऋतु में अधिक जल ग्रहण क्षमता होने से इसमें हल चलाना मुश्किल होता है। इसकी जल धारण क्षमता सभी प्रकार की भूमियों में सर्वाधिक होती है तथा रबी

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

फसलों के लिये उपयोगी है।

उपरोक्त भू–रचना तथा असिंचित–सिंचित परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुये धान जातियों का चुनाव करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। छत्तीसगढ़ अंचल में लगभग 77 प्रतिशत धान की खेती असिंचित अवस्था (वर्षा आधारित) में की जाती है। जिसकी भूमि स्थिति का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है :–

1– उच्च भूमि (अपलेन्ड) :–

यह वह स्थिति है, जिसमें धान के खेत जमीन के धरातल की ऊपरी सतह पर स्थित होते है और वर्षा का पानी ज्यादा समय तक रूका हुआ नहीं रहता है तथा रिसकर नीचे वाली भूमि में चला जाता है। सूखा का सबसे अधिक प्रभाव इन भूमियों पर पड़ता है। जिससे फसल उत्पादन अधिक प्रभावित होता है।

2– मध्यम उच्च भूमि (मिडलेण्ड) :–

यह भूमि उच्च भूमि के नीचे वाले स्थान में होती है, जिसमें वर्षा का पानी उच्च भूमि की अपेक्षा कुछ अधिक समय (मध्यम) तक रहता है एवं सूखे की स्थिति में फसल ज्यादा प्रभावित नही होती है।

3– निचली भूमि (लो–लेण्ड) :–

इस भू स्थिति वाली भूमि मध्यम भूमि के नीचले वाले भाग में स्थित होती है। जिसमें वर्षा का जल काफी समय तक रूकता है तथा सूखे की स्थिति से प्रभावित नही होती है।

अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि भूमि की स्थिति एवं संरचना तथा उपलब्ध नमी को ध्यान में रखते हुए उन्नतशील धान जातियों का चुनाव करना आवश्यक है। इसको ध्यान में रखते हुए विभिन्न परिस्थितियों जैसे – असिंचित, सिंचित, सुगंधित, करगा प्रभावित तथा कीट व्याधि वाले क्षेत्रों के लिये विभिन्न जातियों को लगाये जाने की अनुशंसा की जाती है।

विभिन्न क्षेत्रों के लिए धान की उपयुक्त जातियां :–

असिंचित एवं सिंचित क्षेत्रों में स्थित भूमि संरचना के अनुसार धान की विभिन्न जातियों को लगाये जाने की अनुशंसा की जाती है, साथ ही साथ विशेष परिस्थितियों एवं आवश्यक उपयोगिताओं हेतु धान की किस्में की जानकारी निम्न प्रकार है :–

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

तालिका : 1.2
असिंचित उच्च भूमि (अपलेण्ड) परिस्थिति हेतु अनुशंसित किस्में और उनके गुण

भूमि के प्रकार	किस्म	अवधि (दिनों में)	सामान्य उपज क्षमता (क्वि.हे.)	विवरण
हल्की भूमि	कलिंगा 3	80–90	25	अति हरूना, मध्यम ऊँचा कद, लंबा पतला दाना कमजोर तना खरपतवार प्रतिस्पर्धा।
	वनप्रभा	85–95	20	– तदैव –
भारी भूमि	आदित्य	85–95	25	अति हरूना, बौनी, मोटा दाना, ब्लास्ट प्रतिरोधी।
	तुलसी	100–110	30	– तदैव –
	अन्नदा	100–110	30	हरूना, बौनी लंबा पतला दाना, सूखा सहनशील।
	दंतेश्वरी	100–110	30	हरूना, बौनी, लंबा, पतला दाना, गंगई निरोधक, ग्रीष्म खेती के लिए उपयुक्त।

तालिका : 1.3
मध्यम भूमि (मिड–लेण्ड) परिस्थिति हेतु अनुशंसित किस्में और उनके गुण

भूमि के प्रकार	किस्म	अवधि	सामान्य (दिनों में) क्षमता (क्वि.हे.)	विवरण उपज
हल्की भूमि	पूर्णिमा	100–110	35	हरूना, बौनी, लंबा, पतला दाना, सूखा सहनशील।
	तुलसी	100–110	35	बौनी, हरूना, मोटा दाना, ब्लास्ट प्रतिरोधी।
	अन्नदा	100–110	35	हरूना, बौनी, मोटी दाना, सूखा सहनशील
	दंतेश्वरी	110–110	35	हरूना, बौनी, लंबा, पतला दाना, गंगई निरोधक ग्रीष्म खेती के लिये उपयुक्त।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

भारी भूमि	आई.आर.	110–120	40	बौनी, लंबा पतला दाना, तवा, छेदक, गंगई, ब्लास्ट, ब्लाईट, लौह एवं जस्ते की न्यूनता के प्रति सहनशील।
	आई.आर.	110–120	40	बौनी, लंबा पतला दाना, ब्लास्ट सहनशील 64 किस्म।
	क्रांति	125–130	45	बौनी, मोटा दाना सूखा सहनशील पोहा निर्माण में उपयुक्त, उच्च उपज क्षमता।
	महामाया	125–130	45	बौनी, मोटा दाना, पोहा बनाने में उपयुक्त सुखा प्रतिरोधी एवं गंगई विरोधक उच्च उपज किस्म।

तालिका : 1.4
असिंचित निचली भूमि (लो–लेण्ड) परिस्थिति हेतु अनुशंसित
किस्में और उनके गुण

भूमि के प्रकार	किस्म	अवधि (दिनों में)	सामान्य उपज क्षमता (क्वि.हे.)	विवरण
हल्की	अभया	120–125	35	बौनी, गंगई (बायोटाईप 1 एवं 4 के भूमि ए प्रतिरोधी) ब्लॉस्ट प्रतिरोधी, बारीक दाना।
	क्रांति	125–130	45	बौनी, पोहा एवं मुरमुरा उत्पादक उपयुक्त, मोटा दाना, उच्च उपज क्षमता एवं सूखा सहनशील।
	महामाया	125–130	50	उपरोक्त समान एवं गंगई प्रतिरोधी।
भारी भूमि	सफरी–17	140–145	40	ऊँची, लंबा बारीक दाना, सूखा, सहनशील
	मासूरी	140–145	40	ऊँची, मध्यम, बारीक तथा उच्च गुणवत्ता युक्त दाना।
	बम्लेश्वरी	135–140	50	बौनी, मोटे दानों वाली पोहा एवं मुरमुरा निर्माण हेतु उपयुक्त उच्च उपज क्षमता।
	स्वर्णा	140–150	45	बौनी, मध्यम प्रकार के दानों एवं उच्च उपज क्षमता।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

तालिका : 1.5
सिंचित परिस्थितियों हेतु उपयुक्त किस्में

क्र.	किस्म	सामान्य उपज (क्वि./हे.)	क्र.	किस्म (क्वि./हे.)	सामान्य उपज
1.	आई.आर.–36	40–50	6.	अभया	40–45
2.	आई.आर–64	40–50	7.	पूसा बासमती–1	45–50
3.	क्रान्ति	50–60	8.	स्वर्णा	50–60
4.	महामाया	60–65	9.	बम्लेश्वरी	60–65
5.	माधुरी	40–45	10.	साली वाहन	50–55

तालिका : 1.6
विशेष परिस्थितियों के लिए धान की उपयुक्त किस्में

क्र.	परिस्थिति	उपयुक्त किस्में
1.	गंगई प्रभावित क्षेत्र	अभया, महामाया, दंतेश्वरी
2.	ब्लॉस्ट प्रभावित क्षेत्र	अभया, तुलसी, आदित्य
3.	ब्लाईट प्रभावित क्षेत्र	बम्लेश्वरी
4.	बहरा भूमि	सफरी 17, मासुरी, स्वर्णा, साली वाहन, बम्लेश्वरी
5.	सूखा प्रभावित क्षेत्र	कलिंगा 3, अभया, पूर्णिमा, क्रांति, तुलसी, आदित्य
6.	सुगंधित किस्में	पूसा बासमती–1, माधुरी।

तालिका : 1.7
निम्नलिखित धान की किस्मों की भी भविष्य में फसल की अच्छी संभावनाएँ

क्र.	किस्में	गुण
1.	इंदिरा	गंगई प्रतिरोधी / मध्यम, भूमि एवं सिंचित अवस्था के लिए उपयुक्त / सुगंधित मध्यम पतला दाना / खाने हेतु उपयुक्त / पकने की मध्यम अवधि एवं अधिक उत्पादन देने वाली किस्म।
2.	कृष्णहंसा	ब्लास्ट प्रतिरोधी, जल्दी पकने वाली किस्म, लंबा पतला दाना।
3.	त्रिगुणा	भूरा माहों एवं गंगई प्रतिरोधी लंबा दाना / मध्यम भूमि एवं सिंचित अवस्था के लिए उपयुक्त।
4.	विजेता	भूरा माहो प्रतिरोधी / मध्यम भूमि एवं सिंचित अवस्था के लिए उपयुक्त / मध्यम दाना।
5.	ललाट	गंगई निरोधक, निचली भारी भूमि के लिए उपयुक्त लंबा पतला दाना।
6.	पूजा	ब्लास्ट प्रतिरोधी, निचली भारी भूमि के लिए उपयुक्त, मध्यम दाना।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

धान जातियों के चारित्रिक गुण :–

धान जातियों के अनुवांशिक चारित्रिक गुण जानना अनिवार्य है। अन्यथा इनको पहचानना काफी दुष्कर हो जाता है तथा जाति नाम के अनुसार फसल से वांछित परिणाम प्राप्त नहीं हो पाते है, विभिन्न धान जातियाँ जो वर्तमान में प्रचलित है। उनका विस्तृत विवरण निम्न है

(1) स्वर्णा :–

यह सबसे ज्यादा लोकप्रिय किस्म है। देर से पकने वाली जातियों में यह एक प्रमुख जाति है तथा भारी जमीनों के लिये अनुकूल है। यह एक अर्द्ध बौनी 110–110 से.मी. ऊँची तना मजबूत पत्तियां छोटी तथा गहरी हरी एवं अधिक कंसा देने वाली जाति है। इसका दाना मध्यम लंबा, अल्प पारदर्शक तथा दानों का छिलका हल्का बैंगनी रंग लिये होता है। बाली की लंबाई 24.4 से.मी. के आसपास होती है तथा 1000 दानों का वजन 19.6 ग्राम के लगभग होता है। यह जाति 145–150 दिनों में पक जाती है तथा 45–50 क्विंटल/हेक्टेयर उत्पादन देती है। कीट व्याधियों के लिये यह संवेदनशील है तथा झुलसा रोग के लिए अति संवेदनशील है। यह किस्म वशिष्ठ एवं मासुरी के संकरण से विकसित की गई है तथा कम नत्रजन में इसकी खेती सुरक्षित रहती है।

(2) महामाया :–

विपुल उत्पादन देने वाली यह किस्म आशा और क्रांति के संकरण से विकसित की गई है। यह एक 100–110 से.मी. मध्यम ऊँचाई की जाती है जिसका तना मजबूत पत्तियां छोटी तथा गहरी हरी एवं मुख्य पत्ती खड़ी रहती है। पत्ती का प्रतिपर्ण (सीप) हलका बैंगनी रंग वाला होता है। तने की गांठ का अंदरूनी हिस्सा बैंगनी होता है एवं पत्ती के दोनों ओर पाये जाने वाले आरिकल गहरे बैंगनी रंग लिये होते हैं जिससे जंगली धान या अन्य धान जाति के पौधों को पहचानने में मदद मिलती है। इसका चांवल लंबा, मोटा तथा अल्प पारदर्शी होता है तथा बीज की नोंक (एपीकुलस) बैंगनी रंग की होती है। 1000 दानों का वजन 32.5 ग्राम तथा प्रति बाली दानों की संख्या 156 के लगभग होती है, यह जाति किसानों के बीच काफी लोकप्रिय है तथा बहुत बड़े क्षेत्र में उगाई जाती है। इसकी उत्पादन क्षमता 55–60 क्विं/हे. के लगभग है। इस जाति में कंसा देने की क्षमता बहुत है। यह जाति की अनुकूलता विस्तृत है। गंगई कीट प्रतिरोधी एवं अन्य कीट व्याधियों के लिये आंशिक प्रतिरोधी एवं सुखा सहनशील है। इस जाति के चावल का उपयोग पोहा बनाने में किया जाता है, तथा मुरमुरा निर्माण हेतु भी इसे सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

(3) सफरी–17:–

यह किस्म स्थानीय धान की जाति सकरी में चयनित है। सामान्य रूप से चिर–परिचित यह जाति इस क्षेत्र में बहुतायत से लगाई जाती है। निचली भारी जमीन अथवा बहरा भूमियों के लिये यह उपयुक्त होती है। यह जाति 140–150 से.मी. ऊँचतना कमजोर, पत्तियां लंबी एवं नीचे की ओर झुकी हुई एवं कम कंसा देने की क्षमता होती है। पूरा पौधा हरा होता है। इसका दाना लंबा पतला तथा अल्प पारदर्शक होता है। यह 140–150 दिनों में पक जाती है तथा 40–45 क्विं/हे. उत्पादन देती है। यह सूखा सहनशील होने के कारण किसानों द्वारा अधिकतर लगाई जाती है तथा प्रकाश संवेदनशील होने के कारण समय पर पक जाती है।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

(4) आई.आर.–36 (सिंचित) :–

अर्द्ध बौनी 85–90 से.मी. ऊँची तना मजबूत पत्तियाँ हरी तथा छोटी पकने के समय पत्तियाँ धीरे–धीरे पीली पड़ती है। पूरा पौधा हरा होता है, तथा कंसा देने की क्षमता बहुत है। दाना लंबा, पतला तथा बाली की शाखाओं के ऊपर वाले दानों पर कहीं–कहीं छोटा सूंगा दिखाई देता है। चावल अल्प पारदर्शी होता है तथा मिलिंग में पूरा चावल अधिक मिलता है। बाली में औसत 140 दानों की संख्या होती है बाली की औसत लंबाई 22.5 से.मी. के आसपास होती है। 1000 दानों का वजन 23.6 ग्राम के लगभग होता है। विश्व में सबसे अधिक क्षेत्र में लगाई जाने वाली यह एकमात्र धान की जाति है। यह 115–118 दिनों में पककर तैयार हो जाती है तथा उत्पादन 40–45 क्विं/हे. के आसपास आता है। कीट एवं व्याधियों से कम प्रभावित होती है। रबी मौसम की धान फसल हेतु उपयुक्त जाति है।

(5) आई.आर.–64 (सिंचित) :–

यह एक अर्द्ध बौनी जाति है। जिसकी ऊँचाई 90 से.मी. के आसपास होती है। इसका तना मजबूत, पत्तियां छोटी तथा हरी, पूरा पौधा हरा कंसा देने की क्षमता अधिक होती है। दाना लंबा पतला एवं प्रति बाली दानों की संख्या 136 के लगभग होती है। चावल अल्प पारदर्शी होता है। 1000 दानों का वजन 27 ग्राम के लगभग है। यह जाति 110–115 दिनों में पककर तैयार होती है। तथा उत्पादन क्षमता 40–45 क्विं/हे. है। यह जाति भूरा, माहू, जीवाणु जनित झुलसा रोग तथा तना छेदक के लिये सहनशील है। रबी मौसम में लगाई जाने वाली धान की एक उपयुक्त जाती है।

(6) दंतेश्वरी (असिंचित) :–

यह अर्द्ध बौनी 90 से.मी. ऊँची, मजबूत तना, पूरा पौधा हरा, पत्तियॉं लंबी पतली गुण वाली होती है। इसका चावल लंबा–पतला अल्प पारदर्शी तथा खाने में स्वाद युक्त होता है। यह जाति 105 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। मिलिंग में साबूत चांवल की प्राप्ति 58 प्रतिशत के आसपास होती है। दानों में कभी–कभी छोटा सूंघा दिखाई देता है, वैसे यह बिना सूंघा वाली जाति है। असिंचित उच्चहन खेतों के लिये यह जाति उपयुक्त है। जल्दी पकने के कारण इस जाति को कतार बौनी तथा ग्रीष्मकालीन धान की खेती के लिये उपयुक्त पाया गया है। यह जाति गंगई कीट के लिए निरोधक तथा भूरा धब्बा एवं झुलसा रोग के लिए सहनशील है। यदि इस जाति की रोपाई की जाती है, तो रोपा की आयु 21 दिनों से अधिक नहीं होना चाहिए। यह जाति का उत्पादन 30–35 क्विं/हे. के आसपास है। इस जाति के 1000 दानों का वजन 20.5 ग्राम के लगभग होता है। यह किस्म समृद्धि तथा आई.आर. 8608–298 के संकरण से विकसित की गई है।

(7) बम्लेश्वरी (सिंचित) :–

सन् 2000 में विकसित यह नवीनतम किस्म, क्रॉस आर.पी. 2151–40–1 तथा आई.आर. 9828 के संकरण से विकसित किया गया है। यह मध्यम ऊँचाई कद 105–110 से.मी. ऊॅंची देरी से पकने वाली जाति है।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

इसका तना मजबूत पत्तियाँ चौड़ी तथा लंबी होती है। कंसों की संख्या सीमित तथा पूरा पौधा हरा होता है। इस जाति का दाना लंबा–मोटा होता है, तथा दानों में सुंघा नहीं होता है। 1000 दानों का सामान्य वजन 27 ग्राम के लगभग होता है। यह जाति 135–140 दिनों में पककर तैयार हो जाती है तथा औसत उत्पादन 50 क्विं/हे. के आसपास होता है। यह जाति जीवाणु जनित झुलसन रोग के लिये पूर्णतया निरोधक है तथा भूरा–धब्बा एवं झुलसा रोग के लिये सहनशील है। यह जाति कगार बोनी बियासी तथा रोपा विधि द्वारा धान खेती के लिये उपयुक्त पाई गई है।

(8) तुलसी (असिंचित) :–

अर्द्ध बौनी, 90 से.मी. ऊँची, मजबूत तना बाली जाति है। कंसा देने की क्षमता औसत है एवं पत्तियाँ छोटी, बैंगनी कोण वाली तथा प्रतिपर्ण (सीप) बैंगनी रंग लिये होताहै। इसके 1000 दानों का वजन 24 ग्राम के आसपास होता है। यह सूखा सहनशील तथा झुलसा रोग प्रतिरोधी है। पकने की अवधि 100–105 दिन के बीच है एवं उत्पादन क्षमता 35–40 क्विं/हें. के आसपास है।

(9) अन्नदा (असिंचित) :–

यह अर्द्ध बौनी 85 से.मी. ऊँची, छोटा मजबूत तना, पत्तियां चौड़ी तथा हरी एवं पूरा पौधा हरा होता है। इसका दाना छोटा–मोटा तथा अपारदर्शी होता है। 1000 दानों का वजन 24 ग्राम के आसपास होता है। पकने की अवधि 105–110 दिनों के लगभग है तथा औसत उत्पादन क्षमता 35–40 क्विं/हे. है। यह एक सूखा सहनशील जाति है। इसका चांवल पोहा बनाने के लिये उपयुक्त है।

(10) क्रांति :–

यह किस्म स्थानीय क्रास 116 एवं आई.आर. 8 के संकरण से (सन् 1978 में) विकसति की गई है। मध्यम कद, 110–115 से.मी. ऊँची, पौधा हरा पत्तियाँ छोटी एवं हरी तथा तना मजबूत होता है, जिससे पौधे खेत में नही गिरते है। कंसा देने की क्षमता कम होती है। इसका दाना छोटा–मोटा तथा चांवल का पेट सफेद होता है। पौधे के सभी कंसे समान ऊॅचाई के होते है तथा फूल आने की अवस्था समान होती है। प्रति 1000 दोनों का वजन 30.5 ग्राम के लगभग होता है तथा प्रति बाली दानों की संख्या 150 के आसपास होती है। यह जाति 125–130 दिनों में पककर तैयार हो जाती है तथा उत्पादन क्षमता 50–55 क्विं/हे. के लगभग होती है। यह जाति पोहा निर्माण कार्य के लिये उपयुक्त है तथा बाजार भाव अच्छा प्राप्त होता है। यह किसानों की एक परिचित धान जाति है जो छत्तीसगढ़ क्षेत्र में आई.आर. 36 के बाद अधिकता से ऊगाई जाती है इस जाति में कीट व्याधि निरोधक क्षमता नहीं है, लेकिन सूखा सहन करने की क्षमता है।

(11) पूर्णिमा :–

यह किस्म पूर्ण एवं आई.आर. 8608–298 के संकरण से विकसित की गई है। यह एक मध्यम बौनी 90 से.मी. ऊँची ओज युक्त, मजबूत तना वाली जाति है। पूरा पौधा हरा तथा कंसे देने की क्षमता मध्यम है। इसका

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

तना लंबा पतला तथा अल्प पारदर्शी होता है।तथा 1000 दानों का वजन 24 ग्राम के लगभग होता है। इसके पकने की अवधि 105–110 दिन के आसपास है। उत्पादन क्षमता 35–40 क्विं./हे. के बीच है। यह सूख सहनशील जाति है तथा इसका उत्पादन सूखे से प्रभावित नही होता है। चावल की मात्रा मिलिंग के समय 50 प्रतिशत से ज्यादा आती है। वर्षा आधारित खेती के लिए उपयुक्त है।

(12) इंदिरा सुगंधित धान–1 (नई सुगंधित किस्म) :–

यह जाति 135 दिनों में पकती है, एवं गंगई कीट के लिए अवरोधक है। इसके दाने मध्यम लंबे तथा सुगंधित किस्म के होते है। पकने के पश्चात् इसके दाने का लंबाई अनुपात अधिक हो जाता है। अखिल भारतीय समन्वित धान परियोजना में परीक्षणों के दौरान इसकी औसत उत्पादन क्षमता सबसे अधिक पाई गई है। गंगई के लिए निरोधक क्षमता तथा खुशबू अच्छी होती है एवं दाने की गुणवत्ता बेहतर होती है।

धान में उर्वरक प्रबंधन

धान फसल के विपुल उत्पादन के लिये उर्वरकों का संतुलित मात्रा में उपयोग करना अति आवश्यक है। उर्वरकों का समयानुकूल एवं संतुलित उपयोग कई बातों पर निर्भर करता है, जिसमें भूमि का प्रकार एवं उपजाऊपन, सिंचित–असिंचित स्थिति तथा जातियों के पकने की अवधि प्रमुख है। उर्वरकों के सही उपयोग के लिए मिट्टी परीक्षण आवश्यक है। मिट्टी परीक्षण द्वारा भूमि में उपस्थित पोषक तत्वों की जानकारी के आधार पर उर्वरकों की संतुलित मात्रा का उपयोग किया जाना चाहिए। यदि मिट्टी परीक्षण न किया गया हो तो सामान्य सिफारिश के अनुसार उर्वरकों का उपयोग करना चाहिए।

□□□

DMV Journal
Annual Journal of Durga Mahavidyalaya, Raipur (C.G.)
ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

जनवादी मुक्तिबोध

डा. गणे   । भांकर पाण्डेय
सहायक प्रध्यापक हिन्दी विभाग, दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर

मुक्तिबोध यथा नाम तथा गुणम्। वह मुक्त कराता है, लोगों को मिथ्या आडंबर से कोरी कल्पना से भावुकता से, प्रवंचना से, अ   लीलता से और उन्हें ज्ञान कराता है। समाज के वास्तविक रूप, यथार्थ बोध जनजीवन के आम पीड़ा से, संघर्श से । इसीलिए वो नई कविता का प्रतिनिधित्व करता है, किन्तु दूसरे तरीके से क्योंकि वह एक गंभीर चिन्तक कवि है। उनकी कविता भावप्रधान कम, चिन्तन प्रधान अधिक है। उनके चिंतन का आधार प्रगतिवाद हैं। और प्रगतिवादी चिन्तन का आधार द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद है। कहने का तात्पर्य है कि मुक्तिबोध प्रयोगवाद और नयी कविता के प्रचलित प्रतिमानों की अपेक्षा मार्क्सवादी काव्यचेतना के अधिक निकट है। मुक्तिबोध मार्क्सवादी काव्यचेतना के समर्थक कवि है। उनकी कविता को पढ़कर उनकी विचारधारा को ठीक प्रकार से समझा जा सकता है। मुक्तिबोध के काव्य में आत्मसंघर्श और आत्मान्वेशण अधिक है। मुक्तिबोध की काव्यचेतना के विकास में जितना योगदान बाहरी परिस्थितियों का रहा है, उतना ही उन परिस्थितयों से जूझने वाले उनके अंर्तमन का भी रहा है। वे कहते है "मुझे यह स्वीकार करने में संकोच नही कि मेरी हर विकास स्थिति में मुझे घोर असंतोश रहा है।" उनके काव्य में अनास्था, विद्रोह, असंतोश और क्षोभ की प्रधानता है, जो उनके जीवन परिवे   । की देन है। उनकी कविता में विरोध, विद्रोह, क्षोभ और आक्रो   । ही नही अपितु संघर्श   ीील जीवन के पदचिन्ह भी प्राप्त होते है, यही वह कारण जो उन्हें अपने समकालीन कवियो से अलग खड़ा कर देता हैं।

मुक्तिबोध की कविता का आधार कल्पना नही है। वे भावुकता में बहकर कुछ नही कहते बल्कि गहरे जीवनअनुभूति से द्रवित होकर लिखते है।

विचार आते है–
लिखते समय नहीं
बोझ ढ़ोते वक्त पीठ पर
सिर पर उठाते समय भार
परिश्रम करते समय।[1]

मुक्तिबोध एक प्रतिबद्ध रचनाकार है। इसके साथ संघर्श के प्रति काफी आस्थावान भी दिखते है जो समाज के बदलाव के लिए आव   यक है–

जमीन में गड़ी हुई देहों की खाल से
भारीर की मिट्टी से, धूल से
खिलेंगें, गुलाबी फूल
सही है कि हम पहचाने नही जाऐंगे।
दुनिया के नाम कमाने के लिए
कभी कोई फूल नही खिलता।[2]

मुक्तिबोध का जीवन में सफलताएँ बहुत कम मिली। जैसा कि हर बड़े लोगों के साथ होता है। लेकिन उन सफलताओं के लिए संघर्श करने वाला व्यक्ति कम उपलब्धियों के बावजूद भी बहुत बड़ा होता है। वह अपने लिए नही जीता वह सबके लिए जीता है। इसलिए वह हारते हुए भी आम लोगों के लिए संधर्श करता रहता है और उसे अपने तर्क और बुद्धि पर वि   वास होता है। वह आ   वस्त होता है कि संधर्श चाहे जितना कठिन हो संघर्श में सफलता अव   य मिलती हैं। 'कहने दो उन्हें जो यह कहते है' कविता में कवि अपने तर्क

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

और विचार पर आस्था रखता है–
हमारे पास तुम्हारे पास,
सिर्फ एक चीज है
ईमान का डण्डा है,
बुद्धि का बल्लम है
अभय की गेती है
हृदय की गतरी–तसला है
नये–नयें बनाने की लिए भवन
आत्मा के,
मनुश्य के,।[3]

कवि को वि वास है कि हम अपने ईमान, बुद्धि से ही नये समाज का निर्माण कर सकते है। मुक्तिबोध के रचना का विशय खोजते नहीं है वह उनके जीवन में घटित होने वाली घटनाएं ही कविता का रूप लेती हैं जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से घटती रहती है। उसको कवि मानसिक और सामाजिक दोनो स्तरों पर महसूस करता है। इसीलिए वह कहता है कि एक संवेदन ील रचनाकार के लिए विशय का चुनाव करना ज्यादा कठिन लगता है जिसको वह ठीक से व्यक्त कर सके–

लेखक की कठिनाई यह नहीं
कमी है विशयों की
वरन यह कि अधिक्य उनका ही
उसको सताता है
और वह ठीक चुनाव कर नहीं पाता है।[4]

मुक्तिबोध संघर्शो से मुह नहीं मोड़तें, न परिस्थितियों से समझौता करते है। बल्कि विपरीत परिस्थितियों को भी संघर्श स्वीकार करते है। वह परिस्थितियॉ ही उन्हें सम्बल प्रदान करती है जो उनकी कविताओं में स्पश्ट देखी जा सकती है। 'संहर्श स्वीकार है' कविता में मुक्तिबोध स्वीकार भी करते है–

जिन्दगी में जो कुछ है, जो भी है
सहर्श स्वीकार है,
इसीलिए कि जो कुछ मेरा है
वह तुम्हे प्यारा है।[5]

वैसे मुक्तिबोध लम्बी कविताओं के कवि है। और लम्बी कविताएँ जीवन के लम्बे एवं गहन अनुभव की देन होती है। अंधेरे में कविता में मुक्तिबोध की लम्बी कविता है, जिसमें कवि, साहित्यकार, चिंतकों के तटस्थ भाव पर भी व्यंग्य करते है–

सब चुप साहित्यिक चुप और कविजन निर्वाक
चिन्तक ि ल्पकार वर्तक चुप है
उनके ख्याल से यह सब गप है
मात्र किंवदन्ती।[6]

सच तो यह है कि मुक्तिबोध की कविता अपने समय की सच्चाई है जिसका आधार वैचारिक अधिक है। कवि का यथार्थ काफी मुम्फित है और इसी यथार्थ को व्यक्त करने में कविताएँ लम्बी हो गयी है। मुक्तिबोध इसको स्वीकारते भी है। 'यथार्थ के तत्व परस्पर मुम्फित होते है, साथ ही पूरा यथार्थ गति ील होता है। अभिव्यक्ति का विशय बनकर जो यथार्थ प्रस्तुत होता है वह भी ऐसा ही गति ील है, और उसके तत्व भी परस्पर गुम्फित है। यही कारण है कि छोटी कविताएँ नहीं लिख पाता और जो छोटी होती है वस्तुतः

छोटी न होकर अधूरी होती है। यही वजह है कि मुक्तिबोध की लम्बी कविताएँ अधिक सफल और स ाक्त है।

मुक्तिबोध का रचना–ि ाल्प अनूठा है। फैंटेसी का सहारी लेकर उन्होंने सूक्ष्म–तरल इतिवृत्तामक कविताएँ लिखी है। उनकी कविताएँ विचार–प्रधान होते है भी अन्दर तक झकझोर देने वाली भाक्ति है। उनका काव्य प्रायः प्रतीक काव्य है किन्तु वे प्रतीक अनजानी दुनिया के नही बल्कि जीवन के वास्तविक यथार्थ है। मुक्तिबोध की उपलब्धि उनकी फैंटेसी भौली है। हिन्दी में सम्भवतः मुक्तिबोध ही सबसे अधिक और सबसे सफल फैंटेसी लिखने वाली कवि है। उनकी प्रायः हर कविता एक स्वप्न–कथा का–सा आस्वाद प्रदान करती है। इसीलिए मुक्तिबोध फैंटेसी को संवेदनात्मक ज्ञान और ज्ञानात्मक संवदेना के लिए अनिवार्य मानते है।

मुक्तिबोध सच्चे अर्थो में जनकवि है क्योंकि वे अपनी कविता में उनका पक्ष लेते है जा समाज में भाोशित है। यह कहना गलत न होगा कि मुक्तिबोध की कविता भारतीय मनोद ाा का स ाक्त चित्रण है। वे सामान्य जन की वेदना को वाणी देते है। इस तरह से देखा जाय तो मुक्तिबोध काक आधुनिक हिन्दी–काव्य में वि ोश महत्व है। मुक्तिबोध की कविता का मर्म समझने के लिए बस यही कविता पर्याप्त है–मेरे सभ्य/नगरों और ग्रामों की/समस्याएँ एक है/ कि सभी मानव/सुखी सुन्दर और भाोशणमुक्त कब होंगे।

संदर्भ –

1. संपादक, अ ाोक वाजपेयी, प्रतिनिधी कविताएँ पृ0–185,57,115,79,20,165।

□□□

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

The Survival Saga of Women in Ladies Coupe: Re-interpreting their Individuality

Prof. Yogita Lonare
Asst. Professor, Deptt. of English,
Durga Mahavidalaya, Raipur (C.G.)

Nair's popular work *Ladies Coupe* (2001) is a tale of the indomitable spirit of contemporary Indian women told with great insight and solidarity. In this novel she reflects the perpetual tension between the predicament of the contemporary Indian woman and the traditional Hindu culture. Nair's India suffers from a patriarchal system which has tried in many ways to repress, humiliate and debase women. The novel deals with multiple lives and multiple voices, where Nair answers a few questions that every woman would have faced in her life-questions related to her vulnerable position in society. The questions Nair poses in the novel, whether a single woman can really survive all by herself in this world or does she need a man to love her, protect her and care for her? Nair has humanitarian approach and is sensitive to Indian womanhood as being wronged. The answer that the novel provides is that 'there is a lot of strength in deep inside that every individual has' and that women must be courageous and claim their lives and possibilities.'

Nair's "*Ladies Coupe*" has been hailed as one of the most important feminist novels to come out of South India. However, there is none better than the novelist herself to talk about her own writing, in a chat with Suchitra Behal, Nair talks about her book: “I am not a feminist. I enjoy being in the house, I like to be treated nicely and pampered. I don't think this book is about feminism. It's about that inner strength which I see in so many women that overwhelms me. It doesn't come naturally. It has to be forced out of them; it could be circumstances or a change in lifestyle.”(*Writing for Oneself, Caffedilla.com*)

At the onset, the story mainly concerns Akhilandeshwari, or Akhila – a forty five year old, unmarried, yearning to be independent, but has never been allowed to live her own life . A deep analysis of the novel reveals that the writer narrates stories of six women who are from different demographic and social background. The ladies coupe couple of train bound to Kanyakumari finds these women thrown in proximity. They have nothing in common save their gender: some made happy marriage; some were not happy ;one was raped and took her revenge, another seduced men much younger than herself.

As women give more importance to relationships and affiliations, they always give priority to the needs and demands of others and sacrifice their own needs and desires for the sake of their home, merging their own identity in the process. In "*Ladies Coupe*", Akhila is governed by social pressures and does not live for herself, but for her family and society , though it means sacrificing her own individuals interests, She hails from humble Tamil Brahmin family. Her father, a government servant, is the only breadwinner of the family, and who has to support his wife and four children. He is a very simple man for away from the office politics. Her mother is a typical traditional women for whom her husband is no less than God. Since her childhood, Akhila has noticed that her parents are very much happy in each other's company . She could notice that they were able to communicate even without words. As she is the eldest daughter in the family, after the death of her father Akhila accepts the entire responsibility and assumes the role of the head of the family. She starts working in an income tax office and toils hard for her family. Both her brothers and sister continue their studies and get good position in life. They also married at the age they are supposed to. Akhila continues to look after her mother,

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

siblings and their offspring who shamelessly keep sponging off her . No one seems to understands the fact that Akhila too needs to have a life of her own, married with children. It is at this juncture that Akhila searches for her identity. She wants to be Akhilandeshari. She ponders about her life and what it has in store for her. Many times she has asked herself, "who was Akhilandeshwari? Did she exist at all? If she did what was her identity.?"(84)

The fear of society is a great impediment to personal freedom whether it is for a a man or a woman . In a country that has always considered woman to be inferior being, it is the traditional norms that keep her tied down and the fear that if she were to swerve from the accepted path, she will be ostracized. Akhila and Hari both do take their time together and enjoy the time that they had alone. Akhila would have enjoyed security in this relationship but somehow , she thinks she has committed a sin by letting a boy as old as her younger brother enters her emotional and physical state . This fact constantly disturbs her, though Hari proclaims his deep love for her.

Nair beautifully sums up her protagonist , Akhila: "so this is Akhila. Forty five years old . Sans-rose coloured spectacles .Sans husband ,children, home and family. Dreaming of escape and space. Hungry for life and experience . Aching to connect." (2) After Akhila's mother's death the other members of the family, especially her brothers , discuss and decide where and with whom she should live. They decide it for her just because they are male members of the family. Akhila is taken for granted displaying a typical patriarchal attitude. Finally it is decided that she should live with her younger sister Padma's family. It is really ironic that an economically independent woman who took over the responsibility of the entire family years ago is not considered capable of looking after herself even at the age of forty five.

Akhila, living between Padma's family, continues to tolerate the invasion of her privacy. Padma always remembers her how much value is attached to marriage in the Indian society. One day Akhila's school friend makes her realize a sense of self worth and has a right to enjoy her life in her own way. Being fed up with Padma's behaviour . Akhila decides to live alone and she boards the train alone to Kanyakumari to discover herself. In the train she finds five women in Ladies Compartment and she asks everyone different questions to make herself convice that a woman can live alone.

Over the course of the journey each woman, ranging in age from 58 to 14,tells the story of her life in answer to Akhila's question. Two pampered matrons, a mysterious woman share the most private moments of their lives. They talk about the men they loved, the men they hurt, the ones that they grew to be dependent on, and the ones they started to loathe. With strong portrayal of each character, Nair analyses the anguish and exuberance of her female protagonists. Between their tales Akhila reflects on her life and what little she has to show for it and her burgeoning desire to determine her own destiny. Janaki Prabhakar , the oldest of the women, has been married forty years, and like many marriages, hers has grown into a close , happy bond. In India the woman's sphere is restricted to her familial roles. Janaki is the example of a typical Hindu woman , pampered daughter, pampered wife who dares not raise a voice against any action of her husband. She believes that marriage is the male's authority over the female. Her husband has supported her all through her life and she does not know what to do in critical situations in life and thinks all is well with her life . She accepts," I am a woman who has always been looked after . First there was my father and my brothers , then my husband . When my husband is gone , there will be my son . Women like me end up being fragile. Our men treat us like princesses. And because of that we look down upon women who are strong and who can cope with themselves."(22-33) Janaki has no hesitation in accepting the fact that in accommodation lay her true happiness. She apprehends painfully that there is nothing to do with emotions of old people. There is a perfect combination between them. She frankly tells her husband that ' I am tired of sharing you with everyone, I want you to myself.' A short stay of their son's house makes her realize that she has developed friendly love for her husband at this stage

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

of life.

Prabha Devi, a rich woman finds her life empty and does not go by the norms set by society . She is a woman who is completely assured of who is and likes to be the way she is on. However, she understands and appreciates the sanctity of marriage. Initially Prabha Devi is happy with her fate. When she accompanies her husband to New York, she gets fascinated with the western culture where a woman is as liberated as a man . “Their lives were ruled by themselves and no one else. Such power, such confidence, and celebration of life and beauty.” (177) This trip changes her. Prabha Devi becomes conscious of her beauty and sexuality. She starts reading magazines and visits beauty parlours very often. After coming to India she lives her life like westernized woman. She looks more charming, beautiful, sensuous and confident woman. The change in her is remarkable and it gives her immense satisfaction. But when she tries to lure Pramod by her beauty as one day he comes home thinking to be 'like these women' Prabha Devi is shocked. She immediately comes out of her dream world and realizes her mistake. Once again she entered into cocoon and becomes 'grahini'. She engages herself in performing the role of an ideal wife and an obedient daughter-in-law. For many years she enjoys the security of married life.

Sheela Vasudevan, a fourteen year old girl is endowed with an ability to perceive what others cannot. At this tender age, she understands many things. She does not like her father's way of approaching towards problems. She is much influenced by her grandmother Ammumma who was an ardent worshiper of beauty and who hated imperfections of any kind. Sheela is imaginative enough to understand her granny that she defies and loathes the obscenities of death and age. When her grandmother dies of cancer and her body was prepared for funeral, young Sheela remembers her granny's lesson to her, “The only person you need to please is yourself.” Sheela dresses up her dead grandmother's body in costume, jewllery and make up because she cannot bear her face the world looking so unprepared. Sheela's story provides a new direction to Akhila. Instead of bothering about others, she should please her own self.

Margaret Paulraj, a chemistry lecturer, is married to the person of her choice still their marriage does not work. Her husband, Ebenezer Paulraj, Principal of public school in Coimbatore inflicts great emotional violence on her. She is seen by her as an object to fulfill his desires. He successfully destroys Margaret's self-confidence by bullying her and shouldering all the responsibilities of the household. She wants to do Ph.D. but he suggests that she should go for in B.Ed. when she expresses her doubt if the Church would approve the act, he argues: “first of all, the Bible never mentions the word abortion…. If you had a boil that turned septic wouldn't you have it lanced? Just think of this as a tumour that has to be removed.” (106) Her family members are unable to believe that she is unhappy. His artificial politeness, warmth, cruelty, constant contempt of Margaret, his favourite theories and his habit of defacing books by ugly drawings are facets of his personality hidden from the world. Margaret tolerates all the contempt from the 'most loved' husband but remains silent. There seems to be no way out, until one day she discovers a gold fish floating dead. This proves to be a turning point of her life. She decides to be evasive to him in order to touch and shake his self-esteem, the very foundation of his being. In her own way, she avenges herself by over feeding him and making him so dependent on her that he would need her in every step he takes. There is complete reversal of role. Earlier Ebe used to control her life, now she has him completely in her hands.

Marikolanthu or Mary, thirty one year old single parent who feels sorry for the silk worm, she who talks to worms, trees and rocks in her childhood speaks about her journey from an innocent girl to a woman. She has been a rape victim and has a son by that union. Now she is a woman “from whom anger paused forth like a stream of Java.” (209) A single woman has no significance in our society. Mary is a glaring example of a woman's plight who has seen love, hate, pain, anger, and

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

compassion from both sides of the coin in her life. She tells, "I was a restless spirit raped and bitter, sometimes I would think of the past and I would feel a quickening in the vacuum that existed within me now." (266) After the rape, unsurprisingly, it is Mary who is to be blamed-why does a young woman walk alone?

Marikolanthu's views and philosophy of life are different from other fellow passengers. She believes in the destiny written by Brahma. According to her Brahma allots a specific number of years to each one to experience all aspects of life. She learns great lesson from the most trifling moments in life and thereby moulds her own philosophy. Mary is angry about the fuss the other travelers made about what she thought were little things. She wonders what they would do if real tragedy confronted them. She believes they couldn't comprehend how cruel the world could be to women. Hers is the most horrifying story of woman raped, caste out, abandoned, extremely poor, beyond hope, a thirty one year old woman with a son and no husband. "Women", she said however, "are strong. Women can do everything as well as men. Women can do much more. But a woman has to seek that vein of strength in herself. It does not show itself naturally." (210)

Thus each chapter of the novel is devoted to one of the women's stories depicting their personal crisis such as loneliness, ill treatment, rape, abortion, madness, betrayal and how each one coped with them. Each woman has gone through some kind of struggle as each of them tells her about the moments they were the happiest and the moments they wished never happened. Janaki, Prabha Devi and Margaret and Akhila are victims of 'Pygmalion effect'. They are examples of adjustments. Janaki and Prabha Devi do not feel complete without a man. Deep in their hearts, they think, world has no use for a single woman. Janaki realizes that she has no identity as such, she is very traditional. However, Prabha Devi tries to obtain sexual autonomy without understanding its complications. She tries to flout the tradition by secretly learning how to swim. Margaret is educated, financially independent but even then has become crippled. She believes that a woman needs a man but not to make her complete. Though economically independent in life, Akhila herself follows the tradition and waits for her family to choose spouse for her and is afraid of the society. She is bothered about her lovers' age and what people will say if she marries him against the norm. Akhila realizes that all these women are tied to the bonds of the family life and in turn want the security of married life. They are traditional in the sense that they have drawn a borderline for themselves and they do not have courage to cross it.

Nair uses a special technique that weaves the past, present and future of Akhila in the story. She recollects her past, listens to others and moulds her future. In this way she recollects her past, listens to others and moulds her future. In this way she goes through the experience of all the ladies in the coupe, travelling in the train and lulled asleep Akhila slips occasionally into a past. Nair tenderly draws Akhila's family scenes and builds up her story into something very absorbing.

However, one of the marked features of the book is the absence of Akhila's own identity. Is this a sad reality of today's woman? That she is unable to carve out an identity for herself? Akhila is not an exceptionally strong woman. She is full of desires. All she wanted was to be a good wife and mother- the simple dream of simple woman. But she is not given the opportunity by her family to get married and have a family, as traditions dictate. After hearing out these five women and their stories of living in a cocoon sheltered by men or rampant exploitation again by men, Akhila realized that there is so much more to life than the confines of her small band cubicle, her grumpy family, and her lonely self.

In this novel Nair studies the social forces working on the psychology of the other, present their own need for existence and independence. By narrating the stories of these women, Nair moves them from a state of passivity and absence into a state of active presence, from the kitchen and the bedroom to the street and the world at large. These are the stories, which together make a single story, of women and their existence.

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

Akhila's railway journey to Kanyakumari needs to be studied from another perspective also. Kanyakumari is a pilgrimage town at the very tip of india. It occupies a special place in Akhila's mind, since it "has got its name from the goddess who, like her, is unmarried and eternally waiting for her groom to arrive." (3) Finding herself adrift with no life of her own, she expects the answers to her questions to emerge from the sea of kanyakumari. "Just as Vivekanda flung himself into the churning waters and the salts of the three seas and swam to a rock upon which he sat resolutely, waiting for answers that had eluded him all his life." (3) . The word 'coupe suggests confined or retricted or clsed space.

Thus the novel provides a deep insight into the lives of women in modern-day Indian, illustrating their tough battle for an opening and the restrictions which are still exerted by tradition, religion and convention. After reading Ladies Coupe, one observes that Indian womanhood is changing. The life stories of these women give an insight into the expectations of married Indian women the choices they make, and the choices made for them. What is remarkable in the novel is that it conveys a strong message of hope through change. From typical Indian middle class traditional woman Akhila changes to a transitional woman. The character of Akhila is symbiolic of all those who are in quest for self-realization. She wants fulfillment in life, first, gratification of sexual needs, and then, motherhood. Her experience conveys the message that a woman can survive and get her identity not by keeping herself isolated from male-dominated society, but by cooperating with them. A atrong feeling emerges from the society and that is, they should be considered and treated as human beings first and foremost not as women or sexual commodities.

Works cited

Nair,Anita.*Ladies Coupe*.New Delhi:Penguin Books,2001.
Behal, Suchitra.Writing for Oneself.Caffedilla.com

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

चिन्ता स्तर पर रेकी उपचार का प्रभावः एक अध्ययन

डॉ. शकुन्तला दुल्हानी
सहायक प्राध्यापक, मनोविज्ञान विभाग,
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

डॉ. संजय कुमार भारद्वाज
मनोवैज्ञानिक सलाहकार एवं
रेकी मास्टर, रायपुर (छ.ग.)

भूमिका

चिन्ता से तात्पर्य डर एवं आशंका के दुखद भाव से होता है। इस तरह की चिन्ता से कई तरह के मानसिक विकृतियों की उत्पत्ति होती है।

DSM-IV में चिन्ता विकृति से तात्पर्य ऐसी विकृति से होता है जिससे रोगी में अवास्तविक चिन्ता एवं अतार्किक डर की मात्रा इतनी अधिक होती है कि उससे उसका सामान्य जिन्दगी का व्यवहार अपअनुकूलित हो जाता है तथा इसमें व्यक्ति अपने चिन्ता की अभिव्यक्ति बिल्कुल ही स्पष्ट ढंग से करता है।

कोलमैन के अनुसार मुख्यतः इस रोग की प्रमुख विशेषता व्यक्ति में स्वतंत्र दिशाहीन चिन्ता का होना है, जो न किसी विशेष पदार्थ या स्थिति से उत्पन्न होती है और न ही उसके विशेष लक्ष्य या स्थिति का ही ज्ञान होता है।

चिन्ता मनस्ताप के नैदानिक लक्षण

1. दैहिक लक्षण – दैहिक रूप से कई लक्षण दिखाई देते हैं। व्यक्ति में कई आपात कालीन दैहिक प्रतिक्रियाएं भी होते पायी गयी है, जिनमें पसीना आना, ह्दय गति तीव्र होना, पेट की गड़बड़ी होना, सिर के हल्का होने का अनुभव होना, हाथ–पांव काफी ठंडे हो जाना आदि प्रधान है। ऐसे व्यक्ति जल्द थकान अनुभव करते हैं, एकाग्रचित्त होने में कठिनाई का अनुभव करते है, चिड़चिड़ा व्यवहार दिखलाते है तथा उनमें अनिंद्रा की शिकायत भी होती है।
2. सांवेगिक लक्षण – सांवेगिक रूप से ऐसे रोगी बेचैन, तनावग्रस्त, सतर्क, हैरान दिखता है। वह आने वाले खतरों जैसे ह्दय आघात, मर जाने या नियंत्रण खोने आदि जैसी बातों के बारे में सोच–सोचकर काफी परेशान रहता है।
3. संज्ञानात्मक लक्षण – संज्ञानात्मक रूप से वह हमेशा कुछ बुरा होने की उम्मीद करते रहता है परन्तु यह नहीं बता पाता है कि क्या बुरा होने वाला है।
4. व्यवहरात्मक लक्षण – व्यवहरात्मक रूप से ऐसे व्यक्ति हमेशा अपने आपको दूसरों से छुपाते हैं या छुपाने के ख्याल से कहीं और चले जाते है। ऐसे व्यक्ति को किसी निर्णय पर पहुंचने में कठिनाई होती है और अगर कोई निर्णय ले भी लिये तो यह सोच–सोचकर परेशान रहते हैं कि अवश्य ही उसमें कोई न कोई त्रुटि हो गयी होगी।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

रेकी का अस्तित्व प्राचीन काल से स्पर्श चिकित्सा के रूप में भारत में जाना जाता है। यह एक आध्यात्मिक उपचार पद्धति है जिसका उपयोग सहायता परक उपचार पद्धति के रूप में किया जाता है।

रेकी एक जापानी शब्द है जो दो शब्दों से मिलकर बना है– 'रे' (REI) तथा 'की' (KI)। 'रे' शब्द का अर्थ सार्वभौम (Universal) तथा 'की' शब्द का अर्थ प्राण ऊर्जा (Life force energy) है। अर्थात् सर्वव्यापी प्राण ऊर्जा को रेकी कहते है।

रेकी का अभिप्राय एक ऐसी स्पर्श चिकित्सा है जिसमें हाथों से छूकर किसी रोग का उपचार किया जाता है। रेकी मन को शांत करके शरीर की जीवनी शक्ति को बढ़ा कर अपना काम करती है। यह शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक एवं अध्यात्मिक रूप से लाभ पहुंचाती है। हमारे शरीर में प्रमुख रूप से सात आध्यात्मिक ऊर्जा चक्र है जो हमारे सूक्ष्म शरीर में स्थित होते है। हर ऊर्जा चक्र के असंतुलन से अलग–अलग रोगों की उत्पत्ति होती है।

समस्या

इस अध्ययन में एक मात्र समस्या यह अध्ययन करना है कि क्या रेकी उपचार से प्रायोगिक समूह के चिन्ता स्तर में कोई कमी आती है?

उपकल्पना

यह उपकल्पना की गई कि रेकी उपचार की सहायता से प्रायोगिक समूह के चिन्ता स्तर में कमी आयेगी।

प्रतिदर्श

इस अध्ययन में उन 06 व्यक्तियों का चयन किया गया, जिनका चिन्ता का स्तर उच्च था।

परीक्षण सामग्री

व्यक्ति के चिन्ता स्तर के निर्धारण हेतु सिन्हा (1973) द्वारा निर्मित तथा मानकीकृत Sinha's Comprehensive Anxiety Test (SCAT) का प्रयोग किया गया।

प्रक्रिया

इस अध्ययन में प्री–टेस्ट करने के पश्चात् 06 प्रयोज्यों का चयन किया गया जिसको 03–03 के दो समूहों में विभाजित किया गया। पहला नियंत्रित समूह तथा दूसरा प्रायोगिक समूह रखा गया। नियंत्रित समूह को बिना रेकी उपचार तथा प्रायोगिक समूह को रेकी उपचार 21 दिन तक किया गया। इसके पश्चात् दोनों समूहों पर पोस्ट–टेस्ट किया गया।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

परिणाम एवं विवेचना

इस अध्ययन में रेकी उपचार के पूर्व SCAT परीक्षण पर प्राप्तांक नियंत्रित समूह का मध्यमान 29 तथा प्रायोगिक समूह का मध्यमान 29 है, जो दोनों समूह के उच्च चिन्ता स्तर को दर्शाता है। प्रायोगिक समूह के रेकी उपचार के पश्चात् किए गए पोस्ट टेस्ट में SCAT परीक्षण पर प्राप्त प्राप्तांक नियंत्रित समूह का मध्यमान 29.33 है जो उच्च चिन्ता स्तर को ही दर्शा रहा है तथा प्रायोगिक समूह का मध्यमान 18.67 है जो सामान्य चिन्ता स्तर को दर्शाता है। दोनों समूह के प्राप्तांकों को देखने से यह पता चलता है कि प्री–टेस्ट तथा पोस्ट टेस्ट प्राप्तांक में अंतर नियंत्रित समूह का 0.33 अंक अधिक तथा प्रायोगिक समूह का 11.67 अंक कम है। इससे सिद्ध होता है कि प्रायोगिक समूह के चिन्ता स्तर में कमी आई है। अतः प्रस्तुतः अध्ययन में उपकल्पना की पुष्टि निम्न अध्ययनों से भी होती है – Wardell & Engerbretson (2001), Richeson (2010), Bowden et al. (2011)। प्रस्तुत अध्ययन अभी छोटे समूह पर किया गया है, आगे चलकर बड़े समूह पर भी यह अध्ययन किया जा सकता है।

रेकी उपचार के माध्यम से व्यक्ति के ऊर्जा स्तर को बढ़ाया जाता है तथा सूक्ष्म शरीर में स्थित प्रमुख सात चक्रों को संतुलित किया जाता है जिससे वह व्यक्ति तनाव मुक्त और गहन विश्रांति की अनुभूति करता है। अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि रेकी शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक तथा आध्यात्मिक रूप से व्यक्ति को प्रभावित करता है, जो व्यक्ति के व्यवहार परिवर्तन में मदद करता है जिससे व्यक्ति रोग से मुक्ति की ओर जाता है।

संदर्भ सूची

1. Bowden, D., Goddard, L., & Gruzelier, J. (2011). A randomized controlled single-bling trial of the efficacy of reiki at benefiting mood and well-being. *Evidence-based complementary and alternative medicine*. Article I.D. 381862, 8 pages, doi:10,1155/2011/381862.
2. Richeson, N.E., Spross, J.A., Lutz, K., & Peng, C. (2010). Effects of Reiki on anxiety, depression, pain, and physiological factors in community-dwelling older adults. *Research in Gerontological Nursing*, 3(3), 187-199.
3. Sinha, A.K.P., & Sinha, N.K. (1973). *National Psychological Corporation, Agra.*
4. Wardell, D., & Enggebretson, J. (2001). Biological correlates of reiki touch healing. *Journal of Advanced Nursing*, 33, 439-445.

□□□

DMV Journal
Annual Journal of Durga Mahavidyalaya, Raipur (C.G.)
ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA: A DOMINANT IN INSURANCE INDUSTRY

Mrs.YukteeTaunk
Asstt. Professor

ABSTRACT:
Many a people associate life insurance product with death and not as a tool of investment. Insurance sector was opened to publicize insurance product as a sign of investment. All this time, we find a dominant position being enjoyed by LIC in Life insurance market due to its key strength viz.1.Distribution, 2. Variety of product, 3. Trust and Faith, 4. Large work force of agent. The Life insurance sector has been recently opened for the private players. While the private players struggle to increase their market in India, LIC continue to leverage advantage of its old establishment and government support for maintaining its growth.

KEYWORDS :Life Insurance industry, Insurance growth, LIC, India

INTRODUCTION

The history of life insurance in India started after the establishment of a British firm, Oriental Life Insurance company in Calcutta in 1818 and Bombay Life Assurance company in 1923.Before the establishment of Bombay Mutual Life Assurance Society (The Indian Insurance company) in 1871, the Indian lives were treated as sub-standard and charged extra premium of 15-20 percent. The Bombay Mutual Life Assurance society was covering the Indian lives at normal rate. To regulate thelife insurance business, the government passed the Indian Life Assurance companies Act in 1912.

There were 176 insurance companies in 1938.In 1938, the Insurance Act was passed which was governing not only life insurance but also non- life insurance and total insurance business.

NEED FOR THE STUDY:

The insurance sector is gaining importance these days. The role of Insurance is very important in the management of risk. The present study is an attempt to examine the performance of LIC of India in this competitive age.

OBJECTIVES OF THE STUDY:

The study has the following objectives:

1. To study the performance of Life Insurance Corporation of India,
2. To know the competitors of Life Insurance Corporation of India,
3. To observe the position of LIC in Indian Insurance Industry.

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

METHODOLOGY:

The present study is based on secondary data. Data and information have been extracted from Annual report of IRDA and LIC of India.

FUNCTIONING OF LIC:

Till 1956, Insurance service was not extended to rural areas but was confined to cities and better-off segments of the society. The Parliament by passing the Life Insurance Act of 1956,nationalized the Insurance business by incorporating Life Insurance Corporation of India (LIC) on 1st September 1956 with a view to reach all insurable person in the country at reasonable cost by spreading Life Insurance.

After nationalization, LIC has extended its service to larger geographical area. In 1957, LIC had only 5 zonal offices, 33 divisional offices and 212 branch offices which have now increased to 8 zonal offices, 111 divisional offices and 2048 branch office sin the year 2012.

LIST OF LIFE INSURERS:

Apart from Life insurance Corporation, the public sector life insurer, there are about 14 other private sector life insurers. Most of them are joint ventures between Indian groups and global insurance giants.

LIFE INSURER IN PUBLIC SECTOR

1. Life Insurance Corporation of India

LIFE INSURERS IN PRIVATE SECTOR.

1. SBI life insurance
2. Met life India life insurance
3. ICICI Prudential life insurance
4. Bajaj Allianz Life
5. Max New York life insurance
6. Sahara life insurance
7. Tata AIG life
8. HDFC Standard life
9. Birla Sunlife
10. Om Kotak life insurance
11. AVIVA LIFE
12. Reliance life
13. ING Vysya life insurance
14. Shriram life insurance

LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA:

In 1956, the Life insurance Corporation (LIC) of India has been established and is the largest Life Insurance Company in India owned by the government of India. It has the headquarter in Mumbai.

LIC has for a long period of time enjoyed a dominant market of Life Insurance and the fact cannot be

denied that LIC has a pre-accomplished market leadership which makes it difficult for new players to compete.

LIC has investment and financial strength as it is the only state owned enterprise in Life Insurance sector. Owning its bigger size it has the best advantage of pricing as well as getting better investment returns which can subsidies its original insurance product.

PERFORMANCE OF LIC

New policy business is another important indicator of performance and growth of the insurance companies. The Table No. 1 presents the complete picture of the performance of new business in terms of number of policies of LIC in a period of five years from 2005 to 2010.

TABLE NO. 1: Total number of Policies (In Lakhs)

F Y	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
LIC	315.90515	382.29292	376.12599	359.12667	388.6378

Source: LIC Annual reports.

Interpretation: it can be clearly seen from the table no 1 that there is an increase of new business in terms of number of policies in the year 2005-06 and 2006-07. Due to entry of private players in insurance sector, the performance of LIC in terms of new policies business has deteriorated which is clearly seen in the year 2007-08 and 2008-09. But further the number of policies increased to 388.6378 lakhs in the year 2009-10.

Table no.2: Growth over previous year policies (In %)

F Y	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
LIC	31.75	21.01	-1.61	-4.52	8.21

Source: LIC Annual reports.

Interpretation: It is revealed from the table no 2 that new policy business of LIC has increased all the year except 2007-08 and 2008-09.There was many ups and downs in the policy growth. But the growth was registered maximum in the year 2005-06 and lowest in 2008-09 due to global slowdown of the economy.

Table No. 3: Total income of LIC (Incrores)

F Y	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
LIC	132147	174425	206363	217274	261773

Source: LIC Annual reports.

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

Interpretation: It is quite clear from the table no 3 that there is significant increase in the total income of LIC over a period of five years.

Table No. 4: Market share of LIC in terms of total premium (In %)

F Y	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10
LIC	85.75	81.90	74.39	70.92	70.10

Source: IRDA annual reports.

Interpretation: Market share of LIC has consistently decreased but we should not forget that this calculation is out of the increased insurance cake. In totality LIC has progressed in all fronts.

CONCLUSIONS : The insurance today is essential for managing risk and it relieves the individual from burden of carrying on themself various risk faced in day to day operations.LIC is one which is efficiently functioning among many competitors in insurance industry .The study reveals that people of India have more faith and confidence in LIC. The LIC has not yet given its dominant market position to any of its competitors.

REFERENCES:

Books:

1 KaramPal(2004) Insurance management: Principles and Practice. Deep &Deep Publication.
2 Mathew.M.J (2005) Insurance Principles and Practices.Jaipur.RSBA Publications.
3 Mishra.M.N (1999)Insurance Principles and Practices.NewDelhi.SChand&Co.

REPORTS AND JOURNALS:

1 Annual reports of IRDA for different years-2005 to 2010.
2 Yogekshema-A journal of LIC-Various issues.

WEBSITES:

1 www.IRDA.india.org
2www.licindia.com

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

जल का आर्थिक एवं पर्यावरणीय महत्व एवं सरक्षण

डॉ. हरचरण सिंह भाटिया
सहायक प्राध्यापक वाणिज्य
शा0 नेहरू महाविद्यालय डोंगरगढ़
श्रीमती अनामिका तिवारी

जल जीवन की प्रथम आवश्यकता है। इसकी माँग पीने और घरेलू कार्यों के साथ ही साथ विभिन्न औद्योगिक उददेश्यों की पूर्ति में इसका उपयोग होता है। तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए कृषि में जल का उपयोग सिंचाई के लिए दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। इसके साथ ही निम्न मदों पर जल का व्यय सामान्यतः होता है।

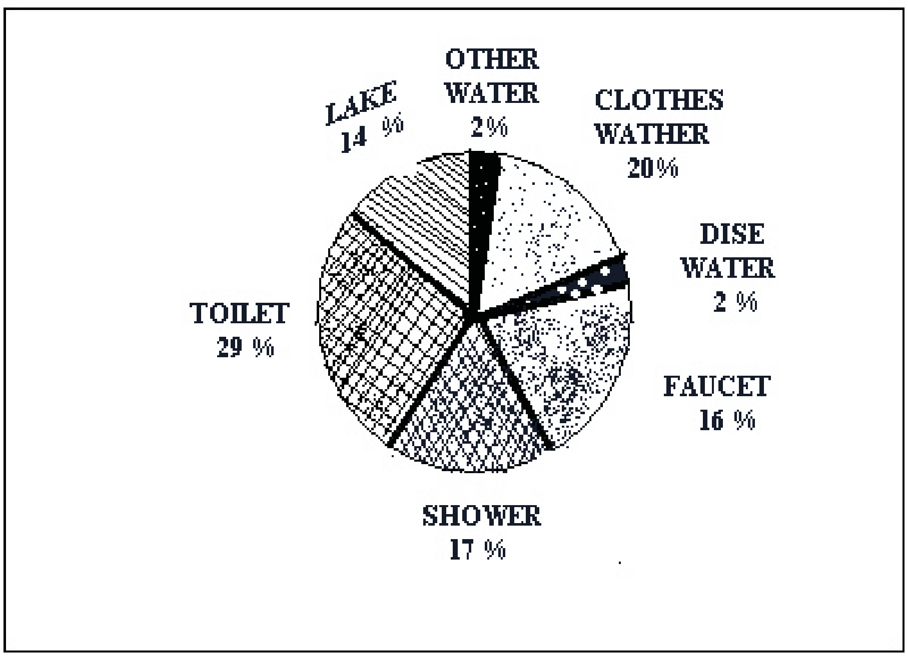

उपरोक्त मदों पर जल का व्यय प्रतिशत के आधार वर्गीकरण कर सकते हैं। जिनमें से हम अनावश्यक व्ययों को रोक सकते हैं। क्योंकि जल एक सीमित संसाधन हो जिसकी न तो प्रतिस्थापना की जा सकती है और ना ही व्यावसायिक उत्पादन किया जा सकता है।

वैज्ञानिक अनुमान के अनुसार पानी की सर्वाधिक खपत लगभग 73% खेतों की सिंचाई के रूप में होती है। इस जल से दुनियाभर में 27,100 करोड़ वर्ग मील क्षेत्र की सिंचाई होती है। उदयोगों में भी पानी के एक बड़े भाग की खपत होती है। अधिकांश परन्तु जल से ही उदभावित हुई है। प्रत्येक वस्तु जल द्वारा ही प्रतिपादित होती है। जल का उपयोग ऊर्जा और बिजली के निर्माण में भी किया जाता है तालाबों आदि में मछली पालन का जल संसाधन विकास कार्यों में एक महत्वपूर्ण स्थान है। पानी का उपयोग नौवहन अथवा अंतर्दशीय जल परिवहन के रूप में भी होता है।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

भूमि जल का अत्यधिक दोहन वनों की अंधाधुंध कटाई, हरितगह गैसों का प्रभाव तथा भयावह बनती प्रदूषण की समस्या के फलस्वरूप विश्व का परिस्थितिकीय संतुलन असंतुलित हो रहा है। बढ़ती आबादी, औद्योगिकीकरण,नगरीकरण सिंचित भूमि में वद्धि,पानी का दूरूपयोग जल प्रदूषण एवं स्वच्छ जल को सिकुड़ी स्त्रोत आदि के कारण पानी की समस्या बहुत बड़ी हो रही है।

पृथ्वी में केवल 3% स्वच्छ पानी है। जल संसाधनों की कमी प्राकृतिक वातावरण को भी खराब करती है। पानी के बिना कोई भी प्राणी जीवित नहीं रह सकता है। पानी का संरक्षण सतह तथा भू जल संसाधनों को प्रदूषण से बचाने में सहायता करता है। जल संरक्षण के अंतर्गत चलचक्र के वर्ष से लेकर समुद्र में पहुॅचने तक की प्रक्रिया को नियंत्रित करना सबसे बड़ा कार्य है। जल संरक्षण का प्रारभ वर्षा की बूंद के पृथ्वी तल पर गिरने के साथ ही होना चाहिए।

Total Water ON Earth

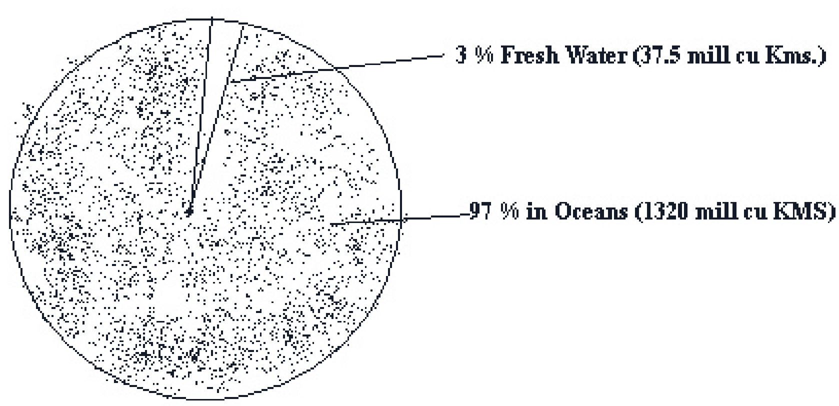

वास्तव में जल संरक्षण संपूर्ण प्राकृतिक संसाधन कें सबंद्ध संरक्षण से जल संरक्षण भी हो सकता है। ऊपर कहा गया है कि जल संरक्षण के लिए वनों तथा मिटटी का संरक्षण भी आवश्यक हो जाता है वस्तुतः इन सभी संसाधनों का संरक्षण तभी पूर्ण रूप से सफल हो सकता है जबकि इसके लिए परस्पर संबंद्ध प्रयास किया जाये।

जल संरक्षण के द्वारा पानी की खपत को एक तिहाई तक कम किया जा सकता है। 14% राज्यों में लगभग 100 जिले सूखाग्रस्त है। जल के सदुपयोग से पानी तथा सीवर की लागत को 30% तक कम कर सकते है। पानी को पंप से निकालने तथा शोधन में कम ऊर्जा उपयोग होने ऊर्जा की बचत होती है। पानी के सदुपयोग से बिल कम आता है। जिसमें उपभोक्ताओं की आर्थिक बचत होती है। विभिन्न पर्यावरणीय लाभ अर्थात स्थानीय झरनों में उपलब्ध पानी में वृद्धि, भूजल स्तर में स्थिरत प्रदूषण से सुरक्षा आदि। बड़े जलाशय तथा पौधों की आवश्यकता को कम करता है। भूजल की निकासी पर नियंत्रण की आवश्यकता को कम करता है।

<u>जल संरक्षण के घरेलू उपाय :–</u>

1. घर के बाहर जाते समय पानी का मुख्य वॉल्व बंद करे।
2. बाथरूम में शॉवर / बड़े बाथरूम का प्रयोग न करें।
3. कपड़े धोने के बाद बचे पानी को फर्श की सफाई में उपयोग करें।
4. ब्रश करते समय नल बंद कर लें।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

5. यह जांच करें कि घर में लीकेज तो नहीं हैं। टपकते नल के वॉशर बदलकर उन्हें ठीक करें।
6. कपड़े धोने के बाद बचे पानी को फर्श की सफाई में उपयोग करें।
7. अपशिष्ट जल को फ्लश में उपयोग करें।

सार्वजनिक स्थलों पर जल संरक्षण के उपाय :–

1. उपभोक्ताओं को पानी की बचत करने वाले नल एवं अन्य उपकरण लगाने के लिये प्रोत्साहित करें तथा यदि संभव हो तो इसके लिए छूट देय हो।
2. जलापूर्ति प्रणाली में लीकेज की सूचना स्थानीय निकायों का दें।
3. सार्वजनिक स्थानों पर जल बचाने के संबंध में निर्देश लगाए।
4. लोगों को जल संरक्षण तथा छत से वर्षा जल संचयन प्रणालियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करें।
5. सार्वजनिक सुविधाओं में अधिक पानी का उपयोग न करें।
6. उतना पानी ही प्रयोग करें जितनी आवश्यकता हों।

<u>जल संरक्षण हेतु सामाजिक जागरण :–</u>

1. जल चेतना समूह का हिस्सा बने तथा दूसरों को इसके लिए प्रोत्साहित करें।
2. छत से वर्षा जल संचयन को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करें।
3. औद्योगिक इकाइयों अपवाह को मानकों के अनुकूल शोधित करें जिसमें प्रदूषण न हो।
4. जल संरक्षण कार्यक्रमों से जुड़े सामाजिक संगठनों को प्रोत्साहित करे।

<u>कृषि कार्यों में जल संरक्षण के समुचित उपाय :–</u>

1. फसलों की जल आवश्यकता को जाने तथा आवश्यकतानुसार पानी का उपयोग करें। अनियमित रूप से सिंचाई न करें इसके बजाए एक नियमित पद्धति अपनाएँ।
2. फसल,मिट्टी एवं जलवायु के अनुकूल सिंचाई पद्धति अपनाएँ।
3. नहर के अंतिम छोर के पानी को भी रिसाइकिल करके सिंचाईं में उपयोग करे।
4. लीकेज को रोकने के लिए पाईप के जोड़ों को ठीक से जांच करें।
5. नहरे पक्की होनी चाहिए तथा सुनिश्चित करे कि उनमें कोई रिसाव न हो।

<u>संदर्भ सूची :–</u>

1. संसाधन एवं पर्यावरण :– डॉ0 चतुर्भुज मामोरिया एवं डॉ0 एम.एस सिसोदिया
2. पर्यावरण एवं पर्यावरणीय संरक्षण विधि की रूपरेखा :– डॉ0 अनिरूद् प्रसाद
3. छत्तीसगढ़ वृहद संदर्भ :– उपकार प्रकाशन
4. Web site – www.cgwb.gov.in

□□□

DMV Journal
Annual Journal of Durga Mahavidyalaya, Raipur (C.G.)

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

छत्तीसगढ़ के भोजन में विशिष्ट सब्जी (भाजी) का महत्व

डॉ.प्रदीपशुक्ला

मानव जीवन में भोजन का महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय व्यंजन में विशेषकरष्शाकाहारी व्यक्तियों के भोजन में सब्जियों की विशेष भूमिका है। सब्जियां मानव आहार का प्रमुख भाग है। व्यक्ति के शारीरिक विकास के लिए आवश्यक घटक यथा : खनिज लवण,विटामिन एवं रासायनिक तत्व हमें शाक–सब्जियों से प्राप्त होते है। भारत गांवों का देश है जहॉ अधिकांश ग्रामीण अभावयुक्त जीवनयापन करतें है।ग्रामीण छत्तीसगढ़ के आर्थिक रूप से कमजोर समुदाय भी गरीबी एवं अनभिज्ञता के कारण कुपोषण,एनीमिया,निमोनिया,सिकल सेल आदि से पीड़ित है। छत्तीसगढ़ प्रदेश में उपलब्ध खाद्य पदार्थो की विविधता तथा खाद्य पदार्थ में उपलब्ध पोषक तत्वों की मात्रा को प्रस्तुत करना एवं यह बोध कराना है कि क्या खाना उचित अथवा अनुचित है,शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य है।

मानव शरीर भोजन को विभिन्न रुप में अवशोषित कर शारीरिक कियाओं का सुचारु रुप से संचालन करता है। इस प्रक्रिया में शरीर को पर्याप्त कैलोरी की आवश्यकता होती है, यह कैलोरी भोजन से प्राप्त होती है। विभिन्न कार्य एवं आयु वर्ग के व्यक्तियों को पृथक – पृथक कैलोरी की आवश्यकता होती है। उदाहरणार्थ – 0–6 माह के बच्चे को 120, 1–3 वर्ष के बच्चे को 1200 कैलोरी,10–12 वर्ष के लोगों को 2400 कैलोरी जबकि 16–18 वर्ष को 2800 कैलोरी की आवश्कता होती है। इसके अतिरिक्त अत्याधिक श्रम करने वाले व्यक्ति,गर्भवती स्त्री, स्तनपान कराने वाली मॉ आदि को विभिन्न मात्रा में कैलोरी की आवश्कता होती है।

शारीरिक संरचना एवं विकास के लिए प्रोटीन,कैल्शियम,जल,पोटेशियम, विटामिन, फोलिक एसिड आदि वांछनीय है, जिसकी पूर्ति विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों से होती है। मनुष्य के शारीरिक विकास में इनकी भूमिका एवं महत्ता निम्न विवरण से स्पष्ट हो रहा है :

- प्रोटीन – यह शरीर निर्माता भोजन माना गया है। यह शरीर में मांस पेशी का निर्माण करता है। भोजन न करने पर शरीर प्रोटीन का उपयोग कर ऊर्जा प्राप्त करता है। शरीर की रचना में एक किलोग्राम वजन के लिए प्रतिदिन एक ग्राम प्रोटीन की आवश्कता होती है। गर्भवती एवं स्तनपान कराने वाली मां को प्रोटीन आवश्कता कमशः 15 ग्राम एवं 25 ग्राम अधिक होती है।प्रोटीन दलहन,सोयाबीन,अनाज,शाकभाजी,दूध,तिलहन आदि में प्रचूर मात्रा में उपलब्ध रहता है।
- कैलशियम – यह शरीर के समस्त हिस्सों में यथा हड्डियों दांतों,मांसपेशियों व रक्त में विद्यमान होता है। इसके अभाव में हृदय एवं पेशियों का संकुचन असंभव है। शरीर में कैलशियम की दैनिक आवश्यकता 400 से 600 मिग्रा. होती है जबकि गर्भावस्था में 1000 मिग्रा अथवा एक ग्राम अधिक आवश्यक्ता होती है। 50 वर्ष से अधिक आयु में अथवा वृद्धावस्था में इसकी आवश्यकता बढ़ती जाती है। महिलाओं के लिए प्रतिदिन 1200मिग्रा. कैल्शियम अनिवार्य है। कैल्शियम की पूर्ति दूध,दही,मक्खन,खोवा,भाजियां एवं फलों से होती है।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

- पोटेशियम – शरीर के विकास में पोटेशियम का उपयोग अल्प मात्रा में होती है। यह अल्प मात्रा शरीर में न हो तो पेशियों में संतुलन संभव नहीं है। यह पेशियों को कार्य करने में संतुलन प्रदान करती है। इसके प्रमुख स्त्रोत केला,कटहल,टमाटर एवं विभिन्न शाक –भाजियां है।
- फास्फोरस – हड्डी व दांत के लिए फास्फोरस आवश्यक है।इसकी प्रतिदिन आवश्यक्ता 1 ग्राम है।
- विटामिन – यह एक कार्बनिक पदार्थ है जो भोज्य पदार्थ में विद्यमान रहता है। विटामिन दो प्रकार के होते है : प्रथम, जल विलेय जिसमें बी.एवं सी विटामिन है, दूसरा वसा विलेय,जिसमें ए,डी,ई एवं के. विटामिन है। यह शारीरिक विकास एवं शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आवश्यक है।
- कार्बोहाइड्रेट – इसका शरीर संचालन में महत्वपूर्ण योगदान होता है, कार्बोहाईड्रेट से ही शरीर को उर्जा प्राप्त होती है। कार्बोहाईड्रेट ग्लूकोज,शर्करा,दुग्ध एवं स्टार्च आदि में विद्यमान होते है।
- लौह – यह लाल रंक्त कणिकाओं (आर.बी.सी.) का आवश्यक अंग है। लाल रंक्त कणिकाएं आक्सीजन की संवाहक होती है। एक वयस्क के लिए प्रतिदिन 20 – 30 किग्रा. लौह की आवश्यकता होती है। जो हरी पत्तीदार सब्जी,बाजरा,पालक,मटर,टमाटर एवं सेम में उपलब्ध होता है।

वैज्ञानिकों ने जिन पांच तरह के भोजन समूह को मनुष्य के शरीर के दृष्टि से आवश्यक माना है, वे छत्तीसगढ़ की थाली में दृष्टिगत नहीं होती है। रोटी या चांवल कार्बोहइड्रेट के प्रमुख स्त्रोत है,रोटी या चांवल अन्य व्यंजनों के मुकाबले ज्यादा पौष्टिक है। जबकि कॉन्टीनेण्टल या इटेलियन खाने में ब्रेड का उपयोग किया जाता है जो मैदा से निर्मित है, पाचन में ज्यादा समय लेता है।[1] शरीर के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण पोषण हमें दालों से प्राप्त होता है। अच्छे लिपिड प्रोफाइल के लिए दालों में घी का तड़का आवश्यक है।[2] घी हड्डी के जोड़ों के लिए ल्यूब्रिकेंट का काम करता है। सब्जियां फाइबर का खजाना है। इसमें विटामिन ,खनिज लवण आदि प्राप्त होते है, जो मानव शरीर की अनिवार्य आवश्यकता है। हमारे पाचन किया के लिये सहायक, अच्छा बैक्टिरिया दही से प्राप्त होता है। दही कैल्शियम का उत्तम स्रोत है। जब हम भोजन करते है तो पेट में कुछ अम्ल निर्मित होते है जो पाचन किया में सहयोग करती है। दही अम्ल के स्तर को बनाये रखने में मददगार होता है। सलाद शरीर का 'वैक्यूम क्लीनर, है अर्थात् यह पाचन किया के दौरान खराब चीजों को साफ करने का काम करता है व शरीर को ठंडक प्रदान करता है।

छत्तीसगढ़ के निवासियों का भोजन प्रायः चांवल (भात) और सब्जी–भाजी ही होता है, अर्थात् यहां के भोजन में सब्जियों का महत्वपूर्ण स्थान है। यदि सब्जियां अच्छी है तो खाना अच्छा होगा। इन्हें सब्जियां अपनी बाड़ी अथवा समीपस्थ क्षेत्र से प्राप्त होता है। छत्तीसगढ़ के सब्जियों में विविधता है यहां मौसम के अनुसार विभिन्न प्रकार की सब्जियां प्राप्त होती है, इन सब्जियों से ऊर्जा अधिक नहीं मिलती किन्तु विटामिन व शरीर प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है। सब्जियां एवं भाजियों में पोषक तत्व भिन्न–भिन्न होते है। यह हमें विभिन्न ऋतु में भोजन से ही प्राप्त होते हैं जिसे निम्न तालिका से स्पष्ट किया गया हैः

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

छत्तीसगढ़ की सब्जियों में पोषक तत्व की उपलब्धता

(प्रति 100 ग्राम)

सब्जी	कैलोरी	चूना	लोहा	विटामिन ए	विटामिन सी	पोटेशियम
तुरोई	17	18	0.5	33	5	50
भटा	24	18	0.9	74	12	200
मुनगाफुल	50	51	—	—	—	—
मुनगा	26	30	5.3	110	120	259
ग्वारफल्ली	16	130	4.5	198	49	—
खीरा	13	10	1.5	—	07	50
भिण्डी	24	10	1.2	427	137	—
करेला	60	23	2.0	126	96	152
सेमी	158	50	2.6	34	27	—
मटर	93	20	1.5	63	09	—
कुम्हड़ा	25	10	0.7	50	02	139
कच्चा अरहर	116	57	1.1	469	25	463
टमाटर	23	20	1.8	192	31	114
लहसून	77	50	2.3	18	11	—
मटर	93	20	1.5	83	09	—
केले का फुल	34	32	1.6	27	16	185
पपीता	27	28	0.9	—	17	216
प्याज की डंडी	41	50	7.5	595	17	109
कमल की डंडी (ढ़ेस)	234	405	60.6	0	3	3007
कच्चा केला	64	10	0.6	30	24	193
फुल गोभी	30	33	1.5	30	56	39
कटहल	51	30	1.7	—	14	338

छत्तीसगढ़ की भाजियों में पोषक तत्व की उपलब्धता

भाजी	कैल्शियम	लोहा	विटामिन ए. माइको ग्रा.	विटामिन सी. माइक्रो ग्रा.	फोलिक एसिड माइको ग्रा.	पोटेशियम
पालक	73	10.5	5580	28	51—123	—
मेथी	395	16.5	2340	52	—	—
मुनगा	400	07	6780	220		259
पोई	200	10	7440	87	—	—
बोहार	1740					
चरौटा	520	12.4	10152	5.2		
चिरपोटी	410	20.5	—	11		34—186
चना	—				34—186	
तिवरा	160	7.3	3000	41	—	—
मूंग	—	—	—		24.5—140	—

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

उड़द	—	—	—	—	24—132	—
अरहर	—	—	—	—	19—103	—
कोचई	—		12000	—	—	550
धनिया	184	18.5	6918	135	—	256
बथुआ	150	4.2	1740	35	—	—
बरबट्टी	290	20.1	6072	—	—	—
चौलाई कांटेदार	800	22.3	3564	33	—	—
चौंलाई सादा	397	25.3	5520	99	—	—
फुलगोभी पत्ती	626	40	—	—	—	—
मूली भाजी	265	3.6	5295	81	—	—
कुम्हड़ा भाजी	392	—	—	—	—	—
राजगीरा	530	18.4	14190	81	—	—
कुसुम	185	5.7	3540	15	—	—
सरसों	155	16.3	2622	33	—	—
करीपत्ती	830	0.93	7560	4	—	—
खोटनी	800	—	—		41—149	241
पुदीना	200	15.8	1620	27	9.7—11	—
उरिदा	340	23.3	978	61	—	—
पत्तागोभी	39	—	120	124	—	—
आलू भाजी	158	130	—	—	—	—
अमारी	410	20.5	—	11	—	—
नीम फुल पत्तियां (परिपक्व)	510	17.1				—
नीम फुल पत्तियां (कोमल)	130	25.3				—

स्त्रोत :— (जन स्वास्थ सहयोग : एस—295 ग्रेटर कैलाश 2, नई दिल्ली, राज्य पंचायत संसाधन केन्द्र रायपुर)

छत्तीसगढ़ के स्थानीय निवासियों के भोजन में भाजी, सब्जी के रूप में नियमित रूप से शामिल होता है। मानव शरीर के विकास के लिए आयरन, कैल्शियम, विटामिन, खनिज लवन, आदि तत्वों की आवश्यकता होती है।जिसकी पूर्ति भाजियों के सेवन से किया जा सकता है। यदि हमे स्वस्थ्य रहना है तो प्रतिदिन अपने भोजन में भाजियों को एक विशेष स्थान देना होगा।

संदर्भ ग्रंथः

- वर्मा.प्रमिला.कांति पाण्डेय. डॉ. आर.पी. अग्रवाल 1974 : शरीर किया विज्ञान.हिन्दी ग्रंथ अकादमी बिहार।
- सतरंगी. जी.डी. 1987 : स्वास्थ्य विज्ञान एवं जनस्वास्थ्य. विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
- आचार्य चर्तुसेन 1998 : आरोग्य शास्त्र प्रभात प्रकाशन.नई दिल्ली।

□□□

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

गरीबी रेखा, गरीब, गरीबी एवं गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमः—चिंता या चिंतन

Dr.G.D.S. Bagga , Govt.College Dhamdha Disst-Durg (C.G.)
Dr. Harjeet Bhatia , Govt.Digvijay College Rajnandgaon (C.G.)

राजनैतिक क्षेत्र की वृहद कर्म भूमि '' गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम '' है । इसके लिए गरीब एवं गरीबी की आव यकता पड़ती है । गरीब को चिन्हाकिंत करने का आधार गरीबी रेखा है जो आज के समय में सर्वाधिक चिंता या चिंतन की विषयवस्तु बन रही है । गरीबी रेखा का तात्पर्य आय के उस स्तर से लिया जाता है जिससे आय कम होने पर व्यक्ति अपनी भौतिक आवश्यकताओ को पुरा नही कर सकता । वैश्विक गरीबी रेखा 1.25 डालर प्रतिदिन की है इससे कम आय होने पर व्यक्ति गरीब माना जाएगा। यूरोपीय गरीबी रेखा का तात्पर्य आय के उस स्तर से लिया जाता है जो औसत राष्ट्रीय आय के 60 % से कम हो । भारत सरकार के योजना आयोग ने शहरो के लिए 32रू. प्रतिदिन (965रू. मासिक) तथा गांव के लिए 26रू. प्रतिदिन (965रू. मासिक)गरीबी रेखा का निर्धारण किया था किन्तु तेन्दुलकर समिति की सिफारि ा के आधार पर इसे परिवर्तित कर भाहरो के 28.65 रूपये (859.60 रूपये) एवं गांव के लिए 22.42 रूपये (672.80 रूपये मासिक) गरीबी रेखा का निर्धारण किया । ऊर्जा मानको के आधार पर ग्रामीण गरीबी रेखा 2400 कैलोरी एवं भाहरी गरीबी रेखा 2100 कैलोरी का मापदण्ड तय किया गया था किन्तु तेन्दुलकर समिति ने इसे कम करके क्रमशः ग्रामीण कैलोरी 1820 एवं शहरी कैलोरी 1795 मानकर गरीबी रेखा के नये माप दण्ड प्रस्तुत किए । देश में इन मापदण्डो का व्यापक विरोध को देखते हुए योजना आयोग में तेन्दुलकर समिति की सिफारिशो की समीक्षा के लिए प्रसिद्ध अर्थशास्त्री सी रंग राजन की अध्यक्षता में विशेषज्ञो की समिति गठित की है ।

गरीबी रेखा के मापदण्डों के आधार पर देश में गरीब को चिन्हाकिंत कर गरीबी की दशा ज्ञात की जाती है जो इतिहास के झरोखे में इस प्रकार है

तालिका क्रमांक :—01
गरीब एवं गरीबी

वर्ष	गरीबी अनुपात			गरीबो की संख्या (करोड़ो में)		
	ग्रामीण	शहरी	संयुक्त	ग्रामीण	शहरी	संयुक्त
1973.74	56.4	49.0	54.9	26.10	06.00	32.10
1977.78	53.1	45.2	51.3	26.40	06.50	32.90
1983	45.7	40.8	44.5	25.20	07.10	32.30
1987.88						
1993.94	39.1	38.0	38.9	23.20	07.50	30.71
1993.94	37.3	32.4	36.0	24.40	07.60	32.00
1999.2000 (30 दिवसीयप्रत्याहतन)	27.10	23.6	26.1	19.30	06.70	26.00

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

Source:- Ninth Five Year Plan Vol. Economic Sarvey 2001-02						
2004.5	41.8	25.7	37.2			40.72
2009.10	33.8	20.9	29.8			34.47

स्त्रोतः– चौथे OECD फोरम में योजना आयोग के उपाध्यक्ष द्वारा प्रदत्त जानकरी एवं भारत सरकार के योजना आयोग के 19 मार्च 2012 का प्रेस नोट

अर्जुन सेनगुप्ता समिति ने अप्रेल 2009 के प्रतिवेदन में देश की 77% जनसंख्या को गरीब माना है जबकि एन.सी. सक्सेना समिति के अनुसार देश की 50% जनसंख्या गरीब है । विश्व बैंक एवं विश्वमुद्रा कोष ने ''ग्लोबल मॉनिटरिंग रिपोर्ट 2011 : इंप्रुविंग द आइस ऑफ एचिंविंग द मिलेनियम डेवलेपमेंट गोल्स'' नामक अपनी रिपोर्ट में भारत के संदर्भ में जानकरी दी है कि 1990 में 51.3%, 2005 में 41.6% जनसंख्या गरीब थी जो 2015 तक घटकर 22.4% होने की आशा है । गरीबी रेखा द्वारा चिन्हाकिंत गरीबो से उत्पन्न गरीबी रूपी अभि ाप को समाप्त करने के लिए देश एवं प्रदेश भाासन के अनेकानेक विभाग जैसे पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, महिला एवं बाल विकास , विभाग कृषि विभाग, उघानिकी विभाग, लोक स्वास्थ यांत्रिकी विभाग, शिक्षा विभाग, मत्स्य विभाग, पशु पालन विभाग अनेक गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमो का संचालन कर रहे है । इन गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमो को 5 आधार पर निम्नानुसार विभक्त कर सकते है

तालिका क्रमांक–02
गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम

आधार	गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम
1. स्वरोजगारोन्मुखी गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम	ट्राईसेम(1980.81), आइ.आर.डी.पी.(1980.81) उन्नत इलकिटस योजना (1992.93), प्रधानमंत्री रोजगार योजना (1994.95), इंदिरा महिला रोजगार योजना (1995.96), स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना (1999.00), अंत्योदय स्वरोजगार योजना, महिला समृद्धि योजना, छत्तीसगढ़ ग्रामीण गरीबी उन्मूलन परियोजना नवा अंजोर, राष्ट्रीय सम विकास योजना, रोजगार गारण्टी योजना ।
2. रोजगारोन्मुखी गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम	ग्रामीण जन भाक्ति कार्यक्रम (1960), ग्रामीण रोजगार क्रेश कार्यक्रम (1971.12), पायलेट गहन ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम (1972.73), सूखा आंशकित क्षेत्र कार्यक्रम (1973.74), काम के बदले अनाज योजना (1977.78), अन्त्योदय योजना (1977.78), राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम (1980.81), जवाहर रोजगार योजना (1989.90), सुनिश्चित रोजगार योजना (1993.94), स्वर्ण जयंती ग्रामीण स्वरोजगार योजना (1999.00), सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना (2000.01), मनरेगा (2005.

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

		06), ।
3.	मूलभूत सुविधा सृजित करने वाले गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम	ग्रामीण आवासी योजना(1957.58), ग्रामीण विधुतीकरण योजना (1969 .70), न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम (1975.76), बीस सूत्रीय कार्यक्रम (1975.76), राष्ट्रीय आवास योजना (1985.86), राष्ट्रीय उन्नत चूल्हा कार्यक्रम (1986.87), कूटीर ज्योति कार्यक्रम (1988.89), दस लाख कूप योजना (1989.90), ग्रामीण सम्पर्क मार्ग योजना (1996.97), प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना (2000.01), प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (2000.01), सार्वभौमिक स्वास्थ बीमा योजना (2003. 04), अन्नपूर्णा दाल भात योजना, मूक्तिधाम योजना, गृह लक्ष्मी योजना, अटल आवास योजना ।
4.	सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने वाले गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम	समन्वित बाल विकास योजना (1975.76), प्रौढ़शिक्षा कार्यक्रम (1978 .79), अनौपचारिक शिक्षा योजना (1979.80), किशोरी बालिका योजना (1985.86), व्यापक फसल बीमा योजना (1985.86), सामाजिक सूरक्षा बीमा योजना (1989.90), बालश्रम उन्मूलन योजना (1994.95), राष्ट्रीय वृद्वावस्था पेंशन (1994.95), राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजना (1994.95), राष्ट्रीय मातृत्व लाभ योजना (1994.95), बालिका समृद्वि योजना (1997.98), राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना (1999.00), अन्नपूर्णा योजना (2000.01), सर्वशिक्षा अभियान (2001.02), सरस्वती सायकल प्रदाय योजना, दतक पुत्री शिक्षा योजना, निशक्तजन छा़त्रवृति, वृद्वाश्रमो का संचालन, बुक बैंक योजना ।
5.	अन्य गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम	किसान समृद्वि योजना,कुक्कट पालन योजना विकास, इंदिरा हरेली सहेली योजना, मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम, मिनीमाता भाहरी निर्धन बीमा योजना ।
6.	छ.ग. भाासन की योजनाए	मुख्यमंत्री शहरी विधुतीकरण योजना, मुख्यमंत्री ग्राम सड़क एवं

विभिन्न लक्ष्यो को लेकर बनाये गये अनेकानेक गरीबी रोधक कार्यक्रमो के बावजूद भाासकीय आंकड़ो के अनुसार 29.8 % जनसंख्या गरीब है जिसका प्रमुख कारण, आय का असमान होना, देश की सम्पदा का असमान वितरण होना , आर्थिक विकास की दर कम होना, जनसंख्या वृद्विदर अधिक होना, शिक्षित एवं प्रशिक्षित श्रम की कमी होना, औद्योगिक जगत का पर्याप्त विस्तार ना होना, ग्रामीण जगत का कृषि पर अधिक निर्भर होना तथा बेकारी की अधिकता है ।

फोर्ब्स पत्रिका द्वारा भारत के प्रथम 100 सबसे अमीर व्यक्ति की जो सूची जारी की है उसमे प्रथम 11 व्यक्तियो की सम्पत्तिया एवं वार्षिक वेतन इस प्रकार हैः–

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

तालिका क्रमांक–03

भारत के प्रथम 11 अमीर व्यक्तियो की सूची

क्रमांक	व्यक्ति का नाम	सम्पत्ति
01	मुकेश अंबानी	21.0 अरब डालर
02	लक्ष्मी मीत्तल	16.0 अरब डालर
03	अजीम प्रेम जी	12.2 अरब डालर
04	पालोन जी मिस्त्री	09.8 अरब डालर
05	दिलीप संधवीय	09.2 अरब डालर
06	आदि गोदरेज	09.0 अरब डालर
07	सावित्री जिंदल	08.2 अरब डालर
08	शशि–रवि रूइया	08.1 अरब डालर
09	हिंदूजा भाई	08.0 अरब डालर
10	कुमार मंगलम बिरला	07.8 अरब डालर
11	अनिल कुमार अंबानी	06.0 अरब डालर
कुल सम्पत्ति		115.3 अरब डालर

स्त्रोतः– नई दुनिया दैनिक समाचार पत्र 26 अक्टूबर 2012

तालिका क्रमांक–04

सर्वाधिक वाषिक आय वाले भारतीय व्यक्ति

क्रमांक	व्यक्ति का नाम	वार्षिक वेतन
01	नवीन जिन्दल	69.756 करोड़ रूपये
02	कलानिधि मारन	37.080 करोड़ रूपये
03	कावेरी मारन	37.080 करोड़ रूपये
04	पवन मुंजल	30.880 करोड़ रूपये
05	बी.एल.मुंजल	30.638 करोड़ रूपये
06	तोषिका नाकागावा	30.030 करोड़ रूपये
07	सुमिहिसा फुकुडा	29.910 करोड़ रूपये
08	ओंकार कंवर	29.690 करोड़ रूपये
09	पी. पटेल	28.630 करोड़ रूपये
10	कुमार एम. बिरला	28.467 करोड़ रूपये
कुल		352.161 करोड़ रूपये

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

स्त्रोतः– इंटरनेट से प्राप्त

तालिका क्रमांक– 03 में स्पष्ट है कि 115.3 अरब डालर की सम्पत्ति केवल 11 व्यक्तियो के पास है जबकि तालिका क्रमांक–04 यह प्रदर्शित कर रही है कि 352.161 करोड़ रूपये वेतन मात्र 10 व्यक्ति प्राप्त कर रहे है । आयो का यह समंक जाल हमें '' अमीरी रेखा'' के निर्धारण की ओर उन्मूख कर रहा है ।

गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमो को प्रभावकारी बनाने के कदम

गरीबी को चिन्हाकिंत करने के बाद गरीबी दुर करने के लिए बनाये गये गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमो को प्रभावी बनाने के उपाय इस प्रकार है

1. व्यवहारिक गरीबी रेखाः– व्यवहारिक गरीबी रेखा का निर्धारण किया जाना चाहिए ताकि वास्तविक गरीबों की पहचान की जा सके ।
2. गरीबी उन्मूलन विभाग की स्थापनाः– अलग–अलग विभागो द्वारा गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम ना बनाया जाए वरन इन्हे बनाने के लिए अलग से विभाग, मंत्री, कार्यलय बनाया जाये ।
3. गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों का संचालनः–देश एवे प्रदेशो में गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमो को प्रभावपूर्ण तरीको से संचालित करने के लिए '' देश की राजधानी'' में ''मुख्य नियंत्रक गरीबी उन्मूलन विभाग'', राज्यों की राजधानी में ''नियंत्रक गरीबी उन्मूलन विभाग'' एवं देश के प्रत्येक जिले में ''एक भवन'' के नीचे ग्रामीण सचिवालय बनाया जाये ।
4. गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों का निर्माणः– जिस प्रकार हमारे देश के विशेषताएं अलग अलग है ठीक उसी प्रकार इनकी समस्याएं एवं आवश्यकताएं भी अलग अलग है अतः गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों का निर्माण जिला स्तर में ग्रामीण सचिवालय के द्वारा किया जाना चाहिए ताकि उस जिले के लोगों को अधिकतम एवं श्रेष्ठतम ढंग से लाभ पहुचाया जा सके ।
5. ग्रामीण सचिवालय में नियंत्रक सेल का गठनः– किसी भी कार्य को प्रभावी तरीके से लक्ष्योन्मुख करने के लिए नियंत्रण की आवश्यकता होती है अतः देश, प्रदेश एवं जिला स्तर के विभागो में दौरा एवं नियंत्रक अधिकारी, प्रशिक्षित मार्गदर्शक तथा अनुभवी अंकक्षको की नियुक्ति की जाए । ग्रामीण सचिवालय अपनी गतिविधियो का प्रतिवेदन निर्धारीत अवधि में प्रदेश मुख्यालय को एवं प्रदेश मुख्यालय अपना प्रतिवेदन देश मुख्यालय को देवे ।
6. जन सहभागिताः– जन मानस को गरीबी रोधक कार्यक्रम से जोड़ने के लिए निबंध स्पर्धा महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, विधायक ,सांसद, नगरी एवं ग्रामीण निकायो पर आयोजित की जाये जिसमे श्रेष्ठतम निबंध को पुरूस्कृतं किया जाये ।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

7. मूल्यांकन, संशोधन एवं नवीनीकरणः— बनाये गये गरीबी रोधक कार्यक्रमो का समय समय पर मूल्यांकन करना चाहिए तथा बदलते परिवेश के अनुरूप उनमे संशोधन कर नवनीकृतं रूप प्रदान करना चाहिए ताकि गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम अधिक कारगर हो सके ।

8. न्यूनतम औपचारिकताएः— गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमो से जुड़ने के लिए निर्धारीत औपचारिकताए सरल, न्यूनतम एवं पारदर्शी होना चाहिए ताकि ''वास्तविक गरीबो'' को लाभ मिल सके ।

9. सभी चैनलो के लोकप्रिय धारावाहिको में प्रचार प्रसारः—दे ा, प्रदे ा एवं सचिवालय व्दारा निर्मित गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमो को अनिवार्य रूप से टी.आर.पी. के आधार सर्वाधिक लोकप्रिय कार्यक्रमो में निः ुल्क प्रसारण के नियम संसद, विधानसभा द्वारा बनाये जाये ताकि दे ा की जनता इनसे परिचित होकर ''पात्र व्यक्ति'' व्यक्ति इनके लाभार्थी बन सके ।

10. ि ाक्षा एवं परिवार के महत्व का प्रचारः— गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमो को बढ़ावा देने के लिए ि ाक्षा के विस्तार एवं परिवार के छोटे स्वरूप का महत्व लोगो को बताना चाहिए ताकि गरीबी दूर करने की दि ाा में कारगर उपाय हो सके ।

11. आर्थिक विकास की गति तीव्र करनाः— आर्थिक विकास की गति को तीव्र करने के लिए प्रयास करना चाहिए क्योकि इससे बढ़ने वाली आय गरीबी दूर करने में सहायक होती है । इस लक्ष्य को पाने के लिए हमे रोजगारोन्मुखी एवं स्वरोजगारोन्मुखी गरीबी उनमूलन कार्यक्रमो को बढ़ावा देना होगा । सकल घरेलु उत्पाद G.D.P. एवं आर्थिक दर विगत अवधियों में इस प्रकार रही —

तालिका क्रमांक—05

सकल घरेलू उत्पाद(2004.05 कीमतो पर आधारित)

वर्ष	प्रथम तिमाही	द्वितीय तिमाही	तृंतीय तिमाही	चतुर्थ तिमाही
2008.09	7.8	7.5	6.1	5.8
2009.10	6.0	8.6	6.5	8.6
2010.11	8.5	7.6	8.2	9.2
2011.12	8.0	6.7	6.1	5.3
2012.13	5.5			

स्त्रोतः— प्रतियोगिता दर्पण नवम्बर 2012 अंक पृष्ठ 451 । विभिन्न पंचवर्षीय योजना में आर्थिक विकास की दर लक्ष्य एवं प्राप्ति निम्नानुसार रही :—

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

तालिका क्रमांक–06

पंचवर्षीय योजनाओ में आर्थिक वृद्धि दरः लक्ष्य एवं प्राप्ति (प्रति ात)

योजना	अवधि	वृद्धि दर का लक्ष्य	प्राप्त वृद्धि दर
पहली	1951.56	2.1	3.5
दूसरी	1956.61	4.5	4.2
तीसरी	1961.66	5.6	2.8
तीन एकवर्षीय	1966.69	–	3.9
चौथी	1969.74	5.7	3.2
पॉचवी	1974.79	4.4	4.7
एकवर्षीययोजना	1979.80	–	5.2
छठवी	1980.85	5.2	5.5
सातवी	1985.90	5.0	5.7
वार्षिक योजना	1990.92	–	3.4
आठवी	1992.97	5.6	6.5
नवी	1997.02	6.5	5.5
दसवी	2002.2007	7.9	7.8
ग्यारहवी	2007.2012	9.0	7.9
बारहवी	2012.2017	8.2 Note- 12 वी योजना के एप्रोच पेपर में लक्ष्य 9 : था जिसे संशोधन किया गया है	

स्त्रोतः– प्रतियोगिता दर्पण नवम्बर 2012 अंक–पृष्ठ 453 । इस तालिका के अध्ययन से स्पष्ट है कि 2002 के बाद देश में जो आर्थिक विकास की गति प्राप्त की है उसे ना केवल बनाये रखते हुए वरन उसमे वृद्धि कर गरीबी उन्मूलन की दशा में सार्थक प्रयास किया जा सकता है ।

निष्कर्ष :–

इस शोध कर्म का अंतिम निष्कर्ष यही हैं कि गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम तभी सफल हो सकता हैं जब व्यवहारिक गरीबी रेखा निर्धारित कर वास्तविक गरीबों को चिन्हाकिंत करतें हुए लाभार्थी बनाया जायें।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

संदर्भ ग्रंथ

(1) गरीबी का मकडजाल : ब्रम्हदेव शर्मा
(2) ग्रामीण निर्धनता : आनंद प्रकाश मिश्रा
(3) ग्रामीण विकास एवं अर्थव्यवस्था : सुबह सिंह यादव
(4) निर्धनता उन्मूलन एवं ग्रामीण विकास : सुगन चंद कलवार एवं तेजराम मीणा
(5) भारतीय अर्थव्यवस्था : डॉ.बी.एल. माथुर
(6) भारतीय अर्थव्यवस्था : रूद्रदत एवं सुंदरम
(7) भारतीय अर्थव्यवस्था : एम.के. मिश्रा एवं पुरी
(8) भारत की पंचवर्षीय योजनाए एवं निर्धारण : रविशंकर
(9) भारत की पंचवर्षीय योजनाए एवं निर्धारण : शिवशंकर जमुआर
(10) गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमो के मेन्यूअल
(11) छत्तीसगढ़ पंचमन
(12) छत्तीसगढ़ परिवेश
(13) शोध पत्रिका रिसर्च लिंक इन्दौर
(14) दैनिक समाचार पर नवभारत, दैनिक भास्कर, नई दुनिया
(15) इंटरनेट से प्राप्त सामाग्री
(16) प्रतियोगिता दर्पण अंक नवम्बर 2012

□□□

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

मादक पदार्थों का बढ़ता दुरूपयोग मानव समाज के लिए घातक

डॉ. अनिता राजपुरिया

मानव जीवन दो विरोधी प्रवृत्तियों का मिलन स्थल है। कभी मानव पर सात्विक प्रवृत्तियाँ हावी हो जाती है तो कभी तामसिक। यदि सात्विक प्रवृत्तियाँ प्रभावी हो तो मनुष्य आदर्श नागरिक बनकर देश एवं समाज की उन्नति में सहायक सिद्ध होता है। इसके विपरीत यदि तामसिक प्रवृत्तियों का जीवन में समावेश हो जाये तो मानव पतनोन्मुख होकर राष्ट्र एवं समाज के लिए भी घातक बन जाता है। ऐसी ही एक बुराई है नशीले पदार्थो का सेवन। कैसी आत्म–प्रवंचना है? कैसा सरासर धोखा है? शराब के एक पैग में, गांजे के एक दम में, भांग के एक घूंट में, स्मैक के एक कश में, जीवन के सारे दुःखों को डूबो दो, सारे अभावों को भूल जाओ। कुछ घड़ी को सारे गमों से दूर एक अनोखी सुख–निद्रा में निराले सपनों में खो जाओ। यह पलायनवादी मानसिकता, अपने में खो जाने की मजबूरी आखिर समाज में क्यों पनप रही है? युवा पीढ़ी के दिलों में यह घुन क्यों डेरा डाल रहा है?नशा एक ऐसा व्यसन है जिसके शिकंजे में आज सारा विश्व जकड़ा हुआ है।

वर्तमान काल में मुख्य नशीले पदार्थ है– शराब, अफीम, चरस, गांजा, भांग, ताड़ी, कोकीन, ब्राउन शुगर, हैरोइन, तम्बाकू आदि। इनमें से शराब, अफीम, गांजा, चरस, कोकीन, ब्राउन शुगर, हैरोइन आदि अत्यंत तीव्र नशा करने वाले पदार्थ है। चाय, काफी, बिड़ी, सिगरेट, हल्का नशा करने वाले पदार्थ है। हमारी चिन्ता का विषय मुख्यतः शराब व अन्य तीव्र नशा करने वाले पदार्थ है। गांधी जी ने कहा था "शराब की ओर लपकना धधकती हुई भट्टी और चढ़ी हुई नदी की ओर लपकने से भी ज्यादा खतरनाक है, भट्टी से तो केवल शरीर का नाश होता है, मगर शराब शरीर और आत्मा दोनों का नाश करती है।" यह कथन पूर्ण रूप से सत्य है फिर भी न जाने क्यों इन घातक नशे का प्रचलन बढ़ता ही जा रहा है। नशा चाहे शराब का हो या अन्य तीव्र नशीले पदार्थों का, यह तो हमेशा घातक ही होता है। इंग्लैण्ड के ग्लैडस्टोन ने लिखा है "कि मद्यपान से एवं तीव्र नशीले पदार्थों से मनुष्य जाति की जितनी हानि हुई, उतनी युद्ध, रोगों, दुर्भिक्ष से भी नहीं हुई।" नशा करने से मनुष्य में हृदय रोग, गुर्दा रोग, फेफड़ों के रोग आदि हो जाते है।

विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, शासकीय बी.सी.एस. महाविद्यालय, धमतरी (छ.ग.)

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

वास्तविकता यह है कि मादक द्रव्य–व्यसन एक ऐसी दशा है जिसमें किसी नशीले पदार्थों का सेवन करने से व्यक्ति उसका इतना अधिक अभ्यस्त हो जाता है कि उसका उपयोग किये बिना वह नहीं रह सकता। मादक द्रव्य व्यसन की प्रकृति की कुछ प्रमुख विशेषताएं निम्नांकित है–

1. मादक द्रव्य का अर्थ कुछ विशेष पत्तियों, जड़ी बुटियों या रासायनिक पदार्थों से बनने वाली नशीली वस्तुओं से है।
2. इसके सेवन से व्यक्ति में उनके उपयोग की तीव्र इच्छा उत्पन्न होने लगती है।
3. जैसे–जैसे इन पदार्थों के सेवन की अवधि बढ़ती है, उनकी मात्रा या खुराक में भी वृद्धि होती रहती है।
4. कुछ समय बाद व्यक्ति इसके उपयोग पर इतना अधिक निर्भर हो जाता है कि उसके बिना वह अपने आपको सामान्य महसूस नही करता।
5. यदि नियोजित रूप से इसका उपयोग बन्द न किया जाये तो इन पदार्थों का सेवन व्यक्ति के लिए प्राणघातक बन जाता है।

मादक पदार्थों के दुरूपयोग को न केवल विपथगामी (Aberrant) व्यवहार के रूप में बल्कि एवं सामाजिक समस्या की तरह भी देखा जा सकता है। पहले दृष्टिकोण से इसे व्यक्ति के सामाजिक असमायोजन के प्रमाण के रूप में माना जाता है, जब कि दूसरे दृष्टिकोण से इसे वह सुविस्तृत स्थिति कहा जाता है जिसमें समाज के लिए घातक व क्षतिप्रद परिणाम मिलते है। भारत ने केवल मादक द्रव्यों के लिए मुख्य पारगमन केन्द्र (Transit) (जहां से मादक द्रव्यों की तस्कर कुछ देशों से अन्य देशों में की जाती है।) बन गया है, अपितु मादक द्रव्यों का सेवन भी गम्भीर रूप से बढ़ रहा है। लगभग एक दशक पूर्व के अनुमान के अनुसार भारत में लगभग 15 लाख व्यक्ति हैरोइन के व्यसनी थे। (मुख्यतः शहरों में), लगभग 45 लाख अफीम के (मुख्यतः गांवों में) और लगभग 50,000 प्रकट रूप से घातक व मति भ्रष्ट करने वाले द्रव्यों के (मुख्यतः विद्यार्थी) (द इलस्ट्रेटेड वीकली, जून 26 जुलाई 2001) हैरोइन दुरूपयोगियों की संख्या का 1989 में 5 लाख से बढ़कर, 1993 में 12 लाख और 1996 में 16 लाख हो जाना स्पष्ट करता है कि मादक पदार्थों का सेवन कैसे गम्भीर समस्या बनती जा रही है। भारत वैघ अफीम का सबसे बड़ा उत्पादक है। जब सरकार ने इसके लिए 450 रूपये प्रति ग्राम खरीद मूल्य निश्चित किया है, तस्कर इसे 80,000 रूपये प्रति ग्राम मूल्य में खरीदते

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

है। सेवन करने वालों तक पहुंचते–पहुंचते इसका मूल्य बहुत अधिक हो जाता है। भारत के मादक द्रव्य सरदारों का घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में केवल हैरोइन का ही मासिक विक्रय 200 और 350 करोड़ रूपयों के बीच माना गया है। 2000 और 2010 के बीच अवैध द्रव्यों का जब्त करना बहुत ज्यादा बढ़ गया है। पूरे भारत में हर वर्ष लगभग 25,000 से 35,000 के बीच द्रव्य अवैध विपणन (Drug Trafficking) के मामले पकड़े जाते है। पकड़े गये मादक द्रव्यों में सब से अधिक गांजा और उसके बाद हशीश, अफीम, हैरोइन होते है उदाहरण के लिए 1998 में पकड़े गये कुल द्रव्यों (75,602 किलोग्राम) में से 82.8 प्रतिशत गांजा था, 11.2 प्रतिशत हशीश, 2.4 प्रतिशत अफीम और 0.8 प्रतिशत हैरोइन (क्राइम इन इंडिया, 1998 : 223)। हर वर्ष लगभग 25,000 व्यक्तियों को द्रव्य अवैधविपणन में पकड़ा जाता है।

पिछले डेढ़ दशक के मादक पदार्थों के दुरूपयोग पर भारत में अनेक अनुसन्धान किये गये है, परन्तु इनमें से अधिकांश समाजशास्त्रियों द्वारा नहीं, अपितु डाक्टरों और मनोरोग–चिकित्सकों द्वारा किये गये। द्रव्य की अवधारणा में अन्तर होने के कारण इनके निष्कर्षों में भी अन्तर मिलता है। यदि शहरों को मादक द्रव्यों के सेवन का आधार मानकर देखा जा जाए तो देश में सर्वाधिक व्यसनियों की संख्या कलकत्ता में मिलती है। सन् 2000 के अध्ययन के अनुसार मुम्बई में व्यसनियों की संख्या 2 लाख थी, अमृतसर में व्यसनियों की संख्या 1 लाख के पीछे 2500 थीं, और दिल्ली में व्यसनियों की संख्या 8 हजार थी। दीमापुर (उत्तर–पूर्वी पहाड़ी क्षेत्र) में कुल जनसंख्या के 10 प्रतिशत व्यक्ति हेरोइन, चरस, गांजा व भांग आदि के व्यसनी थे, जब कि इसी क्षेत्र गौहाटी और इम्फाल (मणीपुर राज्य) में व्यसनियों की संख्या कुल जनसंख्या की 10 प्रतिशत से 30 प्रतिशत के बीच थी। पुरी (उड़ीसा) में मादक द्रव्यों के दुरूपयोग की संस्कृति आरम्भ से ही पायी जाती है। क्योंकि यहां अफीम, भांग, गांजा के उपयोग को परम्परागत महत्व मिला हुआ है। परन्तु हेरोइन व ब्राउन शुगर का सेवन 1980 के दशक से ही आरम्भ हुआ था। इस शहर में विभिन्न द्रव्यों के व्यसनियों की संख्या कुल जनसंख्या की 20 प्रतिशत थी। बिहार राज्य के धनबाद शहर में अनुसंधान के अनुसार गांजा, भांग, बार्बिटयुरेट और 1980 के बाद हिरोइन, चरस, मार्फीन आदि का सेवन काफी संख्या में था। जोधपुर शहर में जहां अफीम का उत्पादन बहुत है कुल जनसंख्या में से 2 प्रतिशत और 10 प्रतिशत के बीच लोगों में व्यसन था, यानी लगभग 10,000 और 50,000 के बीच

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

लोगों में। कानपुर शहर भी मादक द्रव्य शहर के रूप में उद्गमन होता पाया गया। अध्ययन के अनुसार, शहर कुल जनसंख्या (1931 में 16.39 लाख और 1997 में 23.2 लाख) के 15–60 आयु के बीच कुल 5,90,291 व्यक्तियों में से 34,769 द्रव्य–सेवनकर्ता पाये गये। मादक द्रव्यों में हेरोइन, ब्राउन शुगर, व स्मैक का दुरूपयोग सबसे अधिक था। गोवा में 11 में से 3 ताल्लुकाओं में गांजा व चरस का सेवन काफी पाया गया। बंगलुरू में गांजा व चरस और हेरोइन के व्यसनियों में से अधिकांशतः कच्ची बस्तियों व निम्न सामाजिक आर्थिक क्षेत्रों में रहने वाले थे। चेन्नई में गांजा और ब्राउन शुगर व्यसनियों के प्रिय पदार्थ थे। इस प्रकार भारत जो कि सुनहला अर्द्वेन्दु (Golden Crescent) (अथवा पाकिस्तान, अफगानिस्तान व ईरान) और सुनहला त्रिकोण (Golden Triangle) (अथवा थाईलैण्ड, लाओस और वर्मा) के बीच स्थित है और जो पहले पश्चिम के लिए मादक पदार्थों की वाहकनली (Conduit) था, अब स्वयं क्षुधातुर उपभोक्ता बनता जा रहा है। नगरीय क्षेत्रों के बाद गांवों में भी मादक द्रव्यों का सेवन काफी बढ़ रहा है।

समाजशास्त्रीय सिद्धांत की मान्यता है कि परिस्थितियाँ अथवा सामाजिक पर्यावरण व्यक्ति को मादक द्रव्यों का व्यसनी बनाते है। सदरलैण्ड के विभिन्न सम्पर्क सिद्धांत के आधार पर यदि मादक द्रव्य सेवन को समझाया जाये, तो उसके अनुसार मादक द्रव्यों को लेना दूसरे व्यक्तियों से सीखा हुआ व्यवहार है, विशेष रूप से छोटे घनिष्ट समूहों से। अब स्वाभाविक रूप से प्रश्न यह उठता है कि जब नशा इतना बुरा है तो लोग नशा करते ही क्यों है? इसके निम्न कारण है– (1) नशा करने की आदत मनुष्य की उत्सुकता के कारण पड़ती है। व्यक्ति सोचता है कि एक बार देखे तो सही, ये है कैसी? इसमें क्या मजा है?बस फिर यह मुख को लगी नहीं कि छूटने का नाम ही नहीं लेती। (2) नैतिकता का ह्रास, माता–पिता की लापरवाही और बुरी संगति भी नशा करने की लत पैदा करती है। (3) बहुत से लोग इनका प्रयोग शौक के रूप में करते है। शौक के अलावा मनुष्य मानसिक तनाव और परिश्रम से छुटकारा पाने के लिए भी नशा करता है। (4) नशा करने से क्षणिक सुख मिलता है। मनुष्य दुनिया को भूल जाता है। अतः अपनी चिन्ताओं को दूर करने के लिए मादक पदार्थों का सेवन करता है।

अतः इस रोग से मुक्ति पाने के लिए, देश के भावी नागरिकों को इस भयंकर समस्या से बचाने के लिए निम्न उपाय करने होंगे – (1) सबसे पहले नशाबन्दी को अनिवार्य रूप से

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

सब जगह लागू कर देना चाहिए। सरकार कानूनन नशीले पदार्थों की बिक्री पर रोक लगाये। अवैध रूप से बेचने वाले को कड़े से कड़ा दण्ड दे। सरकार इन पदार्थों की बिक्री पर रोक लगाये। सरकार इन पदार्थों की बिक्री से होने वाले राजस्व का लोभ त्यागकर जनस्वास्थ्य की चिन्ता करें। (2) स्कूलों, कॉलेजों में शिक्षा के द्वारा और जनसंचार के माध्यमों द्वारा लोगों को नशे की भयंकर हानि से अवगत कराया जाना चाहिए। (3) जनता स्वयं विभिन्न जुलुसों गोष्ठियों तथा सभा–सम्मेलनों के माध्यमों से नशा विरोधी प्रचार करे। (4) किशोरों और युवकों के प्रति माता–पिता को सचेत होना पड़ेगा, उनके प्रति प्रभावशाली प्रेम प्रदर्शित करना होगा जिससे वे अपने को अकेला महसूस न करे। उनका हर तरीके से ध्यान रखना होगा। (5) जनता के ह्दय से यह भ्रम भी निकालना होगा कि नशा करने वाले केवल आधुनिक लोग ही है। वास्तव में पश्चिम में मंदिरापान इसलिए भी किया जाता है, क्योंकि वे ठण्डे प्रदेश है। वहाँ मदिरा को नशा करने के लिए नहीं, बल्कि औषधि समझकर प्रयोग किया जाता है।

वास्तविकता है कि मादक पदार्थों के उपयोग से छुटकारा पाना आज हमारे समाज की एक बड़ी आवश्यकता है। इसके द्वारा जनसाधारक के स्वास्थ के स्तर में सुधार करने तथा लोगों की कार्य कुशलता को बढ़ाने में अत्यधिक मदद मिल सकती है। वैयक्तिक और पारिवारिक जीवन को संग्रहित करने में भी मद्य निषेध की विशेष भूमिका है। मद्य पदार्थों के निषेध का सबसे अधिक लाभ शारीरिक श्रम करने वाले व्यक्तियों को मिलेगा जिनका आय का एक बड़ा भाग इन दुर्व्यसन पर समाप्त हो जाता है। अपराधों को कम करने तथा युवा पीढ़ी के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए भी नशा निषेध आवश्यक है। नशीली दवाओं की तस्करी आज एक बड़ा व्यवसाय बन चुका है। एक से एक बढ़कर उपाय इनको बेचने के लिए प्रयोग किये जा रहे है। मुख्यतः हैरोइन और स्मैक का काला बाजार अपनी चरम सीमा पर है। नशा एक ऐसा गम्भीर एवं घातक रोग है जो बिना हथियार के ही पूरे देश को पंगु बनाने में, उत्साह और शक्ति से खोखला करने में सक्षम है। नशा समाज का, परिवार का, व्यक्ति का और पूरे राष्ट्र का शत्रु है। नशे में उन्मत व्यक्ति जीते हुए भी मुर्दे के समान है। आज यह राष्ट्र के लिए खतरे की घण्टी है। यदि मानवता के भविष्य को बचाना है तो नशे रूपी राक्षस को पालने में ही कुचल देना होगा।

ISSN - 0976 - 3007
Volume - 5
Number - 1
December - 2012

References

1. Lobo francis - Leisure, family and life style, Rawat Publications Jaipur, 2002
2. Charies Metal - Drug Culture in India, Rawat Publications, Jaipur, 1999
3. I.P. Modi - Drugs : Addiction and Prevention, Rawat, Jaipur, 1997
4. Mc Clelland David, the Drinking man, Free Press, Newyork, 1977
5. Molly Charles - Drug Culture in India, Rawat Publications, New Delhi, 1998

❑❑❑